Printed and Published by Panch Kory Mittra at the
Indian Press, Allahabad.

विषयानुक्रमणिका ।

परिशिष्ट

सम्पादकीय भूमिका ।

हमारा बहुत दिनों से विचार था कि यदि हिन्दी में पृथ्वी के सभी मुख्य मुख्य देशों का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित हो जाता तो देश का बहुत बड़ा उपकार होता और हिन्दी जानने वाले महाशयों का दृष्टि-क्षेत्र बहुत कुछ विस्तृत हो जाता। अवश्य ही हमारे यहाँ इतिहास का एक दम अभाव नहीं है पर इस ओर हमारे लेखकगणों का सदा से बहुत कम ध्यान रहा है ऐसा मानने में कदाचित् कोई भी महाशय विशेष हठ न करेंगे। इसका फल यह हुआ कि केवल संस्कृत एवं हिन्दी जानने वाले अपने देश का भी वृत्तान्त बहुतही कम जान सकते हैं और पृथ्वी के अन्य प्रभावशाली देशों के हाल जानने से वे नितान्त वंचित रह जाते हैं। यहाँ तक कि अधिकांश लोगों को ऐसे देशों के नाम तक नहीं ज्ञात होते! यह दशा कैसी शोचनीय है सो लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं। यही कारण है कि हमारे यहाँ के लोग जानते ही नहीं कि किन किन कारणों से देशों एवं राष्ट्रों का अभ्युदय एवं अधःपतन होता है; कौन बातें और रीतियाँ उत्तम एवं कौन निकृष्ट हैं; किस प्रकार के आचार-विचार से देश और जाति को लाभ पहुँच सकता है और किससे हानि ही हानि सम्भव है; किन किन कारणों से किन किन देशों का उद्भव हुआ और उन कारणों को

याथातथ्य अथवा समुचित परिवर्तनों के साथ हम अपने देश एवं जाति में कैसे उपस्थित कर सकते हैं, किस चाल ढाल पर चलने से किन किन देशों एवं जातियों अथवा राष्ट्रों को क्या हानि पहुँची अथवा उनका कैसे ह्रास या सर्वनाश हो गया और हम में वे अथवा वैसी ही बुराई की चाल ढालें हैं या नहीं और यदि हैं तो हम उनको कैसे हटा सकते हैं, इत्यादि इत्यादि ऐसे ही सैकड़ों बड़े ही महत्त्व के प्रश्न हैं कि जिन पर ध्यान देने से हमारा हित होगा एवं जिन्हें अलग छोड़ देने से हमारी न जानें क्या क्या दुर्दशा या सर्वनाश तक हो सकता है। ऐसे प्रश्नों पर ध्यान देने की भावना हम में तभी आ सकती है जब हम संसार के सभी ऐसे देशों का इतिहास जान लें कि जो आज दिन उन्नदशा में हैं अथवा पूर्व-काल में रहे हैं, एवं जो देश अपनी असावधानी से बिल्कुल मिट्टी में मिल गये हैं। कुछ जातियां ऐसी भी हैं जो अपनी मूर्खता के कारण इस "असार" संसार से कूच कर बिल्कुल निर्मूल हो गईं अथवा ऐसी उत्कट अधोगति को प्राप्त हो गईं कि उनका पुनरुत्थान होना असम्भव हो गया है। ऐसी जातियों का पूर्ण वृत्तान्त जान लेना, उनकी त्रुटियों को भली भांति समझ कर उन पर मनन करना, और अपनी जाति से उन्हें हटाने का पूर्ण प्रयत्न करना प्रत्येक समझदार मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य है। पर केवल हिन्दी जाननेवाले इतिहास-ग्रन्थों के अभाव से इस पवित्र कर्तव्य के पालन करने में नितान्त असमर्थ हैं।

दूर की बात जाने दीजिए। उदाहरणार्थ हमारे शूद्रों एवं हिन्दुओं की नीचातिनीच जातियों पर ही दृष्टि डालिए। इस बीसवीं

शताब्दी में ऐसा मानने वाले बहुत न मिलेंगे कि ईश्वर ने ही इन नीच जातियों को सदा के लिए नीच बना दिया है और यह क्रूर आज्ञा दे दी है कि वे दो, चार, छः, दस, बीस, पचास पुश्तों तक नहीं बरन अनन्त काल तक लाखों करोड़ों पीढ़ियाँ बीतने पर भी सदा के लिए नीच ही बने रहें और उन्हें उन्नति करने का कभी अवसर ही न प्राप्त हो। न्यायशील ईश्वर पर ऐसा कलंक लगाना नितान्त अनुचित है। कुछ महाशय कहने लगेंगे कि ईश्वर ने किसी को भी अनन्त काल के लिए नीच बने रहने की आज्ञा नहीं दी है। आत्माओं को नीचातिनीच योनियों से लेकर क्रम से उच्चातिउच्च पद पर स्वकर्मानुसार पहुँचने का उसने यह प्रबन्ध किया है कि अच्छे कर्म करने से भंगी, चमार और हलालख़ोर तक दूसरे जन्म में श्रेष्ठतर जातियों में उत्पन्न हो सकते हैं और इसी भाँति धीरे धीरे उन्नति करते करते ब्राह्मण-योनि तक प्राप्त कर सकते हैं। इसका उत्तर हम यह देते हैं कि इस तर्क के अनुसार ब्राह्मण एवं हिन्दुओं की अन्य उच्च जातियों को भी उन्नति करने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि कर्म के ज़ोर से वे दूसरे जन्म में अँगरेज़ों अथवा अन्य प्रभावशाली जातियों (यथा जर्मन, जापानी इत्यादि) में उत्पन्न हो सकते हैं। प्रश्न तो यह है कि हमारी हिन्दू जाति कभी पूर्ण उन्नति करे या नहीं? शायद कोई भी हिन्दू यह न कहेगा कि हिन्दुओं की उन्नति न हो, बरन वे लोग दूसरे जन्म में योरोपियन, जापानी, या अमेरिकन हों। इसी भाँति बेचारी नीच जातियों को भी इसी जन्म में क्यों उन्नति न करना चाहिए? इतिहास से यह

सप्रमाण सिद्ध हो चुका है ये "नीच" जातियाँ पहले यहाँ राज्य करती थीं और हमारे पूर्व पुरुष आर्यों ने तिब्बत के आस पास मध्य एशिया के किसी स्थान से आकर इन पर आक्रमण किया और धीरे धीरे इनका सारा देश विजय कर लिया। तत्पश्चात् इनको पढ़ने एवं उन्नति के अन्य सभी मार्गों से वंचित कर उन्होंने शनैः शनैः इन्हें ऐसा नीचातिनीच बना दिया कि अब इनमें से अधिकांश लोगों की गणना मनुष्यों में करना व्यर्थ है। हमारी समझ में भारत-वर्ष की मनुष्य-गणना में ऐसे मनुष्यों की गिनती करना ही ठीक नहीं और तब जान पड़ेगा कि यहाँ की जन-संख्या जो तीस करोड़ कहलाती है वह एक दम भ्रममूलक और अशुद्ध है। एक तो यहाँ स्त्री-शिक्षा के अभाव से जनसंख्या का अर्द्धांश अलग ही छोड़ देना चाहिए और फिर इन बेचारी पशुवत् जातियों एवं अन्य जातियों के पशुवत् मनुष्यों को गणना के बाहर कर देने से इस देश की आबादी सवा अथवा डेढ़ करोड़ मात्र की रह जावेगी और प्रायः यही संख्या यहाँ के पढ़े लिखे लोगों की है क्योंकि पुरुषों में यहाँ प्रायः ११ सैकड़े एवं स्त्रियों में केवल ७० सैकड़े अर्थात हज़ार पीछे ७६ मात्र की संख्या "न", "म". कह सकनेवाले मनुष्यों की है! शिव! शिव!! कैसा अंधकार का यहाँ पता है!!! अस्तु, यह बेचारी नीचाति-नीच जातियाँ भी क्या अब कभी पूर्ण उन्नति कर सकेंगी? शायद कभी नहीं। शहरों में इतना विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता पर गाँवों में भारत-जातियों और अनार्यों में मनुष्य और पशु का सा भेद पाया जाता है। अनादिकालों से मार खाते खाते और दुःख उठाते उठाते

नीचातिनीच जातियाँ ऐसी निर्जीव हो गई हैं कि कुछ कहते नहीं बनता। केवल एक ब्राह्मण या क्षत्रिय अगर पचास चमारों को भी साथ ही साथ मार चले तो भी बेचारे चमारों से सिवाय हाय हाय करने और इधर उधर भागने के और कुछ भी न बन पड़े। सो यद्यपि आर्य्य-जाति प्रायः एक हज़ार वर्ष से पददलित और पराधीन हो रही है तो भी उसका दबदबा (Prestige) अब तक नीच जातियों पर कई अंशों में जैसा का तैसा वर्तमान है। हम भली भाँति जानते हैं कि बहुतेरे कट्टर विचारों के लोग यह बात सुनकर भौं चढ़ाने और कहने लगेंगे कि "इन लेखकों को क्या यही अभीष्ट है कि चमार ब्राह्मणों और ठाकुरों को जूतों पीटें?" इसके उत्तर में हमारा सविनय निवेदन है कि हमारा यह अभीष्ट नहीं; परन्तु हम लोग ही बेचारे चमारों को क्यों सतावें? कदाचित् इसी के बदले, "जो जस करै सो तस फल चाखा" के अनुसार, हम लोगों के साथ भी अन्य देशों की प्रबल जातियाँ क्रूर बर्ताव कर रही हों। ट्रांसवाल, नेटाल, आस्ट्रेलिया इत्यादि अनेक देशों में हम लोगों का क्या सम्मान होता है सो इतिहास एवं समाचार-पत्र-प्रेमियों से छिपा नहीं है। वहाँ हम लोगों के साथ उससे भी नीचतर बर्ताव किया जाता है जैसा हम लोग बेचारे चमारों के साथ करते हैं। सच पूछिए तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या है? उदारशील अँगरेज़ी जाति को छोड़ यदि भारतवर्ष पर किसी अन्य ऐसी ही प्रबल जाति का अधिकार होता तो कदाचित् कुछ दिनों में हमारी प्राचीन आर्य्य जाति भी धीरे धीरे चमारों की ही दशा को पहुँच जाती। अँगरेज़ों ने हम लोगों

के लिए शिक्षा का विशाल द्वार खोल कर हमें यह अवसर दे दिया है कि हम ऐसी शोचनीय दशा से बचें। पर, जो जाति अपनी उन्नति करने में आप ही चेष्टा न करे उसे कोई भी उच्च नहीं बना सकता। और, इसी कारण, हमारी समझ में, अब भी बहुत सम्भव है कि समस्त हिन्दू जाति की वही दशा हो जावे जो बेचारे कोल, गोंड़, सन्थाल, भङ्गी, पंचम, कंजड़, चमार इत्यादिकों की आज दिन है और कदाचित् सदा रहेगी। क्या कोई भी कहेगा कि यह नीच जातियां अब किसी विचार-कोटि में आनेवाले समय के भीतर संसार की उच्च जातियों के साथ अपना स्थान ले सकेंगी? वैसे ही यदि हिन्दू जाति भी सावधान होकर कूपमंडूक वाली बातें एक किनारे रख अपनी उन्नति में इतिहास-सिद्ध उपायों द्वारा शीघ्र तत्पर न हो जायगी तो कोई आश्चर्य नहीं जो वह किसी दिन इन्हीं नीचा-तिनीच जातियों के पद को प्राप्त हो जावे !! इस भयावनी दशा से बचने का उपाय यही है कि संसार के इतिहास पर ध्यानपूर्वक मनन कर हम लोग अपनी त्रुटियों और बुराइयों को हटावें और धीरे धीरे वर्तमान राम-राज्य में अपनी पूर्ण उन्नति कर लें। इस पवित्र उद्देश्य के फलीभूत होने में यदि यह इतिहास-माला कुछ भी सहायक हुई तो इससे सम्बन्ध रखने वाले हम सभी लोग क्या लेखक, क्या सम्पादक, क्या प्रकाशक, अपने को धन्य मानेंगे।

इतिहास से क्या क्या लाभ होते हैं उनका वर्णन करने से भूमिका का विस्तार बहुत बढ़ जायगा। संक्षेप रूप से ऊपर जो कुछ लिखा जा चुका है उससे आधुनिक इतिहास में एक तो मनोरञ्जन

खूब होता है। दूसरे आदमी का अनुभव बेहद बढ़ जाता है। तीसरे उसे भली भाँति ज्ञात हो जाता है कि मैं जो कुछ अपनेही आसपास देखता रहा हूँ और जिसे ही मैं संसार समझता था वह वास्तव में गूलर फल का ही संसार कहा जा सकता है। चौथे उसका अंधकार-जनित अभिमान छूट जाता है। पाँचवें उसका कट्टरपन भी पूर्णतया घिस जाता है; क्योंकि उसे ज्ञात हो जाता है कि संसार की प्रायः सभी जातियाँ अपनेही धर्म एवं विश्वासों को, अपनीही रीति-रवाजों एवं पहिनाव, चाल, ढाल इत्यादि को सदा से सर्वश्रेष्ठ मानती आई हैं और आज तक मानती जाती हैं। यद्यपि यह सम्भव नहीं कि सभी धर्म, विश्वास, रीति या चाल सर्वोत्तम हो सकें, और सम्भव है कि निष्पक्षपात हो कर मनन करने से विदित हो जाय कि हमारी ही सभी बातें संसार भर में सर्वोच्च न ठहरें बरन कुछ अन्य जातियों की शायद सभी, अथवा कम से कम कुछ, बातें हम से श्रेष्ठतर हों। ध्यान रहे कि जैसे हम यह सुन कर चिढ़ सकते हैं कि हमारे आचार, विचार, धर्म, विश्वास, पहिनाव, ओढ़ाव, रस्म, रवाजें सर्वोत्तम नहीं हैं उसी भाँति अन्य जातियों के कट्टर और अनुभवशून्य लोग भी यह सुन कर जामे बाहर हो सकते हैं कि संसार में किसी जाति की रीतियाँ उनसे उत्तमतर हैं! जैसे हम अन्य जातियों को नापाक और पतित समझते हैं वैसेही बहुतेरी उच्च जातियाँ हमें नीच, घृणित, अर्द्धासभ्य कहती हैं। जैसे हम अन्य जातियों का छुवा हुआ भोजन नहीं खाते वैसेही कुछ अन्य जातियाँ हमें छू जाने तक में अपना परम अपमान समझती हैं।

जैसे हम जानते हैं कि लड़कों के कान नाक छेद, उनमें सोने की बालियां डाल देना, तथा उनके हाथ पैरों में चांदी की बेड़ियां पहनाना, परमावश्यक है वैसे ही कुछ अन्य सभ्य कहाने वाली जातियां अपने अंग गोदना, पैर छोटे करने के लिए स्त्रियों को बचपन से ही पीतल के जूते पहना कर लूंजी कर देना और ऐसे ही अनेक हास्यास्पद रवाजों का प्रचलित रखना सभ्यता की सामग्री समझती हैं। निदान कहां तक लिखें, इतिहास पढ़ने से अनेकानेक लाभ हैं और इसका अधिकाधिक प्रचार करना प्रत्येक देश और जातिहितैषी का पवित्र कर्तव्य है। हमारी समझ में यदि हिन्दी-पठित समाज का दशमांश भी पृथ्वी के प्रभावशाली देशों का इतिहास जान ले तो हम बतावेंगे देश, और हम शुद्ध एवं किसी समय में परमोच्च, परन्तु अब अधोगति-प्राप्त, प्राचीन और पवित्र आर्य (हिन्दू) जाति, का पूर्ण उपकार और पुनरुत्थान होना अब भी सम्भव है। नहीं तो ऐसी भाग्य-मन्द और पतनाभिमुख जाति का अंगरेजी राज्य-काल में भी न जाने कैसा बुरा हाल अथवा सर्वनाश तक हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं!

इस इतिहास माला में निम्न लिखित देशों का हाल लिखा जायगा—

१ भारतवर्ष (हिन्दुस्तान)।
२ मिस्र अर्थात् ईजिप्ट।
३ ग्रीस अर्थात् यूनान।
४ इटली अर्थात् रोमन स्टेट।
५ चीन।
६ टर्की।
७ इंगलैंड, वेल्स, व स्काटलैं-ण्ड।
८ अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका।

९ स्पेन ।

१० पुर्तगाल ।

११ हालैंड, डेन्मार्क व स्विटज़रलैंड ।

१२ आस्ट्रिया ।

१३ स्वीडेन और नारवे ।

१४ इंगलैंड अर्थात् ग्रेटब्रिटन ।

१५ जापान ।

१६ जर्मनी ।

१७ रूस अर्थात् रशिया ।

१८ संयुक्त रियासतें-अमेरिका ।

१९ फ़्रांस अर्थात् फ़रासीस ।

२० पृथ्वी के अन्य देश ।

ये पुस्तकें ऊपर लिखे अथवा किसी क्रम विशेष से नहीं प्रकाशित होंगी बरन सुभीते के अनुसार निकलती रहेंगी । ऊपर की सूची में नम्बर इस हिसाब से लगाये गये हैं कि नं० १—५ तक वह देश हैं जिनकी सभ्यता और उन्नत दशा किसी समय में बहुत बढ़ी चढ़ी थी परन्तु अब सिवा नं० ४ के और सभी का बुरा हाल है, और नं० ४ की दशा भी पहले के देखते अब बहुत मन्द है। नं० ६ से १३ तक के देशों की सभ्यता वैसी प्राचीन नहीं पर बीच में उन की भी अच्छी उन्नति हुई थी और कतिपय अब भी भली चंगी दशा में हैं। नं० १४—१९ के देश इस समय पूर्ण प्रतिभाशाली हैं एवं नं० २० में पृथ्वी के उन शेष देशों का हाल लिखा जायगा जिन्होंने संसार के इतिहास में कभी कुछ भी योग दिया है।

हरदोई,
१२ । ४ । ०८

श्यामविहारी मिश्र,
शुकदेवविहारी मिश्र ।

घोष एवं प्रिंटर और प्रकाशक महाशयों को भी हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस इतिहासमाला की इस प्रथम पुस्तक के प्रस्तुत करने में अपने उत्साह और हिन्दी प्रेम का पूरा परिचय दिया है।

किसी समय हमारा देश समस्त संसार का शिरोमणि था। शोक! आज उसकी कुछ और ही दशा है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक बा० हरिश्चन्द्र ने अपने एक नाटक में भारतवर्ष के प्राचीन गौरवांश को बड़ी उत्तमता से एक चौपाई में वर्णित किया है। वह यह है:—

"फ़िनिक मिसिर सीरीय युनाना।
भे पण्डित लै भारत ज्ञाना" ॥

कैसे सारगर्भित शब्द हैं। वास्तव में किसी समय हिन्दुस्तान में यही योग्यता थी कि लोग इसे आदर्श मान कर इससे शिक्षा ग्रहण करते थे। परन्तु अब वे दिन न जानें कहाँ चले गये। मर्य्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी, भीष्म, द्रोण, अर्जुन, कालिदास, महारानी लक्ष्मीबाई आदि की प्रसविनी वीरसिंहिनी यह भारत-भूमि आरत होकर निर्जन वन में फूट फूट कर रो रही है। इसी कारण इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि आधुनिक शूरवीरों के विक्रमोदाहरण वीरप्रसविनी के समक्ष रक्खे जावें, जिनके द्वारा इसे मालूम हो कि ये नये नये देश कैसी उन्नति कर रहे हैं, तो क्या स्वयं इसे जो किसी समय में संसार की आदर्श थी, फिर अपने खोये हुए गौरव को हस्तगत कर लेने में कोई सन्देह है। जर्मनी भी कैसा प्रभावशाली देश है और उसमें समयोचित कैसी कैसी उन्नतियाँ हुई हैं इस बात का दिग्दर्शन इस छोटे ग्रन्थ के अवलोकन करने से हो जायगा। जहाँ शार्लमेन के समान

आदर्श महाराज, विस्मार्क से राजनीतिज्ञ, ब्लूचर सदृश योद्धा ल्यूथर के समान धार्मिक संशोधक; हेगेल, कैंट, लाज़े के तुल्य दार्शनिक; गेटी सरीखे सुकवि और मैरिया थेरेसा ऐसी उदारशीला महिला होगई हैं, ऐसे प्रतिभावान् जर्मन देश के इतिहास को ध्यानपूर्वक पढ़ कर हम लोग अवश्यमेव शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

प्रत्येक देश की उन्नति को पूर्णतया समझने के लिए, हमारे वास्ते चार पहलुओं को ध्यान में रखना बड़ा आवश्यक है। (१) शिक्षा, (२) वाणिज्य, (३) शासन-नीति, (४) धर्म और रिवाज। यही चार उन्नति के विभाग हैं। ये देशोन्नति होने के समय अपने किसी न किसी वैकासिक रूप—(Evolutionary aspect) आरम्भिक प्रवृद्ध, अथवा उत्कृष्ट में वर्तमान रहते हैं और राष्ट्र के चढ़ाव उतार को नियमित करने में पूरा काम देते हैं। इन्हीं पर देश का उत्कर्ष निर्भर है। जर्मन-इतिहास को मनन करते समय इस 'पादचतुष्टय' को सदा लक्ष्य करके ग्रन्थावलोकन से पूरा लाभ हो सकेगा। इस भाँति पढ़ने से हम उस देश की अवस्था और अपने यहां की दशा का पूरा तारतम्य जान सकेंगे और उपयोगी विषयों को यहाँ व्यवहृत करने में सफलमनोरथ होंगे।

प्रथम जर्मनी में विद्या-प्रचार का विषय लीजिए। पांचवीं शताब्दी तक सिवाय धर्म और प्रेम-गीतों के यहां शिक्षा का नाम तक न था। ईसाई मत का प्रचार होने पर उन लोगों ने गिर्जाघरों में पाठालय खोलना शुरू किया। शार्लमेन (७६८—८१४) ने अनेकानेक पाठशालायें खोलीं और खूब शिक्षा का प्रचार किया। १२ वीं शताब्दी तक इस विषय में थोड़ी बहुत उन्नति होती रही।

तदनन्तर १३, १४, १५ वीं सदी से शिक्षा का वास्तविक उद्धार आरम्भ हुआ। इस समय बुलफ़म इत्यादि अनेक कवि वर्तमान थे। इसके वाद ही ल्यूथर (१४८३—१५४६) की प्रभावशालिनी धर्मचर्चा शुरू हुई। अनेक विद्वानों ने उसके सिद्धान्तों के छन्द बनाना प्रारम्भ किये। यही समय दार्शनिक गवेषणा के आरम्भ का है। तदनन्तर १७ वीं सदी में लेबनिज़ और बुल्फ़ आदि अनेक दार्शनिक हो गये हैं। १८ वीं शताब्दी में शिक्षा की अव्याहत उन्नति होती रही और कालपस्टक, हार्डर, गेटी ऐसे सुकवि तथा कैंट और शापनहवर सरिखे दार्शनिक इसी काल में हुए हैं। यहाँ पर यह शताब्दी साहित्योत्कर्ष के लिए प्रसिद्ध है। फ़्रेडरिक दि ग्रेट ने प्रशिया में ख़ूब विद्या का प्रचार किया। यहाँ के विश्वविद्यालय प्रायः १३ वीं सदी के आरम्भ से स्थापित होने लगे थे। १९ वीं शताब्दी में जितनी विद्योन्नति इस देश में हो गई है, शायद ही उतनी कहीं देखने में आवे। आज कल यहाँ बड़े बड़े सुकवि, लेखक, विद्वान, वेदान्ती और दार्शनिक विद्यमान हैं।

वाणिज्य का मामला देखते ही स्पष्ट मालूम हो जावेगा कि शार्लमेन ही ने इस विभाग का सूत्रपात किया। १२ वीं सदी में व्यापार की इतनी उन्नति हो गई थी कि इसे पुष्ट करने के लिए शहरों में सभायें स्थापित होने लगी थीं इसके वाद ३—४ सौ वर्ष तक धीरे धीरे तरक्क़ी होती रही। १६ वीं शताब्दी में व्यापार वड़ी उत्तम दशा में था, किन्तु तीस वर्ष के प्रचण्ड संग्राम (१६१८—४८) और फिर फ़्रांस देशीय घोर विप्लव से (१७८८—

१८१५) वाणिज्य को बड़ा आघात पहुँचा। उक्त विप्लव के समय में भी प्रशिया में फ्रेडरिक दि ग्रेट (१७४०—८०) के होने से कोई विशेष हानि न हो सकी। इन झोकों से बच कर व्यापारी लोगों ने अपने काम के जारी रखने में कुछ भी त्रुटि न की और १८६२ में बिस्मार्क के उत्तम उत्तम संशोधनों से सहायता पाकर वाणिज्य दिनों दिन उन्नति को प्राप्त होता गया। यह समस्या हम सब के ध्यान देने योग्य है। इस समय जर्मनी के वाणिज्य का दर्जा ख़ूब बढ़ा चढ़ा है और Made in Germany (जर्मनी में बना)यह छाप सभी प्रकार के माल पर अंकित देख पड़ती है जिससे अन्य उन्नति-शील देशों के आँख कान खुल गये।

शासन-नीति-सम्बन्धी विषय देशोन्नति का मुख्य अंग है। स्वत्व प्राप्त होने से प्रजा देशोद्धार कर सकती है, अन्यथा आशा दुराशा मात्र है। जर्मनी का शासन-संगठन प्राचीन काल ही से विलक्षण है। यहाँ तभी से पूर्ण प्रजासत्तात्मक शासन होता आया है। ५ वीं शताब्दी में राजा लोगों ने कुछ अपना बल बढ़ा के प्रजा के अधिकार को परिमित करना शुरू किया। शार्लमेन ने इस पर और भी ज़ोर दिया, तथापि प्रजाशासन में योग देने से वंचित नहीं रक्खी जाती थी। तदनन्तर रोज़ रोज़ राज-बल घटता गया और प्रजा ज़ोर पकड़ती गई। स्वत्व प्राप्त करने के लिए प्रयत्न होता रहा, जिसका फल यह हुआ कि चार्ल्स चतुर्थ (१३४७—७८) को मजबूर करके लोगों ने गोल्डेन-बुल नामक इक़रारनामा लिखा ही लिया। १८ वीं शताब्दी तक ये लोग स्वतंत्रता के लिये घोर प्रयत्न करते चले आये। इधर

फ़्रांस-देशीय विप्लव ने भी इन्हें बहुत कुछ उत्साह प्रदान किया। यही कारण था कि १९ वीं शताब्दी में प्रायः सब प्रजा-कृत आन्दोलन एवं विप्लव, भयंकर और प्रबल थे। परिणाम यह हुआ कि नये शासन-संगठन के विचारे जाने के समय इन लोगों के लिए भी महासभा में स्थान दिया गया। सर्व साधारण की प्रतिनिधि सभा का नाम राइस्टग (Reichstag) है। विना इसकी मंज़ूरी के कोई ख़ास शासन-सम्बन्धी कार्रवाई नहीं हो सकती। ऐसे ही प्रयत्न करते करते जर्मनी को शासन में योग देने का अधिकार मिल गया।

धर्म की दशा यहाँ बड़ी अद्भुत रही है। ईसाई मत का प्रचार होने पर छठी शताब्दी में रोम के पोप ने अपने प्रबल हाथ पैर फैलाना शुरू किये और वह केवल प्रजा पर दबाव न डाल कर महाराजकीय बल को ग्रास कर जाने के लिए प्रयत्न सोचने लगे। १५ वीं सदी तक पोप का पूरा मानदान रहा। परन्तु अब जर्मन लोगों में देश-प्रेम पैदा हो जाने और मार्टिन ल्यूथर की ओजस्विनी शिक्षा के कारण 'पोप' धीरे धीरे श्रद्धापतित होने लगे और कुछ काल बादही पोप प्रभाव ने अस्ताचल की ओर गमन करना प्रारम्भ कर दिया। हसाइट-संग्राम और ३० वर्ष वाले युद्ध से स्पष्ट प्रतीत होता है कि नये सम्प्रदाय और पोप-पंथ में हटते दम तक कितना भयानक झगड़ा हुआ। १६४८ में 'धार्मिक सहिष्णुता' (Religious Toleration) का स्वीकार-पत्र हुआ। परन्तु सहिष्णुता की मात्रा स्वयमेव इतनी बढ़ गई है कि अब 'देश-प्रेम' एक मात्र सर्वमान्य धर्म हो रहा है। जर्मनी की सामाजिक रस्में भी उसकी

उन्नति की ख़ूब सहायक हो रही हैं। उन्नति में वाधा डालने वाली रस्में वहाँ प्रायः एक भी नहीं हैं।

इस छोटी सी भूमिका में सब वातों का उल्लेख पूरे तार से नहीं हो सकता। ऊपर लिखी हुई वातों को सोचने विचारने से हम लोग अच्छी शिक्षा ले सकते हैं। शार्लमेन और मैक्समिलान प्रथम के राजत्वकाल, विस्मार्क के संशोधन, ल्यूथर की निर्भयता और सत्यप्रियता तथा १९ वीं सदी के उत्साह भरे आन्दोलन ध्यान से पढ़ने योग्य हैं। सब वातों से यह परिणाम निकलेगा कि 'प्रयत्न करते जाओ, हताश न हो, उद्देश्य अवश्य सिद्ध होगा।

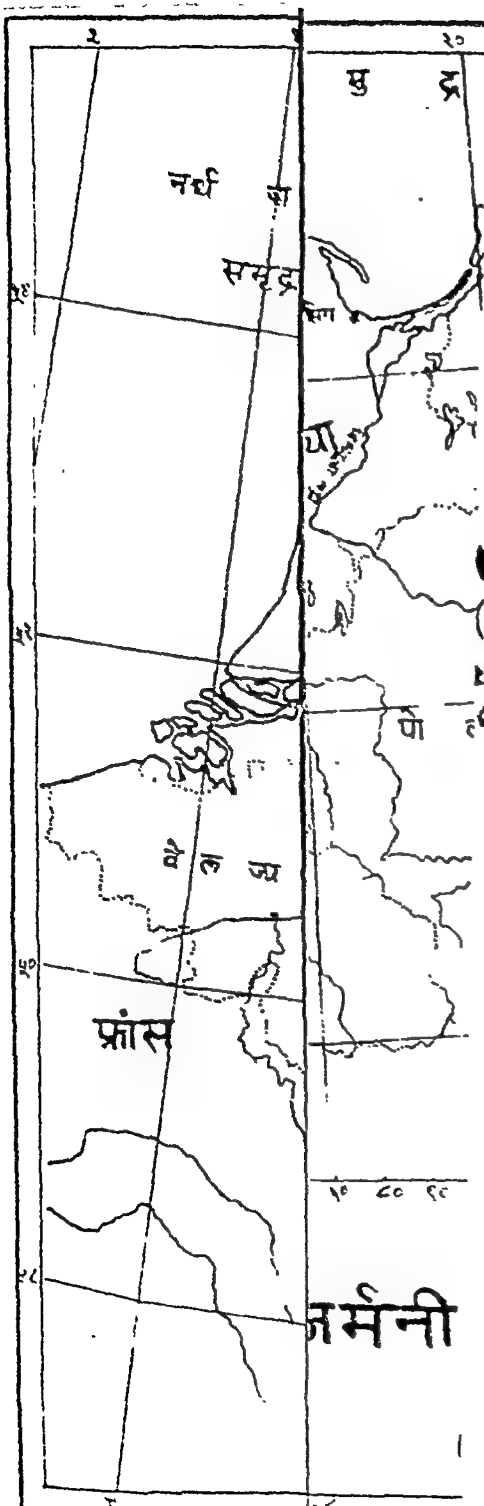
आशा है कि कुछ ही दिनों में फ़्रांस देश का इतिहास हम अपने उदार पाठकों की भेंट कर सकेंगे*। इसी भाँति सब देशों के इतिहास क्रमशः प्रस्तुत होते रहेंगे। यदि हमारे कृपालु पाठक इस ग्रंथ अथवा भविष्य में तैयार होनेवाली पुस्तकों को उत्तम वनाने वाले प्रस्ताव हमारे या सम्पादकों के पास लिख भेजेंगे, तो हम लोग धन्यवाद-सहित उन्हें स्वीकार करेंगे। तदनन्तर उन्हीं प्रस्तावों के अनुकूल यह कुल ग्रंथावलि प्रस्तुत करने का उद्योग करेंगे। यदि ऐसी ऐसी उत्तम अँगरेज़ी, नागरी, बँगला, अथवा मराठी पुस्तकों के नाम, जिनके द्वारा भविष्य में हमें किसी देश-विशेष (मुख्यतया भारतवर्ष) का इतिहास तैयार करने में सहायता मिले, हमारे दयालु पाठक लिखते रहें, तो हम इस दया के लिए उनके अत्यन्त अनुगृहीत होंगे।

सीतापुर, अवध
११ वैशाख कृष्ण १९६५ वि०
सोमवार २७-४-१९०८ ईस्वी

विनीत,
सोमेश्वरदत्त शुक्ल,

---

*फ़्रांस का इतिहास और रूस का इतिहास ये दोनों भी छप चुके हैं।


नर्थ
समुद्र
फ्रांस
जर्मनी

जर्मनी का इतिहास।

१—भौगोलिक वृत्तान्त।

योरोप देश के मध्य वाले बड़े भाग में जर्मन महा-राज्य फैला हुआ है। इसके तथा पड़ोस की रियासतों के बीच कोई भी प्राकृत सीमा नहीं है। इसका क्षेत्रफल २०८४२७ वर्ग मील है। यह देश कुल योरोप का अठारहवाँ हिस्सा है और हमारे बंगाल और बरार के सम्मिलित क्षेत्रफल के प्रायः बराबर है। इसके पूर्व-दक्षिण कोण तथा दक्षिण में आस्ट्रिया और स्विटज़रलैंड, दक्षिण-पश्चिम में फ़्रांस, पश्चिम में लक्सेम्बर्ग, बेल्जियम, हालैंड और उत्तर में रूस तथा बाल्टिक सागर हैं।

जर्मनी का उत्तर वाला भाग समथर और दक्षिण का ऊँचा नीचा है। दक्षिण में पहाड़ आदि होने के कारण जल-वायु अच्छा है। राइन तथा और अनेक नदियाँ इस भाग को उपजाऊ बनाती हैं। उत्तर भाग में दलदल बहुत है। यहाँ का जल-वायु ख़राब है और अन्न की पैदावार भी अच्छी नहीं है।

आल्प्स नामक पर्वत-श्रेणी का बड़ा अंश बवेरिया प्रदेश में फैला हुआ है। दक्षिण के कई एक सूबों में अनेक छोटे बड़े पर्वत हैं।

समस्त जर्मनी में ९ मुख्य नद-प्रवाह हैं। विस्ट्रुला, ओडर, एल्ब, वेज़र, राइन, डैन्यूब आदि मुख्य नदियाँ हैं। यहाँ की अनेक नदियाँ या तो बाहर से आकर इस महा-राज्य में समाप्त होती हैं अथवा यहाँ से निकल कर बाहर जा गिरती हैं। राइन नदी में जहाज़ सर्वदा चलाये जा सकते हैं।

यहाँ भिन्न भिन्न सूबों में भिन्न भिन्न प्रकार का जल-वायु है। वर्षा अस्थिर रहती है और बवेरिया में बहुत पानी बरसता है। जर्मनी का एक चौथाई हिस्सा जंगल है। दक्षिण तथा पश्चिम में गेहूँ अच्छा होता है। आलू बहुत बोया जाता है। वह केवल खाने ही में नहीं ख़र्च होता वरन उससे एक प्रकार की शराब भी तैयार करते हैं। शक्कर बनाने के लिए यहाँ चुक़न्दर की खेती होती है और इस काम के लिए अनेक कारख़ाने भी हैं। तम्बाकू की भी खेती यहाँ होती है। केवल पश्चिम और दक्षिण जर्मनी में अंगूर होता है। खनिज पदार्थों की उपज यहाँ अच्छी है। इस विषय में यह देश इँगलैंड से कम, परन्तु फ्रांस और अमेरिका के संयुक्त-राज्यों के समान है।

यह राज्य २६ हिस्सों में विभक्त है जिनमें ४ रियासतें, छः बड़े ताल्लुक़े, पाँच ताल्लुक़े, सात छोटे ताल्लुक़े, तीन स्वतंत्र नगर, एवं एक राजकीय सूबा है। उनका ब्यौरा इस प्रकार है :—

(१) रियासतें

१. प्रशिया, पूर्व से पश्चिम तक मध्य भाग में।

२. बवेरिया, दक्षिण में।

३. सैक्सनी, पूर्व-दक्षिण में।

४. वर्टेम्बर्ग, दक्षिण में।

(२) बड़े तअ़ल्लुक़े (Grand Duchies)

१. बेडेन, दक्षिण में।

२. हेसे, दक्षिण में।

३. मेक्लेनबर्ग-शिवेरन, उत्तर में।

४. मेक्लनबर्ग-स्ट्रेलिज़, उत्तर में।

५. ओल्डेनबर्ग, उत्तर में।

६. सेक्सवेमर, प्रशिया के पूर्व-दक्षिण में।

(३) तअ़ल्लुक़े (Duchies)

१. ब्रंज़विक।

२. सेक्समेनिंगेन।

३. सेक्स-अल्टेनबर्ग।

४. सेक्सकोबर्ग-गोथा।

५. अनहाल्ट।

(४) छोटे तअ़ल्लुक़े (Principalities)

१. श्वार्ज़बर्ग-रुडल्स्टड।

२. श्वार्ज़बर्ग-ज़ाण्डर्स-हाउज़न।

३. वाल्डेक।

४. रेइस-ग्राइज़।

५. रेइस-गेरा।

६. स्कैम्बर्ग-लिपे।

७. लिपे (Lippe)

(५) स्वतन्त्र नगर (Free Towns)

१. ल्यूबेक।

२. ब्रेमेन।

३. हैम्बर्ग।

(६) राजकीय सूबा

१. आल्सेस-लोरेन।

इस प्रकार ये सब मिलाकर जर्मनी के २६ हिस्से हैं।

जर्मनी की राजधानी वरलिननगर में है। यहाँ के राजकीय पुस्तकालय में आठ लाख पुस्तकें हैं। ब्रेसला, मंस्टर, म्यूनिच, लिपज़िग, स्टटगर्ट आदि जर्मनी के मुख्य नगरों में से हैं।

विश्वविद्यालय—गवर्नमेंट स्वयं शिक्षा-विभाग में वहुत कुछ व्यय करती है। योरोप देशीय अनेक संस्कृत के विद्वान् इसी देश के हैं। अनेक खोई हुई संस्कृत की पुस्तकों को प्रकाश करके जर्मन लोगों ने वड़ा काम किया है। जर्मनी के विश्वविद्यालय वहुत प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। हरएक वड़े सूबे में एक विश्वविद्यालय है। उन सवकी संख्या २१ है। वरलिन, कूनिग्सवर्ग, ब्रेसला, गार्टिंगेन, वोन, हाल (Halle), ग्रिक्सवल्ड, मारवर्ग, मंस्टर, कील, म्यूनिच, वर्ज़वर्ग, एर्लंगेन, लिपज़िग, ट्यूविंगेन, हिडेलवर्ग, फ्रीवर्ग, गेसां (Giessen) रास्टक तथा जेना और आल्सेस लोरेन में सव मिला के २१ विश्वविद्यालय हैं।

—:o:—

२—प्राचीन जर्मन लोग।

(११३ बी० सी०*—५५ बी० सी०)

ईसा के जन्म के ११३ वर्ष पूर्व स्विटज़रलैंड की घाटियों के

---

* बी० सी० का अर्थ यह है कि अमुक घटना ईसा के जन्म के इतने वर्ष पहले हुई।

रहने वाले जङ्गली मनुष्यों ने इटली आदि देशों पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया था। ये लोग भिन्न भाषा बोलने वाली दो जातियों के थे। इनमें से एक दल ट्यूटन तथा दूसरा किम्बरी से सम्बन्ध रखता था। ये लम्बे और पुष्ट थे। इनके बाल लम्बे और घने तथा नेत्र नीले थे। इन लोगों की संख्या जितनी अधिक होती गई उतना ही 'इटली' देश की ओर ये लोग बढ़ते चले आये।

इनके विरुद्ध रोमन लोगों ने अनेक सेनायें भेजीं परन्तु हार ही होती रही। ये लोग गाँव, नगर, मैदानों पर धावा मारते थे। खूब लूटते, आग लगाते और तमाम देश का सत्यानाश कर रहे थे। सो रोमन लोगों ने विशेष रूप से सेना इकट्ठा करना प्रारम्भ किया। अन्त में रोमन सेनापति मारियस ने इन्हें 'ए' (Aix) की लड़ाई में पूरे तौर से हरा दिया। ट्यूटन लोग जी तोड़ लड़े। उनके हारने पर किम्बरी लोगों ने छापा मारा। परन्तु १०२ वी० सी० में मारियस ने इन्हें भी पराजित किया।

धीरे धीरे ये लोग जर्मनी की ओर बढ़े। यहाँ पर ज़्यादा विरोध न होने के कारण ट्यूटन तथा किम्बरी लोगों ने बसना आरम्भ किया। पहले यहाँ पर जङ्गल ही जङ्गल था। आबादी बढ़ने के साथ साथ जङ्गल साफ़ होता गया। स्लाव् लोग यहाँ के आदिम वासी थे। इनको जीत कर ट्यूटन आदि जातियों ने अपना आधिपत्य स्थापित किया। शनैः शनैः ये अनेक जातियों में बँट गये, जिन में से चेटी, सैक्सन, ऐंगल्स, स्वावियन, गाथ, वैंडल इत्यादि मुख्य थीं। उत्तर और दक्षिण के वासियों में इस समय बड़ा अन्तर

था। दक्षिण के लोग अब भी लूट मार में पड़े थे पर उत्तरीय लोगों ने स्थायी रूप से वास करके खेती का धन्धा करना शुरू किया।

अब इन जर्मन-वासियों के दो भाग हो गये। उनमें से कुछ तो स्वतन्त्र और कुछ क्रीतदास (Slave) थे। केवल स्वतन्त्र दल के लोग अस्त्र बाँध सकते थे और उस समय के शासन में इनका अधिकार था। ये विजित जाति स्लाव लोगों के साथ ब्याह-शादी कदापि नहीं कर सकते थे। 'स्वतन्त्र' लोगों के मुखिया अपने नौकरों को लेकर अलग गाँवों में रहते थे। ये अपने क्रीतदासों के साथ उत्तम बर्ताव करते थे। ऐसे ही एक गाँव-समूह का नाम "हंड्रेड" (ग्राम-शती) पड़ा। प्रत्येक गाँव के मुखिया का निर्वाचन स्वतन्त्र दल वाले करते थे और उनमें के कुछ मुख्य लोग एक "हंड्रेड" पर शासन करते थे। बहुत जातियों पर बहुधा एक राजा भी होता था। मुखिया लोगों की शक्ति परिमित होती थी, क्योंकि जर्मन-वासियों में 'सार्वजनिक शासन, का बीज पहिले ही से वर्त्तमान था। सर्व साधारण की सभा-सम्मति से सब मामले तै किये जाते थे। प्रत्येक युवक लड़ाई में वीरता दिखाने को सर्वदा उत्साहित रहता था। ये लोग युद्ध देव (Woden) की पूजा करते और शकुन मानते थे।

—:o:—

२—विदेशियों के आक्रमण और वीर हेरमन।

(५५ बी० सी०—४८० ईस्वी)

'ए' युद्ध के ५० वर्ष बाद सुप्रसिद्ध जूलियस सीज़र ने जर्मनी पर हमला किया। कुछ काल बाद ड्रूसस और टाइबेरियस ने बहुत सा अंश अपने हाथ में कर लिया।

वर्त्तमान 'हैनोवर' नामक सूबे में 'चेरस्की' जाति रहती थी। जीतने के उपरान्त, रोमन लोग, उस जाति के मुख्य सेनापति वीर हेरमन को अपने साथ पकड़ ले गये थे। इस कारण कुछ काल तक उसे इटली देश में रहना पड़ा। वहाँ पर युद्ध-शास्त्र को उसने ख़ूब मन लगाकर पढ़ा और अपने देश की शुभ कामना में तत्पर हुआ। उसे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि ऐक्य पैदा करने से मेरी जाति का उद्धार अवश्यमेव होगा। सन् ९ ईस्वी में हेरमन जर्मनी लौट आया। इसने अपनी जाति को युद्ध में ख़ूब निपुण किया। कुछ काल बाद ये लोग रोमवासियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उन को हरा कर अपने देश को विदेशियों के पंजे से छुड़ा लिया। रोमन लोगों के सैनिक और पदाधिकारी सब लोग व्याकुल होकर इटली भाग गये और इटली का अब नाम मात्र अधिकार जर्मनी में रह गया। जर्मन इतिहास में 'वीर हेरमन' स्वदेश का उद्धार-कर्ता आज तक विख्यात है।

चौथी शताब्दी में 'हन' जातीय जङ्गली लुटेरों ने जर्मनी पर धावा किया। ये लोग उत्तरीय एशिया के रहने वाले थे। अन्त में बहुत सेना एकत्र करके ४५२ ईस्वी में जर्मन लोगों ने इन्हें पूरे तौर से हरा दिया। विदेशियों के आक्रमण से बहुत पीड़ित होकर, अब जर्मन के वासियों ने अपने अपने संगठित दल बनाने की आवश्यकता का अनुभव किया। अतएव (१) अलमेनी, (२) फ़्रैङ्क, (३) सैक्सन, (४) गाथ, इन चार बड़े दलों में ये ये लोग बँट गये। सैक्सन लोग 'ग्रेटब्रिटेन' की ओर चले गये और शेष तीन जातियाँ

जर्मनी में रहने लगीं। अपने शासन के सुविधा के हिसाव से ये अपने राजा नियत करते थे। स्मरण रहे कि यह थोकवन्दी हिन्दुओं के जाति-भेद की भाँति कदापि न थी।

—:o:—

फ़्रैङ्क और मेरोविंजियन वंश।

(४८१—७६८)

सन् ४८१ ईसवी में फ़्रैङ्क जाति वालें ने क्लोविस अथवा लडविग को अपना राजा वनाया। इसने रोमन लेगें को अपने राज्य के वाहर निकाल दिया और उनके गिर्जाघरें (चर्च) पर दख़ल कर लिया। उसने वर्गंडी के राजा की भतीजी के साथ विवाह किया। वाद को कुछ कारणें से इन घरानें में लड़ाई हो गई। पर लडविग की जीत रही और वर्गंडी को अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अलमेनी दल के लेगें पर भी इसने अपना अधिकार जमाया। लडविग की पत्नी पहले ही से ईसाई हो चुकी थी। कुछ काल के वाद इसने भी अपनी तीन हज़ार प्रजा के साथ वही धर्म स्वीकार किया। प्रायः सव वर्तमान दल इस समय क्लोविस के शासन में थे। सन् ५११ में इसकी मृत्यु होने पर राज्य इसके ४ पुत्रों में विभक्त हुआ। लडविग के उत्तराधिकारी, जो वाद को 'मेरोविंजियन' कहलाये, वड़े निर्वल राजे थे। वे वड़े आराम-तलव थे। अपने राज्य कार्य्य की ज़रा भी परवा नहीं करते थे। राजा को असमर्थ देख कर नगराध्यक्ष (मेयर्स आव् दि पैलेस) लोग वास्तव में राज्य करने लगे।

इन लोगें में 'पेपिन' नामक नगराध्यक्ष वड़ा चतुर था। अपनी योग्यता के कारण सव राज्य-शासन इसने अपने ही हाथें में ले लिया।

लड़ाइयों में भी इसने योग देना आरम्भ किया। बाद को इसका पोता 'पेपिन दि शार्ट' राज्याधिकारी हुआ। अब रोम के पोप ने इस राज्य में हस्तक्षेप करना शुरू किया। पोप तथा और लोगों की सम्मति से 'पेपिन दि शार्ट' का ही निर्वाचन राज्यासन के लिए हुआ। पोप की कृपा के कारण, यह राजा उसकी बड़ी ख़ातिर करता था और इसी समय से जर्मनी में पोप का प्रभाव ज़्यादा होने लगा। 'पेपिन' का देहान्त होने पर उसके पुत्र जगद्विख्यात 'शार्लमेन' ने ७६८ ईस्वी में राज्य सिंहासन को सुशोभित किया।

छठी और सातवीं शताब्दी में आयर्लैंड के महन्तों ने ईसाई धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया। इंग्लैंड पार करके अपनी छोटी छोटी नावों द्वारा ये जर्मनी में आ पहुँचे, और व्याख्यान देना शुरू किया। पहले पहल अलमेनी और फ़्रैंक लोगों ने यह मत स्वीकार किया। कुछ काल के बाद अनेकानेक महन्त इंग्लैंड से आने लगे और यह धर्म दिन प्रति दिन उन्नति को प्राप्त होता गया। अब अनेक गिर्जाघर यहाँ बन गये और हज़ारों आदमी ईसाई हो रहे थे।

५—शार्लमेन अथवा चार्ल्स दि ग्रेट।

(७६८—८१४)

अपने समय के अत्यन्त महान् और सुयोग्य राजा शार्लमेन ने अब राज्यभार अपने हाथ में लिया। इस महाराज से अद्यापि जर्मनी देश की ही नहीं, वरन सारे योरोप की शोभा बढ़ रही है। यह प्रथम कक्षा का राजनीतिज्ञ, व्यवस्थाकार और साहित्य-प्रेमी था। अपने ४५ वर्ष के राजत्व काल में इसने कुल ५३ लड़ाइयों में योग

दिया। इसका राज्य वड़ा विस्तृत था। प्रायः सब जर्मनी, वेल्जियम, फ्रांस, स्विट्ज़लैंड, उत्तरीय इटली तथा स्पेन इसी के अधीन थे। अनेक जातियों पर समान दृष्टि रख कर उत्तम शासन करने में इसकी उत्कृष्ट योग्यता का परिचय मिलता था।

सामन्त राज्य, वड़े ताल्लुक़े, ताल्लुक़े, तथा सूबों में इसने अपने वड़े राज्य को विभक्त किया। इन सब में एक एक शासनकर्ता रहता था और उन सब की सभा का स्वयं चार्ल्स अधिपति था। हर एक ताल्लुक़ेदार और सूबेदार को 'राजभक्ति' के लिए शपथ खानी पड़ती थी। अन्यथा वह किसी को भी अधिकार नहीं देता था। प्रजा के दुखों को वह पूरे तौर से सुनता था। यदि कोई अधिकारी प्रजा के साथ न्याय न करता तो वह उसकी अपील महाराज के पास कर सकता था। प्रजा की दशा की जांच करने के लिए दौरा करनेवाले अफ़सर नियत थे। इसने चर्च (गिर्जाघर समुदाय) की शासनपद्धति में वहुत कुछ सुधार किया। अनेक धार्मिक मठों में पाठशालायें स्थापित कर दीं। यहां वालकों तथा वालिकाओं को शिक्षा मिलती थी। स्वयं चार्ल्स कभी कभी पाठशालाओं में जाकर विद्यार्थियों के पाठों को सुनता था।

इसने अनेक धर्मग्रन्थ एकत्र किये। उनकी सहस्रों प्रतियों का वितरण धर्मार्थ हुआ करता था। इटली से उत्तम उत्तम गानेवालों को वुला कर उसने अपने यहां संगीत-शास्त्र की चर्चा फैलाई। चार्ल्स सर्वदा विद्याप्रचार की फ़िक्र में रहता था। इसने 'ए' और ईजलहम में दो उत्तम गढ़ वनाये। एक वड़ा धर्ममन्दिर भी 'ए' में

बनवाया गया। व्यापार बढ़ाने का उसने बड़ा प्रयत्न किया। एक नहर भी खोदने का प्रारम्भ किया गया, परन्तु वह पूर्ण न हो सकी।

चार्ल्स उन्नत, विशाल और सुन्दर था। वह कोई ७ फिट ऊँचा था। वह सदा सामान्य भोजन करता और बड़ाही तेजस्वी और गम्भीर था। अन्त में राज्यभार अपने पुत्र लुई को देकर ८१४ ईसवी में उसने परलोकगमन किया।

६—शार्लमेन के उत्तराधिकारी।

(८१४—९११)

लूई (८१४–८४०) अयोग्य राजा था। वह तुच्छ स्वभाव और चंचल था। वह सदा अच्छा ही करने की कामना किया करता था, परन्तु आत्मशासन के अभाव से उसके लिए हरएक विषय दुष्कर था। उस बड़े भारी राज्य पर उचित शासन करना उसके लिए असम्भव था। राजा की निर्बलता के कारण, उसके अधीन राजा लोगों ने आपस में लड़ाई करना आरम्भ किया। इसके ४ पुत्र भी परस्पर युद्ध करने लगे। ८४१ में राज्य-स्वत्व तै करने के लिए फ़ान्टन्वा में एक बड़ा संग्राम हुआ। अन्त में 'वर्डन' के सन्धि-पत्र से सब राज्य उसके पुत्रों में बँट गया। 'लाथेयर' (Lothair) को महाराजकीय अधिकार, नेदरलैंड्स, बर्गंडी और इटली, लुई को कुल जर्मनी और चार्ल्स को पश्चिमी फ़्रांस मिला। इस प्रकार जर्मनी, पुत्र लुई के शासन में, एक पृथक् राज्य हुआ, और अब यहाँ के राजा को केवल इसी देश पर रेख करनी पड़ती थी। यह

दृढ़ आशा थी कि ऐसे अलग हो जाने से जर्मन-लोग किसी न किसी समय अपने 'सम्मिलित हित" (Common interest) का गौरव अवश्य समझेंगे। वास्तव में भविष्य महाराज्य का सुधार होने की अब पूर्ण सम्भावना थी।

उत्तरीय और दक्षिण की खेती की प्रथा में अब तक बड़ा अन्तर था, परन्तु फ़्रैङ्क वंशीय राजाओं ने दोनों भागों की प्रणालियों को समान बना दिया। समस्त भूमि अब 'रईस' (Nobles) लोगों में बँटी हुई थी। बड़े ताल्लुक़ेदार उसे सर्व साधारणों में विभक्त करते थे। भूमिका के स्थान में ये लोग अपने शासन-कर्ताओं की आज्ञानुकूल लड़ने को तैयार रहते थे। छोटे ताल्लु-क़ेदारों पर बड़े ताल्लु़क़ेदार शासन करते थे और इन सब पर स्वयं महाराज की देख भाल रहती थी। यहाँ पर इसी प्रकार का 'फ़्यूडल सिस्टम' प्रचलित था।

चार्ल्स दि फ़ैट, अर्नल्फ़, और चर्ल्स दि चाइल्ड क्रमशः उत्तराधिकारी होते चले आये। इसी काल में नार्मन लोगों ने धावा मारना प्रारम्भ किया। ये लोग इंग्लैंड में आलफ़ेड को कष्ट देही रहे थे, फ्रांस में 'नार्मंडी' अपने नाम पर बसा चुके थे, यहाँ जर्मनी में भी कुछ भूमि पर अधिकार करके नार्थम्ब्रिया अपने नाम पर बसाया। ८८० से ९११ तक इनके आक्रमणों की बड़ी धूम रही। उक्त तीनों राजाओं में से कोई भी ऐसा न था जो उचित रीति से सब पर अपना अधिकार रखता। इस कारण राज्यभर में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। धीरे धीरे बड़े बड़े ताल्लु़क़ेदार (Barons) स्वतंत्रता प्राप्त करने लगे। इन लोगों का अधिकार

बढ़ा और राज-शक्ति का ह्रास होता गया। बहुत गड़बड़ देख कर 'मेग्यार' जाति के लुटेरों ने जर्मनी पर आक्रमण किया। इन लोगों ने भी अपना काम .खूब बनाया। शार्लमेन का वंशज वर्तमान राजा बालक ही था और ९११ में उसका शरीरपात हो गया। बड़े ताल्लुक़ेदार लूट मार कर रहे थे। समस्त देश में हाहाकार मचा था। प्रजा पीड़ित थी और शक्तिमान् ताल्लुक़ेदार सब को सता रहे थे। राज्यासन ख़ाली था। उक्त बालक लुई की मृत्यु के साथ साथ शार्लमेन के वंश की भी समाप्ति हो गई।

७—हेनरी दि फ़ाउलर।

(९१९—९३६)

राज्य का शासन, राजा का निर्वाचन, और प्रजा का उद्धार, यह सब कुछ अब बड़े ताल्लुक़ेदारों के हाथ में था। बिना रिशवत लिये ये लोग किसी राजा को गद्दी पर बैठाने में बड़ी आनाकानी करते थे। फ़्रैंक जाति के एक बड़े ताल्लुक़ेदार "कानरड" को इन लोगों ने राज्य पर बिठाया। सैक्सनी के युवा 'ड्यूक' हेनरी से इसकी बड़ी शत्रुता थी, तथापि ९१९ मरणकाल के आने पर कानरड, हेनरी को ही अपना उत्तराधिकारी बना गया। उसने कहा—"हेनरी यद्यपि मेरा शत्रु है, तो भी उसकी योग्यता का अन्य कोई मनुष्य नहीं मिल सकता, अतएव मेरे बाद हेनरीही राजा हो।" हेनरी दि फ़ाउलर बुद्धिमान् चतुर और सुयोग्य राजा था। राज्य पर बैठते ही 'हंगेरिय' लोगों के आक्रमण से छुटकारा पाने की फ़िक्र वह शोचने लगा। विचार कर उसने कुशलपूर्वक हंगेरियन जाति से यह शर्त कर ली कि यदि वह ९ वर्ष तक उन्हें कर

देता रहे तो वे उसके राज्य पर कदापि आक्रमण न करें। इसी बीच में हेनरी ने सीमा प्रान्त में बड़े उत्तम उत्तम गढ़ बनवाये, और गोला बारूद तथा सब लड़ाई का सामान पूरे तौर से एकत्र कर लिया। गढ़ों के आस पास नगर बसने लगे। ठीक दशवें वर्ष हेनरी ने कर देने से इनकार किया। हंगेरियन लोगों ने बड़े ग़ुस्से में आके ख़ूब ज़ोर बाँध कर, उस पर हमला किया। इधर जर्मनवासी तैयार ही थे। ख़ूब लड़ाई हुई। जर्मन लोगों ने मर्सबर्ग में उन्हें ख़ूब परास्त किया और प्रायः तीस हज़ार हंगेरियन खेत आये।

इस राजा ने एक और भी उत्तम संशोधन किया बड़े ताल्लुक़दारों के छोटे भाई रियासत में कुछ भी भाग न पाने के कारण निरुद्यम होकर, इधर उधर लूट मार किया करते थे, जिससे राज्य में बड़ी अशान्ति फैलती थी। हेनरी ने इन लोगों को अपने राज्य का 'नाइट' (Knight) बनाया और इन लोगों की जीविका का प्रबंध कर दिया।

९३६ में हेनरी की मृत्यु होने पर, उसका पुत्र प्रथम आटो (Otto I.) राज्य पर बैठा। यह भी योग्य राजा था। इंग्लैंड के राजा एडमंड की पुत्री एडिथ के साथ इसका विवाह हुआ। सब रईस लोग इसकी सेवा बड़ी भक्ति के साथ करते थे। इसने भी राज्य की अच्छी उन्नति की। बाद को इसके पुत्र आटो द्वितीय, फिर आटो तृतीय ने क्रमशः राज्य किया। हेनरी दी सेंट से सैक्सन वंश समाप्त हुआ।

८—सैलिक फ़्रैंकवंश!

(१०२४—११२५)

फ़्रैंक जाति का कानरड द्वितीय १०२४ ईसवी में राजसिंहासन पर बैठा। उसके बाद उसीके पुत्र हेनरी तृतीय ने शासन किया।

ये दोनों राजा सुयोग्य थे। उक्त हेनरी का पुत्र हेनरी चतुर्थ अभी बालक था और उसकी माता महारानी की देखभाल उस पर रहती थी।

शार्लमेन ने दो एक बड़े महन्तों (Archbishops) को कुछ भूमि दे रक्खी थी। इन लोगों को शासन के सब अधिकार प्राप्त थे। कोलोन और मेंज़ के महन्त इस समय बड़े शक्तिमान् थे। ये प्रायः अपने को स्वतंत्रही मानते थे। वर्तमान राजा हेनरी चतुर्थ को बाल्यावस्था में देख कर ये लोग अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए यत्नवान् हुए।

संगति ख़राब होने के कारण, हेनरी बढ़ने पर बड़ा अदूरदर्शी और स्वच्छन्द हो गया। इसी काल में इससे और कोलोन के बड़े महन्त से कुछ झगड़ा भी उठ खड़ा हुआ। हेनरी ने अपने प्रतिपक्षियों को निकालना शुरू किया। रोम के पोप ग्रेगरी सप्तम ने हेनरी के नाम, अपने दोष क्षमा कराने की प्रार्थना के लिए, आज्ञापत्र भेजा। हेनरी के इन्कार करने पर, पोप ने उसे जाति-बाहर और राज्य-च्युत कर दिया, और स्वाबिया के रुडल्फ़ को उसके स्थान में चुना। राजा से असंतुष्ट होने के कारण प्रजा भी यह फ़ैसला मानने को तैयार थी। बाद को हेनरी ने पश्चात्ताप करके पोप से क्षमाप्रार्थना की। बहुत दुःख झेलने पर बड़ी मुश्किलों से पोप ने उसका उद्धार किया।

अब हेनरी चतुर्थ फिर राज्य पर बैठा। धीरे धीरे उसने अपनी शक्ति बढ़ाई। मौक़ा देख कर बदले में इसने भी चतुराई के साथ पोप को आसन से हटा कर एक नये पोप का निर्वाचन किया। इसने अपने शत्रुओं से पूरा बदला ले लिया था परन्तु इसका जीवन चैन से न कट सका। अन्त में इसके पुत्र हेनरी पंचम ने अपने पिता को कारागार में भेज कर अपने को राजा बनाया।

हेनरी पंचम (१०९९—११२५) । इंगलैंड के राजा हेनरी प्रथम की पुत्री मैटिल्डा के साथ इसका विवाह हुआ । इसके सब कुछ प्रयत्न करने पर भी, समस्त बड़े ताल्लुक़ेदार दिन प्रतिदिन शक्तिमान् होते गये । बड़े महन्त, महन्त, लाट पादड़ी और स्वयं रोम के पोप इन लोगों को स्वतंत्र बनने में पूरी सहायता दे रहे थे। पोप सदा जर्मन महाराज की शक्ति से डर कर आन्तरिक विग्रह लगाये रहता था । यह समय राजकीय शक्ति के ह्रास का था । लड़ाइयों के कारण राज-शक्ति गिर रही थी, और महन्तसमुदाय (Clergymen) के साथ साथ बड़े ताल्लुक़ेदार स्वाधीन हो रहे थे ।

इन दिनों (१०९६—१२९१ में) 'क्रूसेड' लड़ाइयों की धूम समग्र योरोप में मची थी । पीटर नामक एक साधु के व्याख्यानों से उत्साहित होकर सब योरोप के राजा ईसामसीह की जन्म-भूमि जेरुज़लम को मुसलमानों से मुक्त करने को कटिबद्ध थे । अनेक लड़ाइयाँ इस कारण हुईं । कई बार इन लोगों की जीत हुई । इन युद्धों से पश्चिम के लोग भूगोल, इतिहास, प्राकृतविज्ञान को बड़ी अभिरुचि के साथ देखने लगे ।

६—होहेनस्टाफ़ेन वंश ।

(११२५—१२७३)

फ़्रैंक वंश की समाप्ति होने पर इस देश में अराजकता फैली हुई थी । रईसों ने किसी को 'महाराज' पद के लिए निर्वाचित करने का विचार आपस में किया । इस समय केवल स्वाबिया सैक्सनी और आस्ट्रिया के बड़े रईसों (Dukes) में ही से एक

कोई महाराज बनाये जाने के योग्य था। सैक्सनी और आस्ट्रिया के रईसों ने इतने बड़े पद से भय खाकर महाराज बनना अस्वीकार किया। स्वाबिया के फ़ेडरिक ने बड़े अभिमान के साथ जर्मन-महाराज को सुशोभित करने की तैयारी की। परन्तु मेंज़ का महन्त उसी को महाराज बनाना चाहता था जो उसकी अधीनता स्वीकार करे। फ़ेडरिक ने इस बात से इन्कार किया। अतएव सैक्सनी के लाटेयर को महाराज-पद दिया गया।

लाटेयर (११२५—११३७)। यह बहुत सीधा राजा था स्वाबिया के फ़ेडरिक और फ़्रैंकोनिया के कानरड आपस में ख़ूब लड़ते हुए इसे सदा दबाते रहे। इसने अपनी पुत्री 'गर्ट्रूड' को बवेरिया के हेनरी के साथ ब्याह दिया। ११३७ में इसकी मृत्यु हुई।

अब फिर उत्तराधिकार के लिए बड़ी ठायँ ठायँ हुई। अन्त में होहेनस्टाफ़ेन वंशीय कानरड तृतीय ११३८ में महाराज-पद पर निर्वाचित हुआ। इसके राजत्व-काल में राजकीय वंशों में परस्पर युद्ध होने से बड़ा गड़बड़ रहा। इसने ११४७ में क्रूसेड संग्राम में योग दिया। ११५२ में, इसके मरने पर, इसके भतीजे फ़ेडरिक याबारबरोसा ने राज्यासन लिया।

बारबरोसा (११५२—११९०) ने योग्यता के साथ शासन किया। अनेक ताल्लुक़ेदारों के साथ इसने उत्तम वर्ताव किया। अतएव वे इसे मानने लगे थे। मिसिर देश पर इसने चढ़ाई की, किन्तु मार्ग में नदी उतरते समय यह डूब कर मर गया।

हेनरी षष्ठ (११९८) पहले दरजे का निष्ठुर था। ख़राब वर्ताव होने के कारण सब रईस इससे बिगड़े रहते थे। पालरमाे के लोगों पर इसने मिथ्या राज-द्रोह आरोपण किया और उन सबको एकदम विनष्ट करने की क्रूर आज्ञा दी। लाखों मार डाले गये; हजारों को फाँसी दी गई और सैकड़ों ज़िन्दा ही पृथ्वी में गाड़ दिये गये। पालरमाे नगर की भूमि ख़ून से लाल हो गई थी। वहाँ के रईस रिचार्ड को घोड़े की पूँछ में बँधवा कर इसने खिँचवाया। यह घटना सन् ११९४ में हुई।

११९८ में इसकी मृत्यु होने पर फ़ ेडरिक द्वितीय, हेनरी रैस्प, हालैंड के विलियम, कानरड चतुर्थ, कार्नवाल के रिचार्ड और कैस्टाइल के अल्फ़ोन्सो (क्रमानुसार) महाराज-पद पर आसीन हुए। यह समय राजकीय बल के ह्रास का था। रईस लोगों ने इतस्ततः बलवा करना शुरू कर दिया, जिसे चाहते मारते, काटते और सत्यानाश करते थे। गावों को उजाड़ रहे थे और सारे देश को वीरान कर रहे थे। पोप भी अपनी शक्ति को बढ़ा रहा था। जर्मनी भर में अराजकता फैली हुई थी। महन्त और बड़े रईसों के डर से कोई महाराज बनना स्वीकार नहीं करता था। जिसकी जो इच्छा होती थी वही करता था। इस काल में शहर उन्नत दशा में थे। वे व्यापार, बल तथा कला-कौशल के केन्द्र थे। गिर्जाघरों की भी दशा सुधरी हुई थी। इसी कारण जर्मन-महाराज्य पर कोई बड़ा आघात नहीं पहुँचा, और देश थोड़ा बहुत सम्हला रहा, नहीं तो इसके सत्यानाश हो जाने में कोई कसर नहीं रह गई थी।

—:०:—

१०—साहित्यावस्था (१३ वीं शताब्दी तक)

शार्लमेन के समय से जर्मन लोगों में विद्यानुराग बढ़ने लगा था। बहुत पूर्वकाल से भी देवता अथवा राजा लोगों की प्रशंसा में काव्य रचना हुआ करती थी। तदनन्तर ईसाई मत का प्रचार होने पर धर्मोपदेशकों ने बहुत कुछ विद्योन्नति की। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, शार्लमेन के काल से विद्या की ओर अभिरुचि ज़्यादा होने लगी और शनैः शनैः अधिकता को प्राप्त होती गई। बीच में अशान्ति होने के कारण अनेक आक्रमणों के होने से विद्योन्नति को बहुत आघात पहुँचा, तथापि शिक्षाविभाग इस काल में एक उत्तम कक्षा को प्राप्त था।

पहले विद्यानुराग अधिक होने पर, लोगों ने लैटिन भाषा में अनेक पुस्तकें रचीं। ऐसे ही धार्मिक कविता आरम्भ हुई। इस काल का 'हेलियांड' (Heliand) नामक महाकाव्य बहुत विख्यात है। आठवीं शताब्दी से बड़े बड़े ताल्लुक़ेदारों की भी प्रवृत्ति विद्या की ओर हुई। वे विद्वानों को सहायता देते और उनके द्वारा उत्तम उत्तम ग्रंथ बनवाते थे। ११ वीं शताब्दी में 'आख्यायिकाओं' के अनेक ग्रन्थ तैयार हुए। नीबेलूंग्यन लीड (Niebelungen Lied) इस समय का अत्यन्त विख्यात ग्रन्थ है। बहुधा इसकी समता होमर के 'इलियड' से दी जाती है। इस समय में बड़े बड़े उत्तम आख्यायिकाकार (Romancers) होगये हैं।

११—हैप्सवर्ग, वबेरिया और लक्सेम्वर्ग के राजे।

(१२७३—१४९३)

अराजकता के कारण अव लोग वहुत व्याकुल हो रहे थे, अतएव किसी को निर्वाचित करने की सलाह ठहरी । सर्वसम्मत्यनुकूल हैप्सवर्ग (स्विट्ज़रलैन्ड) के रुडल्फ ने १२७३ में राज-पद शोभित किया । प्रादेशिक रईस को पराजित करके इसने वोहेमिया को अपने पहले वाले तअ़ल्लुक़े हैप्सवर्ग में मिला दिया । इसने पोप की वहुत सी वातें मान के उसके पक्ष के प्रतिपोपक प्रस्ताव स्वीकार कर लिये । १२९२ में इसकी मृत्यु हुई ।

इसके वाद लोगों ने नासो के 'अडाल्फ़स' को महाराज वनाया। वड़े रईसों में विकट संग्राम होने के अतिरिक्त और कोई विशेष घटना न हुई । १२९८ में रुडल्फ़ के पुत्र अल्वर्ट प्रथम का निर्वाचन हुआ । यह हैप्सवर्ग तअ़ल्लुक़े को आत्मसात् करने की फ़िक्र करता रहा, और इसी प्रयत्न में इसकी मृत्यु भी हो गई । नासो के अडाल्फ़स को इसने पूर्व ही मार डाला था । अनन्तर १३०८— १३१४ तक लक्सेम्वर्ग के हेनरी सप्तम ने राज्य किया । हैप्सवर्ग के लोगों के साथ मेल पैदा करने के लिए इसने अनेक उपाय किये। ववेरिया का लडविग इस समय शक्तिमान् था और वही गद्दी पर वैठा।

लडविग चतुर्थ (१३१४—१३४७) हैप्सवर्ग वालों से और आस्ट्रिया के राजा से लड़ाई शुरू हो गई । पोप और फ़्रांसराज से भी संग्राम के सूत्रपात होने का डर था। लडविग को वहुत आकुल होना पड़ा । पोप ने इसे जाति-वहिष्कृत किया था

परन्तु १३३८ वाली फ़्रैंकफ़र्ट की महासभा में जर्मन देश के लोगों ने पोप की आज्ञा को रद कर दिया। हालैंड और ज़ीलैंड पर भी इसे अधिकार मिल गया।

यद्यपि इसे चारों ओर से आक्रमण होने का भय था, तथापि जर्मनवासियों में स्वदेश-प्रेम का गूढ़ संचार हो जाने के कारण विदेशीय हमलों से डरने की कोई आवश्यकता न थी। वे पोप को कुछ भी नहीं मानते थे और घरेलू मामलों में विदेशीय हस्तक्षेप को एक दम नापसन्द करते थे। समस्त जर्मन देश अब अपनी जन्मभूमि के लिए कट मरने को तैयार था। अपने को इस भाँति बलवान् समझता हुआ लडविग भी निर्भय होकर अपनी स्वाधीनता प्रतिपादित करने को सन्नद्ध था। फ़्रैंकफ़र्ट की सभा से फिर यह निश्चित कर दिया गया कि जर्मन-महाराज के निर्वाचन के मामले में पोप को ज़रा भी अधिकार न था। उसके मरणानन्तर १३४७ में लक्सेम्बर्ग के चार्ल्स चतुर्थ ने राज-पद अलंकृत किया।

चार्ल्स चतुर्थ (१३४७—१३७८) को लोगों ने राजा बनाने से इन्कार किया। अतएव इसे बाहर भाग जाना पड़ा। १३४९ में गन्थर को राज्यासन मिला, परन्तु कुछ अनबन हो जाने से उसने महा-राज-पद त्याग दिया। फिर चार्ल्स चतुर्थ को वापस होके शासन-भार अपने ही ऊपर लेना पड़ा। इसी के समय में गोल्डेन बुल निश्चित कर दिया गया। इसके द्वारा यह तै हो गया है कि अमुक अमुक सात पदाधिकारियों ही को निर्वाचन-स्वत्व प्राप्त रहेगा।

स्वयं महाराज की अपेक्षा इस 'सप्तमन्त्रि-मण्डल' का बल विशेष था। चार्ल्स के बाद राज्यभार उसके पुत्र 'वेन्सेस्लस' के हाथ आया।

वेन्सेस्लस बड़ा अयोग्य राजा था। इसका अधिक समय हंसी दिल्लगी में व्यतीत होता था। १४०१ में लोगों ने रूपर्ट को राज-पद के लिए चुना, परन्तु कुछ कारणों से वह शासन न कर सका। कुछ काल बाद सिजिस्मंड ने वेन्सेस्लस को कैद कर अपने को राजा बनाया।

यह सिजिस्मंड राजा बड़ा अभिमानी था। कांसटैंस की महासभा और 'हसाइट' (Hussite) युद्ध इसी के समय में हुए। धार्मिक विवाद होने के बाद मतभेद हो जाने पर, जान-हस को जीवित जला देने की आज्ञा इस राजा ने दी। यह जान कर बोहेमिया के लोग बिगड़ पड़े और 'जिसका' के छोटे ताअल्लुके-दार जान को अपना सेनापति बना कर, उन लोगों ने प्रचण्ड मार काट आरम्भ की। इन लोगों ने राजकीय सेना को अनेक बार हराया और बवेरिया के साथ साथ फ्रैंकोनिया को भी तहस नहस कर दिया। कालान्तर में इनके कहने के अनुकूल धार्मिक संशोधन हो जाने पर फिर से १४३३ में शांति स्थापित हुई।

लक्सम्बर्ग वालों के बाद १४४० में हेप्सबर्ग के लोगों के हाथ राज्यासन फिर आगया, और तबसे १८०६ तक यही वंश शासन करता रहा। अलबर्ट द्वितीय ने केवल एक वर्ष राज्य किया। फ्रेडरिक तृतीय उसका उत्तराधिकारी हुआ।

फ्रेडरिक तृतीय (१४४०—१४९३) ने बहुत काल तक राज किया, परन्तु राजकीय मामलों पर ध्यान देना यह बिलकुल नहीं

जानता था। जिस समय में महासभा में किसी बड़े भारी मामले पर वार्त्तालाप होता था उस समय आपको निद्रा अवश्यमेव आजाती थी। चाहे राज्य पर किसी प्रकार की भी भयानक आपत्ति आगिरे, परन्तु आपके सुख-भोग में ज़रा भी विघ्न न होना चाहिए। राज्य-कार्यों में बड़ी गड़बड़ी फैली हुई थी, और छोटे बड़े ताल्लुक़ेदार (Barons and Knights) सब बलवा करने को उद्यत थे। समस्त प्रजा राजाज्ञा के बन्धन को तोड़ डालने पर तैयार थी। तुर्क लोग जर्मनी पर चढ़ाई करने के प्रयत्न में थे, परन्तु राजा साहब को इन झंझटों से कोई भी सरोकार न था। यदि जर्मन-प्रजा तुर्कों के आक्रमणों को वीरता के साथ न हटा देती, तो जर्मनी को न मालूम कितनी क्षति होती। हंगरी और बोहेमिया अपने पृथक् राजा चुन कर स्वाधीन हो गये। इस समय समस्त महाराज्य बड़ी दुर्दशा में था। सब स्थानों में एक न एक विभ्राट् उपस्थित था। जर्मनी को इस निकृष्ट दशा पर पहुँचा कर इस राजा ने परलोकगमन किया, और इसका चतुर तथा सुयोग्य पुत्र मैक्स-मिलान प्रथम १४९३ में गद्दी पर बैठा।

मैक्समिलान प्रथम।

(१४९३—१५१८)

इस राजा के राजत्वकाल से जर्मनी के प्राचीन समय की समाप्ति और नवीन का प्रारम्भ होता है। यह राजा बड़ा पराक्रमी, धीर और शिष्ट था। इसने राज्य के विप्लवों को हटाकर फिर से शान्ति

स्थापित की। क्या इसके शत्रु, क्या मित्र, एवं प्रजा और सामन्त राजा सब इसकी सुयोग्यता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते थे।

इसने १४९५ में यह राज-नियम प्रचार किया कि प्रजा आपस ही में एक दूसरे से बदला न लेलिया करे, प्रत्युत सब ऐसे मामले राजकीय न्यायालयों में पेश किये जावें। प्रबन्ध के लिए उसने समग्र देश दस भागों में बाँट दिया और सब में एक एक शासक नियत किया। इसने राज्य की बड़ी उन्नति की। डाक-विभाग इसी समय से खोला गया। इस काम में राजा को बड़ी विपत्ति सहनी पड़ी थी। सभी सामन्त रियासतों से सन्धिपत्र लिखा कर और नई सड़कें तैयार करने के बाद डाक का समुचित प्रबन्ध सुधारना, तब का अशान्तिपूर्ण समय देखते हुए, एक सरल काम न था। मैक्समिलान ने अपने पड़ोसी राज-समूह से मित्रता करनी प्रारम्भ की। हंगरी, बोहेमिया और स्पेन के साथ इसने अच्छी मैत्री कर ली। स्पेन राज्य की एक मात्र उत्तराधिकारिणी 'जोआना' के साथ इसने अपने पुत्र के साथ विवाह किया। केवल फ़्रांसवासी, तुर्क तथा रोम के पोप अब शत्रुओं में शेष थे, और बाक़ी सब राज्यों के साथ इसका मित्र भाव था।

इस समय जर्मन-साहित्य दिन प्रति दिन उन्नति को प्राप्त हो रहा था। अभी तक जर्मनी में उच्च और निम्न (High and Low) दो प्रकार की भाषा बोली जाती थी, परन्तु दोनों तरक्क़ी करते करते अब समान हो गई। छापेखाने (यंत्रालय) भी स्थान स्थान पर खुल गये, जिनकी सहायता से पुस्तक-प्रचार उत्तमतया होने

लगा। पुस्तकों का मूल्य सस्ता होने से अब ग़रीब अमीर समस्त प्रजा का अनुराग लिखने पढ़ने में बढ़ रहा था। रईस महन्त-समुदाय, और सर्व साधारण विद्योपार्जन में व्यग्र थे। इस काल में उत्तम उत्तम ग्रन्थकार हो गये हैं, जिनकी बनाई हुई पुस्तकें आज भी जर्मनी के साहित्य की शोभा बढ़ा रही हैं। आज कल भंड़ौवा बनाने में लोगों की बड़ी रुचि थी। इस विषय में सेवस्टियन ब्रैंट, मर्नर और जान फिशार्ट आदि बड़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। अलरिश वान हटेन एक उत्कृष्ट कवि इस समय का हुआ है और अलबर्ट डूरर प्रथम कक्षा का चित्रकार और वैज्ञानिक था। जान आर्नड्ट बड़ा प्रबल गद्यलेखक था। अनेक इतिहास लिखने वाले नाटककार इस समय वर्तमान थे। रङ्गभूमि तैयार करके लोग नाटकों को खेलते भी थे। संगीत शास्त्र तरक़्क़ी पर था। रईस लोग विद्वानों को आश्रय देते और साहित्योन्नति के लिए बहुत कुछ व्यय करते थे।

जर्मनी के नगर-समूह इस समय बड़ी उन्नति पर थे। नगर के चारों ओर दीवारें बनाई जाती थीं और उसके बाद एक ख़न्दक़ होती थी। आज तक यहाँ नगर ही विद्या, धन, तथा व्यापार के केन्द्र थे। सुन्दर सुन्दर मकान तैयार किये जाते थे। मकानों में बहुधा पत्थर लगाया जाता था। उनके ऊपर बुर्ज और कमरों में खिड़कियाँ रक्खी जाती थीं।

१५१८ में मैक्समिलान प्रथम की मृत्यु होने पर उसका पुत्र चार्ल्स पंचम राजसिंहासन पर बैठा।

के टिकट बेचने के लिए जर्मनी में आये। ल्यूथर ने सर्वसाधारण को समझाया कि पाप के लिए क्षमा प्रदान करने का अधिकार केवल ईश्वर ही को था. और पोप आदि का ईश्वर प्रति-निधि बनाना एक प्रहसन मात्र था। इंडल्जेन्स (Indulgence) नामक पोप (रोमवाली कैथोलिक धर्म का अधिष्ठाता) के टिकट लेकर पाप से कोई नहीं मुक्त हो सकता था। मनुष्य को पाप से छूटने के लिए वास्तविक पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करना चाहिए। तभी भगवान् प्रसन्न होंगे। पवित्र जीवन से परमात्मा ख़ुश होगा। तत्कालीन धर्मवेत्ताओं की दृष्टि में यह एक नवीन पन्थ था और वे ल्यूथर को नास्तिक ख़याल करने लगे। इधर अपने महत्त्व को नष्ट होते देख कर पोप भी बिगड़ उठा। ल्यूथर के अनेकानेक शिष्य होते गये और विरोध की ज्वाला यहां तक बढ़ी कि १५१७ में खुल्लमखुल्ला पोप से झगड़ा शुरू हुआ। १५१७ ही वास्तव में संशोधन (Reformation) के आरम्भ होने का साल है।

ल्यूथर ने प्राचीन गिर्जाघर के इतिहास को जांचना शुरू किया। पवित्र जीवन पर उसने बड़ा ज़ोर दिया। उसका मत था कि ऊपरी दिखाव से कुछ नहीं हो सकता। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए पाखण्डी महन्तों की आवश्यकता न थी. और न पोप ही की भक्ति करने की ज़रूरत थी। १५२० में इसने (Babylonian) Captivity of God) 'बेबिलोन नगरीय ईश्वर की गिरफ़्तारी' नामक अपने विचारों की प्रदर्शक एक पुस्तक मुद्रित की। इसमें उसने पोप के धार्मिक शासन पर पूरा कटाक्ष किया। बेबिलोन

नगर की उपमा लेकर उसने धार्मिक प्रश्न पर इसमें व्याख्यान दिया है। जैसे कि यहूदी लोग उक्त नगर में बन्द कर दिये गये थे, वैसे ही कैथोलिक गिर्जाघरों में धर्मवेत्ताओं के क़ैद रहने का वर्णन इसमें किया गया है। इसने यह भी दिखाया कि सब धर्म-संस्कारों (Sacrament) को पोप ने पकड़ लिया था और अब उन्हें कैसे छुड़ाना चाहिए। यह ग्रन्थ लिखने के पूर्व वह 'क्षमा प्रार्थना-विक्रय' Selling indulgences) की प्रथा में ९५ दूषण दिखा चुका था, जिससे उसका बड़ा नाम हुआ। १५२२ में उसने नवीन 'टेस्टामेंट' का अनुवाद देशी भाषा में प्रकाशित किया। उसी साल में उसने १३० छोटी छोटी धर्म-पुस्तकें छपवाईं और १५२३ में पुनः ८३ मुद्रित कराई गईं। इसी प्रकार ल्यूथर प्रायः १५३६ तक उत्तम उत्तम पुस्तकें लिखता रहा। इन धर्म-ग्रन्थों से सर्व-साधारण को अपने विचारों का परिष्कार करने में बड़ी सहायता मिलती थी। लोग पोप को घृणा की दृष्टि से देखने लगे। ल्यूथर का आदर दिन प्रति दिन बढ़ रहा था। अब इसके अनुगामी लाखों क्या करोड़ों आदमी, केवल जर्मनी ही में नहीं वरन योरोप के सब देशों में वर्तमान थे। जर्मनी के अनेक रईस भी इसके विचारों के प्रतिपोषक थे। वे सब यह स्पष्ट रूप से चाहते थे कि 'अब जर्मन देश से पोप के अधिकार को हटाकर जर्मन क़ानून का प्रचार हो'। धार्मिक विषय मात्र ही हाथ में न लेकर, ल्यूथर देश-सुधार के लिए भी यत्न कर रहा था। उसके ये वाक्य स्मरणीय हैं " The strength of a town does not consist in its

towers and buildings, but in counting a great number of learned, serious, honest and well-educated citizens."
अर्थात् 'बुर्ज और महलों के होने से नगर बलशाली नहीं हो सकता है बरन विद्वान, गम्भीर, ईमानदार और सुशिक्षित मनुष्यों (नागरिकों) की अच्छी संख्या होने ही से वह शक्तिमान होगा।

लूथर को प्रबल होते देख कर 'सरकार' को आशंका हुई। यह समझ कर कि लाखों आदमी लूथर के मत को धारण कर रहे हैं, जर्मन महाराज को कुछ भय हुआ। वह यह नहीं चाहते थे कि एकाएक लूथर इतना शक्तिशाली हो जावे। १५२१ की महासभा में यह प्रतिभाशाली महोपदेशक बुलाया गया। इसमें विशेष बल राज-वर्ग और लूथर के विरोधी पंडितों का ही था। इन लोगों ने इसकी सब धर्मपुस्तकों को जलवा देने की आज्ञा दी और आदेश किया कि यदि लूथर साल भर के बीच धार्मिक विद्रोह को शान्त करने का उपाय न करे तो उसे तदनन्तर कठोर दण्ड दिया जावे। इस निष्ठुर फ़ैसले को सुन कर असंख्य प्रजा वर्ग ने बग़ावत शुरू की और सब लूथर की सहायता करने को तैयार हुए। वर्ष समाप्त नहीं होने पाया था कि प्रजा-प्रतिनिधियों ने बड़ा ज़ोर बाँध कर नरेन्द्रों की सभा की और १५२१ के हुक्म को पलट दिया। फिर १५२६ में सब पन्थों के साथ समान बर्ताव करने के लिए एक क़ानून बनाया गया। १५२९ में महाराज ने फिर विचार सभा एकत्र की और उक्त क़ानून के तोड़ देने की चर्चा उठाई गई। प्रजावर्ग ने इस बात से 'प्रोटेस्ट' अथवा विरोध

किया। इन लोगों में अधिकांश ल्यूथर के मत को मानने वाले थे, अतएव आज से इस पन्थ का नाम 'प्रोटेस्टैंट' रक्खा गया। यह राजा प्रजा का झगड़ा १५३० तक चला गया। इस वर्ष आग्सबर्ग में सभा फिर की गई। प्रजा को शान्त रखने के लिए महाराज ने फ़ौज आदि की भी आयोजना कर ली थी। सभा का समय आने पर महाराज-दल का बड़ा भारी विरोध किया गया। इस विरोधी-समुदाय के अगुवा स्वयं 'प्रशिया' के निर्वाचक थे। अधिकांश रईस और समग्र प्रजा अब ल्यूथर के पक्ष में थी। महाराज को अनन्य उपाय होकर सबकी बात माननी पड़ी। आज से ल्यूथर को निर्भयता मिली और उसने स्वतंत्रता के स्वच्छ वायु-मण्डल में श्वास लिया।

पहले ही से ल्यूथर के मन में वैराग्य भाव था। इसी कारण धार्मिक आन्दोलनों में उसे इतनी सफलता हुई। वह सर्वदा लोगों को सत्पथ पर लगाने के लिए यत्न करता रहा। गिर्जाघरों की समस्त कुरीतियों को हटा कर उसने अपना परिष्कृत 'प्रोटेस्टैंट' पन्थ सर्व साधारण को सिखाया। १५२५ में उसने विवाह भी कर लिया था और उसके अनेक सन्तति भी हुईं। उसकी पत्नी एक अच्छे घराने की थी और इस कारण दोनों का गार्हस्थ जीवन सुखपूर्वक बीता। १५३० के बाद ल्यूथर का शेष जीवन, कुछ मानसिक उद्वेगों के कारण, सुखपूर्वक न कटा। उसने कई एक अच्छी अच्छी पुस्तकें भी लिखीं। योरोप के अनेक देशों में लाखों मनुष्य ल्यूथर-मतावलम्बी थे। उसके जीवन काल ही में इस पन्थ

की बड़ी उन्नति हुई और तब से अद्यावधि इस मत के मानने वालों की संख्या बढ़ती चली आई है। १५४६ में ल्यूथर ने इस संसार को त्याग कर परलोक-यात्रा की। ईसाइयों में आज दिन ल्यूथर के मत पर चलने वालों की संख्या कई करोड़ है, यहाँ तक कि कई देश के देश प्रोटेस्टैंट-मतावलम्बी हैं।

१४—चार्ल्स पंचम।

(१५१९—१५५८)

यह राजा चतुर और साहसी था। स्पेन, इटली, बोहेमिया और आस्ट्रिया इसके शासन में थे। राजत्व-काल भर एक न एक शक्ति अथवा अपनी प्रजा के साथ अनेक कारणों से उसे लड़ते ही रहना पड़ा। निर्वाचकवृन्द (Electors) अब राज-शक्ति का बढ़ना बहुत नापसन्द करता था और एक स्वाधीन शासन एवं स्वराज्य स्थापन के लिए यत्नवान् था। 'वर्म्स' नगर की महा-सभा में यह तै हो गया कि चार्ल्स के कहीं बाहर जाने पर शासन-भार निर्वाचकों के हाथ रहेगा।

मार्टिन ल्यूथर के विचार जर्मन-वासियों को खूब स्वतंत्र बना रहे थे और वे लोग स्वाधीनता के लिए जीवदान करने पर भी तैयार थे। इस मत के लोगों का नाम प्रोटेस्टैन्ट हुआ और महन्त-समुदाय की आज्ञा को यथा पूर्व मानने वाले 'रोमन कैथोलिक' कहलाते थे। यहाँ पर 'सैलोकटन' नामक पुरुष कट्टर प्रोटेस्टैन्ट था। लाखों जर्मन-वासी इसके कहने पर बलवा भी करने को उद्यत

थे। कृषकवर्ग प्रायः सब स्वतन्त्र विचार का हो गया था। ये लोग टैक्स कम कर देने की प्रार्थना राजा से करने लगे। इन लोगों के साथ साथ मंस्टर-वासियों ने भी बड़ा विप्लव मचाया। धार्मिक मत-भेद होने पर ज़रा ज़रा सी बातों में ख़ूब झगड़ा होता था। चार्ल्स ने स्पायर्स नामक नगर में एक महा सभा करके सबको 'धार्मिक स्वातंत्रय' (Religious liberty) प्रदान किया और उपस्थित झगड़ा शान्त हुआ। १५३० में 'आग्सबर्ग' में एक और महासभा हुई। सब कुछ प्रयत्न किये गये, किन्तु प्रोटेस्टैंट रईस लोग बिना लड़े नहीं मानने वाले थे। सैक्सनी के फ़्रेडरिक तथा फ्रांस के हेनरी द्वितीय भी युद्ध करने को कमर कसे थे। निरुपाय चार्ल्स पंचम को प्रोटेस्टैंट रईसों से सन्धि कर लेनी पड़ी, और उसने इन्हें अभीष्ट स्वतंत्रता देने का वचन दिया। इधर पोप पाल चतुर्थ भी लड़ने को कटिबद्ध हुआ। इस समय चार्ल्स बड़ी दुर्दशा में था। चिन्ता के प्रभाव से स्वास्थ्य बिगड़ने पर १५५८ में उसकी मृत्यु हुई।

नेदरलैण्ड, स्पेन, और अमेरिका के उपनिवेश इसके पुत्र फ़्रेडरिक द्वितीय के हाथ रहे और उसका भाई फ़र्डीनेंड प्रथम बोहेमिया, हंगरी, जर्मनी आदि का राजा हुआ। उसके बाद फ़र्डीनेंड प्रथम का पुत्र मैक्समिलान द्वितीय गद्दी पर बैठा। ये दोनों शान्तिप्रिय थे, अतएव झगड़ा बहुत कम हुआ। तदनंतर मैक्समिलान का पुत्र रुडल्फ़ द्वितीय राजसिंहासन पर आसीन हुआ। इसकी अयोग्यता के कारण विभ्राट फिर उपस्थित होने लगे। १६१२ में

उसकी मृत्यु होने पर उसके भाई मेटियाज़ के हाथ में राज-शासन आया।

—:o:—

१५—तीस वर्ष का प्रचंड युद्ध।

(१६१८—१६४८)

आज कल प्रोटेस्टैंट और रोमन कैथोलिक लोगों में घोर शत्रुता थी। ये दो दल अपने अपने प्रतिपक्षियों को बड़ी कड़ी निगाह से देखते थे। कैथोलिक प्रोटेस्टैंटों को नास्तिक मानते और उन्हें लूट लेने को तैयार थे। प्रोटेस्टैंट लोग कैथोलिकों को पाषण्डी कह के, मार डालने को सन्नद्ध थे। यह शत्रुता रोज़ रोज़ बढ़ती गई। अन्त में इसी वैर-भाव के कारण यह तीस वर्ष का घोर युद्ध हुआ, जिसमें योरोप की प्रायः सब शक्तियाँ शामिल थीं और जिसने समस्त योरोप महाद्वीप को जड़ से हिला दिया। यह संग्राम मेटियाज़, फ़र्डीनेंड द्वितीय और तृतीय, इन तीन राजाओं के राजत्व-काल पर्य्यन्त जारी रहा। राजशक्ति दिन प्रति दिन कम हो रही थी और प्रजा की पारस्परिक मेल पैदा करने वाली ग्रन्थि शिथिलता को प्राप्त हो रही थी। वीर मैन्सफ़ील्ड प्रोटेस्टैंट सेना का नेता था। १६१८ से संग्राम प्रारम्भ हुआ। दो विदेशी योद्धा राज-सेना के अधिपति थे। प्रोटेस्टैंट लोगों ने इँगलेंड के जेम्स प्रथम के दामाद फ्रेडरिक (एलेक्टर पैलेटिनेट) को अपना राजा चुन लिया। संग्राम आरंभ ही हो चुका था। कभी एक पक्ष जीतता और कभी फल इसके विपरीत होता था। बवेरिया का

मैक्समिलान कैथोलिक लोगों का सेनापति था। १६२० में प्रेग स्थान पर कैथोलिक सेना ने प्रोटेस्टैंटों को हरा दिया, और फ़्रेडरिक को नेदरलैंड भागना पड़ा। डेनमार्क तथा अन्यान्य राजा प्रोटेस्टैंट लोगों के पक्ष में खड़े हुए और संग्राम होता रहा। 'काउंट टिली' इस समय राजसेना की ओर से तैयार हुआ, और १६२२ में उसने मैन्सफ़ील्ड को पराजित किया। अलबर्ट वान वालेन्स्टीन भी राज-पक्ष पर लड़ने लगा। इस काल में यह सेना केवल प्रोटेस्टैंट लोगों के ही विरुद्ध न थी, किन्तु समस्त जर्मनी में बड़ा उपद्रव मचा रही थी। कैथोलिक लोगों ने जर्मन-राज से शान्ति की प्रार्थना की और यह भयङ्कर सेना तोड़ दी गई। अभी तक प्रोटेस्टैंट दल हारता रहा था। स्वेडेनराज 'गुस्टवस अडालफ़स' अब बड़ी भारी सेना लेकर प्रोटेस्टैंट लोगों के लिए लड़ने को आया। इस सेना से राजसेनापति टिली को करारी हार मिली। स्वेडेनराज के साथ ७,००,००० मनुष्य थे। ये लोग जिधर निकल जाते सारे देश को नष्ट कर देते थे। इनका सामना करने का किसी का भी साहस नहीं पड़ता था। जर्मन-राज ने फिर उसी वालेन्स्टीन से सहायता माँगी। उसने राजा से अपना पूरा मतलब स्वीकार करा के एक बड़ी भारी सेना एकत्र करना आरम्भ किया। दोनों में लड़ाई हुई और युद्ध में स्वेडेन राजा की मृत्यु हो जाने पर भी उसका पराक्रमी सेनापति शत्रुओं से लड़ता रहा, और अन्त में उसने वालेन्स्टीन की सेना के छक्के छुड़ा दिये। कपटी होने के कारण, वालेन्स्टीन को उसी के सैनिकों ने मार डाला।

अब फ़र्डीनेंड तृतीय ने बड़ी सेना एकत्र करके प्रोटेस्टेंटों के विरुद्ध जा मैदान लिया और उन्हें हराया। लोग लड़ाई से बहुत ज़्यादा व्याकुल हो गये थे। अतएव १६४८ में वेस्टफ़ेलिया की सन्धि से लड़ाई शान्त की गई। जर्मनी को इस युद्ध से बड़ी हानि हुई। जर्मनी का कुछ हिस्सा फ़्रांस और स्वेडेन के हाथ जाता रहा। हालैंड और स्विट्ज़रलैंड स्वाधीन हो गये। जर्मनी के दो तिहाई मनुष्य इस लड़ाई में मरे। सैंकड़ों नगर तबाह हो गये और व्यापार को बड़ा आघात पहुँचा। राजा की शक्ति अब बहुत कम हो गई।

१६—लेओपल्ड प्रथम।

(१६५७—१७०५)

अब फ़र्डीनेंड तृतीय के पुत्र लेओपल्ड ने राज्यासन सुशोभित किया। सर्वप्रिय होते हुए भी यह निर्बल राजा था। जर्मन राजा को अयोग्य देख कर, फ़्रांस के राजा लुई १४ ने, अपनी राज्यसीमा बढ़ाने की आकांक्षा से उक्त सन्धिपत्र के १० वर्ष बाद लड़ाई आरम्भ की।

जर्मनी के रईस लोग इतने स्वार्थी हो रहे थे, कि वे स्वदेश-कल्याण को बिलकुल न ख़याल करके अपने अपने मतलब में पड़े थे। कई रईस लोग फ़्रांस के लुई से जा मिले। कुछ कारणों से तुर्क लोगों ने भी चढ़ाई की, परन्तु इन्हें हारना पड़ा। जर्मनी को अपने अनेक नगर खोने पड़े। जर्मनी अब बड़ी शोचनीय दशा में

था। इस समय यदि पैलेटिनेट के निर्वाचक (Elector) और 'सेवाय' के राजकुमार यूजेन लेओपल्ड को सच्चे हृदय से सहायता न देते रहते, तो जर्मनी की दशा और भी बिगड़ जाती। पैलेटिनेट निर्वाचक इधर फ्रांस की सेना से बड़ी वीरता के साथ लड़ रहे थे, और उधर वीर यूजेन तुर्क लोगों का सामना कर रहा था।

१७०१ में स्पेन के उत्तराधिकारी का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। स्पेन के राजा चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। इसके कोई सन्तान न थी। अतएव फ्रांस राज लूई १४ वें, जर्मनी के लेओपल्ड, और बवेरिया के निर्वाचक जोज़ेफ़ फ़र्डीनेंड ने स्पेन राज्य के लिए दावा किया। परिणाम यह हुआ कि १३ वर्ष तक संग्राम हुआ। इँगलैंड' पोर्चुगल, और हालैंड के राजा, तथा हैनोवर और ब्रैंडेनबर्ग के निर्वाचक (जिसको जर्मन महाराज ने प्रशिया के राजा की उपाधि दे रक्खी थी) जर्मन-महाराज के पक्ष में थे, और लूई १४ वाँ तथा जोज़ेफ़ फ़र्डीनेंड दूसरी ओर थे। जर्मन और अँगरेज़ी सेना राजकुमार यूजेन और मार्लबरा के नेतृत्व में थी। इस सेना का संगठन बड़ा बढ़िया था। इसने आरम्भ से अन्त तक शत्रुदल को पराजित किया।

जर्मन सेना ने फ़्रांसवालों को ब्लेनहिम (१७०४)रैमिलीज़(१७०६) ऊडेनार्ड (१७०८) और मालप्लेका (१७०९) में हराया। वारंवार पराजित होने के कारण संत्रस्त होकर लूई १४ वें ने 'यूट्रे' की सन्धि से १७१३ में इस संग्राम को शान्त किया। फ़्रांस-राज का पोता फ़िलिप स्पेन का राजा हुआ। १७०५ में लेओपल्ड का देहान्त

होने पर उसका पुत्र जोज़ेफ़ प्रथम राज्यासन पर बैठा। तदनन्तर उसके भाई चार्ल्स षष्ठ के हाथ में अधिकार आया।

रईस लोग सर्वसाधारण को बहुत पीड़ित करते थे। वह लोग लगान देते देते व्याकुल थे। रईसों का सब रुपया दिखावट, बनावट और व्यर्थ के कामों में खर्च होता था। रेशमी कपड़ों का बड़ा रिवाज था। मकान और गिर्जाघर ख़ूब बन रहे थे। संगीतशास्त्र भी बड़ी उन्नति पर था।

१७—मैरिया थेरेसा।

अपने पिता चार्ल्स षष्ठ के जीवनकाल ही में मैरिया थेरेसा 'आस्ट्रिया' की महारानी हो चुकी थी। सब राजशक्तियों की सलाह से चार्ल्स ने 'प्रैगमेटिक सैंक्सन' नामक एक दानपत्र लिखा था जिससे कि उसकी पुत्री मैरिया थेरेसा जर्मन-राजत्व की उत्तराधिकारिणी निश्चित कर दी गई थी। १७४० में चार्ल्स का देहान्त होने पर मैरिया के पति लोरेन के फ्रैंसिस ने बोहेमिया, हंगरी और आस्ट्रिया-मुख्य पर अपना अधिकार जमाया। बवेरिया के निर्वाचक को चार्ल्स सप्तम की उपाधि देकर राज्यासन पर बिठाया। अपना राज्य बढ़ाने की इच्छा से प्रशिया के राजा फ्रेडरिक द्वितीय ने मैरिया से लड़ना शुरू किया। जर्मनी के अनेक रईस और ताल्लुकेदार तथा निर्वाचक उसके विरुद्ध हो गये और संग्राम अवश्यम्भावी था। इस समय मैरिया बड़ी विपत्ति में थी।

मैरिया थेरेसा जर्मन-इतिहास में अपनी महानुभावता और चतुरता के लिए बहुत विख्यात है। वह बड़ी शिष्ट महारानी थी। उसकी प्रजा बड़े भक्ति भाव से उसके साथ बर्ताव करती थी। यह देख कर कि समस्त जर्मनी लड़ने पर तैयार है, मैरिया अपने अल्प-वयस्क राजकुमार को लेकर प्रेग को गई और वहाँ की महासभा से सहायता के लिए विनय की। वे लोग महारानी की शिष्टता से प्रोत्साहित होकर जर्मन लोगों के विरुद्ध आ डटे। इंगलैन्ड ने भी मैरिया की सहायता करने का वचन दिया। ये सब अपनीं महरानी मैरिया के लिए ख़ूब लड़े और प्रतिपक्षियों की सेना को अनेक बार हराया। निस्तार न देख कर प्रशिया के राजा ने मैरिया से सन्धि कर ली, जिसके द्वारा 'सिलेसिया' नामक सूबे का अधिकांश फ़्रेडरिक को मिल गया। लड़ाई अभी तक शान्त नहीं हुई थी। लड़ते लड़ते व्याकुल हो जाने पर १७४८ में ए स्थान पर सन्धि-पत्र लिखा गया। इसके अनुकूल मैरिया थेरेसा के दो सूबे जाते रहे। चार्ल्स सप्तम की मृत्यु होने पर मैरिया का पति फ़्रैंसिस प्रथम जर्मनी का महाराज हुआ, और गत महाराज के पुत्र मैक्स-मिलान को बवेरिया की निर्वाचकता फिर मिल गई। फ़्रैंसिस ने १७८० तक राज्य किया।

१८—प्रशिया और फ़्रेडरिक दि ग्रेट।

(१७४०—१७८६)

इस विषय का उल्लेख ऊपर हो चुका है कि ब्रैन्डेन वर्ग के निर्वाचक को महाराज लेओपल्ड ने 'प्रशिया के राजा' की उपाधि दे दी

थी। उसी काल से यह प्रशिया का राजवंश विख्यात हुआ। वर्तमान जर्मनी की छोटी छोटी रियासतों में प्रशिया के ही राजा सबसे बलवान् थे। शनैः शनैः ये लोग उन्नति करते चले आये। यहां की प्रजा बहुत प्रसन्न रहती थी। और राज्य प्रबन्ध बहुत अच्छा था। प्रशिया के फ़्रेडरिक तथा मैरिया थेरेसा से 'सिलेसिया' सूबे के विवाद के कारण तीन बार लड़ाई हुई। अन्त में तीसरी लड़ाई १७५६ से १७६३ तक हुई, इसमें इंगलैन्ड ने फ़्रेडरिक को अच्छी सहायता दी। प्रशिया के राजा ने जर्मनी के महाराज की बड़ी सेना को कई बार हराया, और उनका राज्य पूर्ववत् स्थिर रहा।

इस शताब्दी के प्रारम्भ में फ़्रेडरिक द्वितीय प्रशिया के राजाओं में बड़ा विख्यात हो गया है। अपने उत्तम उत्तम संशोधनों तथा अच्छे प्रवन्ध के कारण वह 'फ़्रेडरिक दि ग्रेट अर्थात् महान्' कहलाता था। समस्त जर्मनी में हाहाकार मचा हुआ था। कहीं दुर्भिक्ष था और महामारी से कहीं लोगों का संहार हो रहा था। ऐसा होते हुए भी प्रशिया में शान्ति विराजमान थी और प्रजा आनन्द कर रही थी। उस महान् फ़्रेडरिक तथा उसके चतुर मंत्री के कौशल के प्रताप से यहाँ 'रामराज्य' वीत रहा था।

फ़्रेडरिक ने आलुओं के बोने का प्रचार पूरे तौर से किया। वह स्वयं खेतिहरों को बीज बाँटता था। उसने सड़कें बनवाईं और नहरें खुदवा रक्खी थीं। इसके राज्य में शिक्षा का खूब प्रचार हो रहा था, पाठशालायें तैयार हो रही थीं, नये नये शहर बसाये जा रहे थे। प्रजा इसका बड़ा आदर करती थी। सब राजा लोगों के

साथ इसने मित्रता पैदा कर ली थी। बहुत बढ़िया प्रबन्ध करके इसने प्रशिया को फ़्रांस, इंगलैन्ड आदि के प्रायः समान कर दिया था। सेना-संगठन यहाँ का बड़ा अच्छा था। १७८६ में इस फ़्रेडरिक दि ग्रेट की मृत्यु हुई और इसका पुत्र राजा हुआ।

फ़्रेडरिक के मरने पर समस्त जर्मनी क्या प्रायः समग्र राज-मण्डल ने शोक मनाया। जर्मनी की शेष रियासतें प्रशिया को अपना आदर्श मान कर उन्नति की चेष्टा करने लगीं।

१६—महाराज जोज़फ़ और तत्कालीन साहित्य।

(१७६५—१७९०)

अब मैरिया थेरेसा का पुत्र जोज़ेफ़ राजसिंहासन पर बैठा। वह स्वभाव से सरल, निरभिमान और सर्वप्रिय था। इसने जर्मनी और आस्ट्रिया की १३ रियासतों पर एक ही राज-नियम द्वारा शासन किया। शिक्षाप्रणाली में इसने बड़ी उन्नति की। महन्त-समुदाय के लिए यह आज्ञा दी गई कि वे आलस्य में समय न बिता कर बालकों को पढ़ाया करें, व्याख्यान देवें और रोगियों की सेवा किया करें। पुस्तकालय और औषधालय खोले गये। बेल्जियम इसी काल से स्वाधीन हो गया। जोज़ेफ़ की मृत्यु के बाद उसका भाई 'टस्कनी का लेओपल्ड' राजा हुआ। इसने भी योग्यता के साथ राज्य में शान्ति स्थापित की।

साहित्य अब वास्तव में बड़ी उन्नति पर था। १७ वीं शताब्दी में बड़े बड़े गद्य लेखक हो गये हैं। 'एब्राहम सैंक्टा क्लैरा' आदि नामी लेखकों में से हैं। लेब्निज़ (१६४६—१७१६) नवीन दर्शन-शास्त्र का जन्मदाता आज तक विख्यात है। उल्फ़ (१६७९—१७५४) दार्शनिक विचारों का स्पष्टकर्त्ता था। वर्नेक, गंटर और ब्राक्स भी नामी ग्रन्थकार हो गये हैं।

१८ वीं शताब्दी में और भी विशेष साहित्योन्नति हुई। 'काल्पस्टाक' (१७२४—१८०३) उत्तम इतिहास-लेखक था। लेसिंग (१७२९—१७८१) ने अनुकरण करना छोड़कर नवीन विचारों के अनेक ग्रन्थ प्रस्तुत किये। उसकी मृत्यु के पूर्व ही दो और उत्कृष्ट लेखक सर्वोत्तम ग्रन्थों की रचना कर के अपने को अमर बना गये हैं। एक का नाम गेटी (१७४९—१८३२) और दूसरे का शिलर (१७५९—१८०५) था। गेटी की उपमा शेक्सपियर से दी जाती है। यह पैदाइसी कवि था। उपन्यास, नाटक, आख्यायिका, विज्ञान आदि सब विषयों पर इसने ग्रन्थ लिखे हैं। शिलर उत्तम कक्षा का नाटककार और कवि था। 'हम्बोल्ट' और 'रिटेर' भूगोल-विद्या पर लिख रहे थे। हर्डर और श्लेगेल उत्तम इतिहास-लेखक थे। श्लेगेल ने 'ओसानात्मक इतिहास' नामक अत्युत्तम पुस्तक लिखी है। हेगेल और कैंट आदि अपने नवीन विचारों की सहायता से जर्मनी के दर्शन-शास्त्र को उच्च-कक्षा का बना रहे थे। 'शापेनहावर' ने गेटी के समय में लिखा था और इसके दार्शनिक विचार हेगेल के समान थे। वेदान्त

शास्त्र को भी विद्वन्मण्डली बड़ी गवेषणा के साथ लिख रही थी। बीथोवेन, मोज़ार्ट आदि संगीतशास्त्र के उन्नायकों में विख्यात हैं।

२०—फ़्रांस में प्रजाकृत घोर विप्लव और नेपोलियन बोनापार्ट।

फ़्रांस देशवासियों के विचार अब दिन प्रति दिन स्वतंत्र हो रहे थे। प्रजा पर बहुत अधिक लगान निश्चित कर दिया गया था। यहाँ के रईस (Nobles) लोग सर्व साधारण के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार कर रहे थे। इस प्रकार सब तरह व्याकुल और पीड़ित हो कर प्रजादल ने स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने का बीड़ा उठाया। अपनी जान को तिनका के बराबर समझ ये लोग "स्वातंत्र्य", "समानता" और "भ्रातृत्व" (Liberty, Equality, Fraternity) चिल्लाते हुए स्वाधीन होने के लिए यत्नवान् हुए। वे स्वाधीनता के लिए बिलकुल पागल हो रहे थे। सरकार का बहुत अन्याय देख कर, वे लोग क्रोध से जल रहे थे। वह ज्वाला यहाँ तक अधिक हुई कि १७९८ में फ़्रांस के प्रजावर्ग ने घोर विप्लव उपस्थित कर दिया।

आस्ट्रिया के राजा का बहनोई लूई सोलहवाँ इस समय फ़्रांस का महाराज था। लुई ने प्रजा को शान्त करने के लिए अनेकानेक उपाय किये पर कुछ भी न हो सका। प्रजा उधर विप्लव कर रही

थी और इधर रईस लोग भी मनमाना काम करने में तत्पर थे। विप्लव यहाँ तक अधिकता को पहुँचा, कि १७९३ में बलवाइयों ने एक ओर से मार काट करना आरम्भ किया, और फ़्रांस के राजा लुई और उसकी रानी को पहले कुछ काल तक क़ैद में रख कर अन्त में फाँसी दे दी!

यह साहसपूर्ण घोर हत्याकाण्ड देख कर योरोप के समस्त राजा दंग रह गये। अब समग्र योरोपदेशीय राजमण्डल बलवाइयों पर बहुत नाराज़ होकर इस प्रचण्ड विप्लव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हुआ।

फ़्रैंसिस द्वितीय इस समय जर्मनी का महाराज था। यहाँ भी लड़ाई की तैयारियाँ हुईं। परन्तु आपस में मेल न होने के कारण जर्मनी बहुत निर्बल अवस्था में थी। अनेक जर्मन रईस और राजा विप्लवकारियों से मिले हुए थे। प्रशिया के राजा स्वयं उदासीन-भाव धारण किये हुए शान्त बैठे थे। फ़्रांस वाले लोगों की शक्ति रोज़ रोज़ अधिक हो रही थी। इन लोगों ने अँगरेज़ों को टूलून में हराया। अब प्रजावर्ग ने अपना एक उत्तम संगठन भी तैयार किया, और नेपोलियन बोनापार्ट इन सब का नेता हुआ। जर्मन महाराज की सेना इस समय बड़ी वीरता के साथ बलवाइयों को हरा रही थी। १७९७ में नेपोलियन ने आस्ट्रिया की सेना को हराया। आर्क डयूक चार्ल्स जर्मन सेना लिये हुए बड़े पराक्रम से बोनापार्ट के साथ लड़ रहा था। अन्त में जर्मन महाराज ने कैम्पो-फ़ोर्मियो की सन्धि के अनुकूल, १७९७ में, अपने दो सूबे देकर

नेपोलियन से वेनिस प्राप्त किया। बलवा वाले अब बड़ी उत्तेजित अवस्था में थे। अड़ोस पड़ोस के राज्यों पर ये धावा मारते और देशों को लूटते थे। अँगरेज़ों के साथ छेड़छाड़ करने के लिए इन लोगों ने मिसर देश पर आक्रमण किया, परन्तु वीर नेल्सन से हार कर लौट आना पड़ा। ये आस्ट्रिया पर भी बड़े सामान के साथ चढ़े, और वहाँ की सेना हरा दी। १८०१ में आस्ट्रिया को बलवाइयों के साथ लूनेवाइल में सन्धिपत्र लिखना पड़ा। इसके द्वारा आस्ट्रिया के अनेक सूबे जाते रहे और उसे बड़ी हानि हुई।

नेपोलियन प्रथम कक्षा का राजनीतिज्ञ और अत्यन्त चतुर तथा बड़ा पराक्रमी योद्धा था। केवल अपने नीतिबल के प्रताप से इसने अपने को शनैः शनैः फ़्रांस का महाराज बना लिया। इसके अलौकिक पराक्रम का हाल सुनकर सब दाँतों तले अँगुली दाबते थे, और योरोप की समस्त शक्तियाँ इसका नाम सुनकर काँपती थीं। कौशलपूर्वक नेपोलियन ने जर्मनी तथा अन्य स्थानों के कई राजा लोगों को अपने में मिला लिया था। प्रशिया के साथ भी इसने अब तक मैत्री कर रक्खी थी।

जर्मन महाराज द्वितीय फ़्रैंसिस की दशा बड़ी शोचनीय थी। वे जर्मन राजकुमार, जिनसे फ़्रैंसिस सहायता की प्रत्याशा रखता था, अब स्वदेश लाभ को छोड़ कर फ़्रांस वालों से मिल गये थे। कोई भी इसकी सहायता करने को तैयार न था। असहाय महाराज को लाचार होकर सन् १८०६ में अपना पद त्याग करना पड़ा। आज ही से हैप्सबर्ग वंश का शासन समाप्त हो गया। दो

वर्ष पूर्व फ़्रैंसिस ने 'आस्ट्रिया के महाराज' की पदवी धारण कर ली थी। वह अब भी हैप्सवर्ग के राजवंश को प्राप्त है।

नेपोलियन अब तक प्रशिया के राजा के साथ मैत्री माने हुए वैठा था, परन्तु दाँव देखकर उसने प्रशिया को भी अपने अधिकार में कर लेने का प्रवन्ध शुरू किया। अब प्रशिया-राज को चेत आया, परन्तु स्वदेश की हानि करते हुए शत्रु के साथ मित्रता क़ायम रखने का प्रत्यक्ष फल मिलने ही वाला था। वोनापार्ट ने इन लोगों पर हमला किया और इन्हें पराजित किया। प्रशिया का वहुत सा हिस्सा नेपोलियन ने अपने शासन में कर लिया। इसने १८०९ में फिर आस्ट्रिया को हरा कर उसके अनेक सूवे छीन लिये।

२१—नेपोलियन का पतन।

जर्मनी की घोर दुर्दशा देखकर टिराल ताल्लुके के देश-भक्तों ने जर्मनी के पक्ष में संग्राम करने का सङ्कल्प किया। लाखों खेतिहर हथियार ले लेकर लड़ने को तैयार हो गये। इन लोगों ने वलवाइयों को अनेक वार हराया। आर्कड्यूक चार्ल्स वोहेमिया में विद्रोहकारियों के साथ घोर संग्राम कर रहा था। उधर नेपोलियन विजय-पताका फहराते हुए वाइना तक पहुँच गया। समस्त आस्ट्रिया में इस समय वड़ी अशान्ति फैली हुई थी और यह राज्य वड़ी निर्वल अवस्था को प्राप्त था। इस कारण टिराल के देशभक्तों के वहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिली और उन्हें हारना पड़ा।

इस समय नेपोलियन का भाग्यसूर्य खूब चमक रहा था। आस्ट्रिया और प्रशिया अब इसी के शासन में थे। परन्तु अब वह सूर्य पराकाष्ठा को पहुँच कर शीघ्र ही अस्ताचल की ओर खिसकने वाला था। रूस महाराज अलेक्ज़ेण्डर से झगड़ा हो पड़ने के कारण बोनापार्ट ने मास्को (रूस की पुरानी राजधानी) पर हमला करने के लिए प्रस्थान किया। सफलता दूर ही रही, दुर्दैव ने नेपोलियन को इस काल से ऐसा विकट धक्का दिया कि वह फिर न सँभल सका। उसका गौरव आज से कम होने लगा। उधर रूस के आक्रमण में बोनापार्ट की सेना का अधिकांश रास्ते में नष्ट हो गया था, और इधर जर्मनी की सब रियासतें, विशेषतया प्रशिया, अनेक अपमान सह कर अब स्वदेश का उद्धार करने को कटिबद्ध हुईं। बालक, युवक और बुड्ढे समस्त प्रजावर्ग अपने प्यारे देश के प्रेम से प्रोत्साहित होकर समरभूमि में आ खड़े हुए और अपनी जन्मभूमि का उद्धार करने के लिए प्राण भी देने को तैयार थे। इंगलैंड और रूस ने भी जर्मनी को सहायता दी। शनैः शनैः बड़ी भारी सेना एकत्र हो गई। वीर ब्लूचर और राजकुमार श्वार्ज़ेनबर्ग इस सेना के नेता थे। बड़ी चतुराई के साथ इन लोगों ने फ़्रांस वालों से युद्ध करना आरम्भ किया। 'वालवक्र' नामक स्थान में ब्लूचर ने अपने शत्रुओं को बड़ी करारी हार दी।

पराजित होने के कारण अब नेपोलियन की सेना घबरा रही थी। अनेक राजा लोग, जो पहले बोनापार्ट के मित्र थे, शनैः शनैः साथ छोड़ रहे थे। इसके अनुयायी दल में परस्पर विरोध होना शुरू

हो गया। सैनिकों में न तो वह प्रोत्साहन देख पड़ता था और न वह पराक्रम ही था जिसके प्रताप से समस्त संसार नेपोलियन के नाम पर थर्रा रहा था। बवेरिया ने बोनापार्ट को जवाब दे दिया और वह भी अपनी जन्मभूमि के लिए समर करने को प्रस्तुत हुई।

१६ अक्टूबर १८१३ से प्रारम्भ होकर बराबर तीन दिन जर्मन-महासेना फ़्रांस वालों से लिपज़िक स्थान पर लड़ती रही। यह घोर संग्राम आज तक अपने प्रचण्ड रूप के लिए विख्यात है। अन्त में नेपोलियन को बड़ी करारी पराजय मिली। उसके ७८,००० सैनिक इसमें मरे और ३०० तोपों से उसे हाथ धोना पड़ा। यह विजय रूस, इंगलैंड तथा जर्मनी की विशाल संयुक्त सेना का गौरव सर्वदा बढ़ाती रहेगी। फ़्रांस-वासियों के शासन से आज जर्मन देश मुक्त हो गया। उसकी जीत का डंका बज रहा था। समस्त प्रजा ख़ुशी मना रही थी और सब स्थान में हर्ष की धूम थी।

योरोप के राजा लोग अब भी यह चाहते थे कि यदि नेपोलियन सन्धि करने पर राज़ी हो तो फ़्रांस का थोड़ा बहुत हिस्सा उसे देकर झगड़ा शान्त किया जावे, परन्तु बोनापार्ट के स्पष्ट इन्कार करने पर फिर युद्ध आरम्भ हुआ। जर्मन और अँगरेज़ी सेना-मण्डल के अधिपति ब्लूचर और वेलिंगटन अपनी विजयपताका फहराते, मारते काटते, पेरिस जा पहुँचे और नेपोलियन को गद्दी से उतार उसे 'एल्बा' द्वीप में क़ैद करके भेज दिया और गत लुई १६ के भाई का राज्याभिषेक किया गया। शीघ्र ही १८१५ में एल्बा से भागकर नेपोलियन ने फिर फ़्रांस पर छापा मारा और अपने को

राजा बना लिया। इधर ब्लूचर और वैलिंगटन अपनी महासेना लिये हुए तैयार थे। संग्राम शुरू हुआ। इन लोगों ने जगद्विख्यात 'वाटर्लू' के प्रचण्ड युद्ध में बोनापार्ट को हरा कर सदा के लिए झगड़ा शान्त किया। १६ जून १८१५ को वाटर्लू युद्ध के उपरान्त वह सेंट हेलेना टापू में क़ैद कर दिया गया और अब सब राज-समुदाय निर्भय होकर निश्चिन्त हो बैठा।

लुई १८ को फ़्रांस का राज्य मिला। इसी समय पेरिस की द्वितीय सन्धि सब राजा लोगों के बीच लिखी गई। राइन नदी के पश्चिम ओर का भाग जर्मनी को लौटा मिला। फ्रांस को करोड़ों रुपया जर्मनदेश के लिए हर्जाना (Indemnity) देना पड़ा। कुछ काल बाद वायना की महासभा में राजसमूह एकत्र हुआ। इसने लम्बार्डी, वेनिस, टिराल आदि के सूबे आस्ट्रिया को वापस दे दिये।

२२—स्वतंत्रता के लिए जर्मन देश की चेष्टा।

इस समय यहाँ शासक-राज-समुदाय अत्यन्त प्रबल था। संशोधन के बाद वाली ३० वर्ष की लड़ाई में छोटे रईसों के नष्ट हो जाने पर बड़े राजा लोगों ने अपने अपने अधिकारों को बढ़ा लिया था और अब वे अपनी प्रजा की ओर पूरा ध्यान नहीं देते थे। प्रजावर्ग का राज्यस्वत्व कम हो चला था और पूर्णाधिकार शासक-मण्डली के हाथ में था। १८१५ के उपरान्त रूस के महाराज अले-क्ज़ेण्डर, आस्ट्रिया के फ़्रैंसिस और प्रशिया के फ़्रेडरिक ने आपस में एक पवित्र अभिसन्धि (The Holy Alliance) की। इसके द्वारा

उन्होंने न्याय के साथ नियमपूर्वक प्रजापालन करने की प्रतिज्ञा की। धीरे धीरे ये लोग सर्व-साधारण के साथ यथेष्ट व्यवहार करने लगे और प्रजा राज्यकार्य्यों से अलग रक्खी जाती थी। इधर प्रजा वर्ग को स्वत्व खो बैठने का भय हुआ। ये लोग डरते थे कि कहीं राज्य में योग देने की प्रथा उनके हाथ से जाती न रहे। प्रजास्वत्व जर्मनदेश में परम्परागत था और सोलहवीं शताब्दी तक वे पूर्णतया सम्मति दे सकते थे। तदनन्तर २०० वर्ष में समय ने पलटा खाकर राजाओं की शक्ति बढ़ा के सर्व साधारण को निर्बल कर दिया। फ़्रांस-विप्लव ने इन लोगों के नेत्र खोल दिये। वे अपनी हानि को देखने लगे और अब फिर उस हक़ को प्राप्त करने के लिए सचेष्ट हुए। उनकी इच्छा यह कदापि न थी कि राजा लोगों को बाहर निकाल कर जर्मनी में प्रजासत्तात्मक शासन स्थापित करें। वरन उसी राज-समुदाय की उन्नति चाहते हुए एक 'नियमित शासन' (Constitutional Government) को उत्पन्न करने वाले थे जिसमें उन्हें स्वयं योग देने का अधिकार मिले और वह अपने देश की उन्नति कर सकें।

इस सिद्धान्त को हाथ में लेकर, अनेक अग्रगण्य प्रजावर्गीय विद्वानों ने आन्दोलन करना शुरू किया। वे अपने उत्तम उत्तम व्याख्यानों से सर्वसाधारण को प्रोत्साहित करते थे। वे लोग विप्लव उपस्थित करना एक दम नापसन्द करते और राजगण से अपने 'हक़' पाने के लिए प्रार्थना करते थे। पहले राजा लोगों ने उनकी बात मानने की प्रतिज्ञा की। परन्तु कालान्तर में वे आनाकानी करने लगे।

निदान प्रजावर्ग ने श्रौर भी प्रबल रूप धारण किया श्रौर शनैः शनैः राजा लोगों ने इनकी योग्यता देख कर इन्हें स्वत्व देना शुरू किया।

वे एक ऐसी महती विचार-सभा का संस्थापन चाहते थे, जिस में उनके प्रतिनिधि पूरे तौर से सम्मति दे सकें। उनकी इच्छा थी कि शासन-सम्बन्धी काम गुप्त रीति से न किया जावे। वे शासन को एक प्रकार का संगठन देने की अभिलाष करते थे। उन लोगों ने अनेकानेक प्रयत्न किये। किन्तु अभी प्रजावर्ग को थोड़े दिन तक श्रौर भी प्रतीक्षा करनी पड़ी।

पूर्ण ऐक्य न होने के कारण इन्हें सफलता न मिल सकी। अनेक रियासतों ने प्रजा की बात मान कर कार्य्य करना प्रारम्भ किया। श्रास्ट्रिया श्रौर प्रशिया इस बात के लिए अब भी नहीं राज़ी थीं।

इस आन्दोलन का फल रूप ज़ाल-वेरेन (Zollverein) अथवा चुंगी-समितियों का एका होना सदा विख्यात रहेगा। अभी तक यह रीति थी कि यदि जर्मनी के एक ताल्लुके या रियासत से कोई माल दूसरी जगह जाता तो उन स्थानों में न्यारी न्यारी चुंगी देनी पड़ती थी। इस कारण व्यापार को बड़ा आघात पहुँचता था श्रौर उसकी उन्नति में अनेक विघ्न होते थे। अतएव जर्मनी की अनेक रियासतों ने इस विषय में ऐक्य स्थापन कर लिया, पर श्रास्ट्रिया इस बात पर न तैयार हुई।

१८२७ में इंग्लैंड के विलियम चतुर्थ की मृत्यु हुई। अभी तक अँगरेज़ों के राजा, जार्ज प्रथम से उपरान्त, हनोवर के निर्वाचक (Electors of Hanover) कहलाते थे, परन्तु १८३७ में वह पद

विलियन चतुर्थ के भाई अर्नेस्ट आगस्टस को मिल गया और इन लोगों के हाथ से जाता रहा।

२३—सन् १८४८ का फ़्रांस देशीय विप्लव।

१८४८ के कुछ पूर्व लुई फ़िलिप फ़्रांस के सिंहासन पर बैठ चुका था। इसने यह स्वीकार कर लिया था कि मैं गद्दी बैठने पर प्रजा-तन्त्र शासन करूँगा। लोग इस बात की प्रत्याशा करते रहे परन्तु फ़िलिप अपने वंश वालों की भलाई में तत्पर था। इसने प्रजा को शासन-स्वत्व देने के लिए कुछ भी चिन्ता न की। फ़्रांस देश की प्रजा ने यह देख कर कि उनकी आशा दुराशा मात्र है, घोर आन्दोलन मचाना आरम्भ करके शनैः शनैः फिर एक विकट विप्लव उपस्थित कर दिया। फ़िलिप को इंगलैंड भागना पड़ा और यहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य (Republic) स्थापित हुआ, जिसका पहला सभापति महाराज नेपोलियन निर्वाचित हुआ।

इस १८४८ के विप्लव का प्रभाव समस्त योरोप पर पड़ा। विशेषतया जर्मन देश के स्वतन्त्र विचारों को इससे बड़ी सहायता मिली। जर्मनी की समस्त प्रजा ने आन्दोलन शुरू किया और यह चार बातें अपने अपने राजाओं से स्वत्व-प्रतिपादन-पूर्वक माँगने लगे। (१) छापेख़ाने तथा व्याख्यान की स्वतंत्रता अर्थात् जिस मनुष्य की जो कुछ आलोचना करने की इच्छा हो, वह उसे व्याख्यान देकर अथवा छाप कर प्रकट कर सके। (२) सब लोगों को हथियार बाँधने की आज्ञा दी जावे और सब जहाँ चाहें वहाँ

राजनैतिक या और मामलों के लिए सभा कर सकें। (३) प्रकट रूप से अपराधियों के मुक़द्दमे किये जावें और पंचों (jury) की नियुक्ति हो। (४) प्रजा भी रियासत के प्रबन्ध के लिए महासभा (Parliament) में अपने प्रतिनिधि भेज सके।

अनेक रियासतों ने भयभीत होकर सब बातें मान लीं, परन्तु आस्ट्रिया और प्रशिया अब भी ऐसा करने के लिए तैयार न थीं। यह देख कर लोगों का क्रोध और भी बढ़ा और वे हथियार बाँध बाँध के संग्राम करने को सन्नद्ध हुए। वायना और बरलिन में बलवा शुरू हो गया। इस आन्दोलन को फ़ौज ने शान्त किया। तब भी महाराज फ़र्डीनेंड को राजधानी (वायना) छोड़ भाग जना पड़ा। संशोधनों के लिए प्रतिज्ञा करा के, लोगों ने फ़र्डीनेंड के भतीजे फ़्रैंसिस जोज़ेफ़ को महाराज बनाया। यहाँ बरलिन में भी ख़ूब लड़ाई हुई और अन्त में संगठन (Constitution) तैयार करने का वचन देने पर युद्ध शांत हुआ।

जर्मन वासियों की यह इच्छा थी कि एक जातीय विचार-सभा (National Parliament) ज़रूर खोल दी जावे और जन्मभूमि के सब प्राचीन शासन-संगठनों में सुधार किया जावे। फ़्रैंक्फ़र्ट नामक स्थान पर ६०० प्रजा-प्रतिनिधि शासन-विषयक प्राथमिक कार्रवाई निश्चित करने के लिए एकत्र हुए। इन लोगों ने जातीय सभा का निर्वाचन करके आस्ट्रिया के आर्कड्यक जान को अपना सभापति और संरक्षक बनाया। बाद को यह तै किया गया कि देश के लिए नये सिरे से क़ानून तैयार हो और जर्मन महा-

राज्य में एक सांहतिक समिति रहे, जिस में केवल एक दल (House) माना जावेगा। प्रशिया के राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ को इन लोगों ने अपना महाराज निर्वाचित किया। यह जान कर कि लोगों ने विचार-सभा में केवल एक सर्वसाधारण का दल (House of Commons) ठीक किया है, उसने महाराज-पद अस्वीकार करते हुए यह रूखा उत्तर दिया कि मुझे भय है कि यहाँ के लोग यह भूल गये हैं कि जर्मनी में भी रईस और राजकुमार (Nobles and Princes) वर्तमान हैं, और मैं उनमें से एक हूँ। इस बात पर जर्मनी भर में बड़ा कोलाहल मचा। विशेषतया दक्षिण के किसान लोग लड़ने को तैयार हो गये। विद्यार्थी दल छापेख़ाने की स्वतंत्रता के लिए चिल्ला रहा था। फ़ौज ने फिर इन सब को ठिकाने किया। १८५१ में जर्मनी के राजा लोगों ने अपनी सांहतिक सभा (Federal Body) को नियुक्त कर दिया और इस कारण कुछ काल के लिए संतोषजनक सुधार-विषयक जर्मन-प्रजा की प्रत्याशा जाती रही। यद्यपि इन सब आन्दोलनों का पूरा फल प्रजा के हस्तगत न हो सका तो भी पहले की अपेक्षा बहुत विशेष स्वातंत्र्य उन लोगों को मिल गया था। इस समय सरकार ही की जीत रही और प्रजा का मनोरथ न सिद्ध हो सका। कारण कि यथोचित एकता उनमें अभी तक नहीं आई थी।

२४—विलियम प्रथम और राजकुमार बिस्मार्क

(१८६०—१८८८)

बहुत काल पहले से अपने उत्तम प्रबन्ध और उचित प्रजा-पालन के कारण प्रशिया दिन प्रति दिन उन्नति कर रही थी। आज कल प्रशिया जर्मनी की समस्त रियासतों में श्रेष्ठ और शक्ति सम्पन्न थी। देश के राजनैतिक मामलों और शासन-सम्बन्धी विचारों में यही अग्रसर थी। इसके प्रचलित किये हुए क़ानून अन्य जर्मन राजा प्रसन्नता पूर्वक मानते और मन से इसका अनुकरण करते थे। अब फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ की मृत्यु होने पर १८६१ में उसका पुत्र विलियम प्रथम प्रशिया की गद्दी पर बैठा। राज्य पर बैठते ही, उसने अनुभवशील और नीति-कुशल राजकुमार बिस्मार्क को १८६२ में अपना महामंत्री बनाया। यह सुचतुर राजनैतिक वीर आज तक आदर्श मनुष्य माना जा रहा है। इसके पूर्व यह फ़्रांस और रूस में राजदूत रह चुका था और इस समय इसकी राजनैतिक योग्यता प्रौढ़ता को पहुँची हुई थी। अब अत्यन्त कार्य्यकुशल राजा और महा मंत्री को प्राप्त करके, प्रशिया ने स्थिरता के साथ उन्नति के शिखर पर चढ़ना प्रारम्भ किया। आज कल प्रशिया की प्रत्येक कार्य्यवाही, प्रत्येक क़ानून का प्रचार, उसके चतुर कार्य्यकर्ताओं की योग्यता का परिचय देता था। यह बिस्मार्क ही के प्रशंनीय परिश्रम और उसके अप्रमेय चातुर्य्य का फल था कि थोड़े काल बाद प्रशिया के राजा को समस्त जर्मनी ने अपना महाराज बनाया।

प्रतिनिधि सभा (Representative Chamber) में इस समय सामरिक संशोधन (Military Reform) के लिए बड़ा विवाद हो रहा था। प्रतिनिधि-समूह संशोधन अस्वीकार करता था। अन्त में बिस्मार्क ने यह मामला हाथ में लेकर वह क़ानून सर्व स्वीकृत करा दिया। यहाँ रेल, डाक, तथा तार-विभागों की अच्छी उन्नति हो रही थी।

शेलसविग और हालस्टन नामक दो ताल्लुक़े बहुत समय से डेनमार्क के राजा के हाथ में चले आ रहे थे। वहाँ के रहने वाले जर्मन और डेन लोगों से सदा झगड़ा होता रहता था। १८६३ में डेनमार्क-राजा के बिना सन्तान मरने पर क्रिश्चियन दशम वहाँ का राजा हुआ। प्रशिया के राजा यह न चाहते थे कि उपर्युक्त दो ताल्लुक़े अब भी डेनमार्क में शामिल रहें। इस कारण १८६४ में डेन लोगों के साथ लड़ाई शुरू हुई। आस्ट्रिया ने प्रशिया को सहायता दी। बराबर एक साल तक लड़ने के बाद डेन लोगों ने हार मानी और हालस्टन तथा शेलसविग उनके पास से जाते रहे।

यह जान कर कि प्रशिया वे दोनों ताल्लुक़े अपनी ही रियासत में मिला लेना चाहती है, आस्ट्रिया लड़ने को तैयार हुई। प्रशिया को इटली और आस्ट्रिया को बवेरिया, वर्टेम्बर्ग और बेडेन सहायता देने के लिए कटिबद्ध हुए। प्रशिया वालों ने अपनी सेना के तीन विभाग करके आस्ट्रिया की सेना को घेरना शुरू किया। अनेक स्थानों पर लड़ते हुए अन्त में कवेनिदग्रट्ज़ या साडोवा स्थान पर दोनों दल एकत्र हुए। यहाँ पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। सेनापति के अयोग्य और

तोपों की कमी होने के कारण आस्ट्रिया वालों को यहाँ हारना पड़ा। प्रशिया के लोगों ने इधर वायना तक धावा मारा और १८६६ में आस्ट्रिया के महाराज फ्रैंसिस जोज़ेफ़ को सन्धिपत्र लिख देना पड़ा।

सन्धि करने के समय बिसार्क सिवाय अपने लाभ के और किसी बात की परवा नहीं करते थे। उन्हें अपयश का भय नाम मात्र नहीं होता था। उन्हें अपने फ़ायदे से काम था। कुछ कारणों से हैनोवर और हेसे-कासेल से भी युद्ध ठन गया। इनको भी प्रशिया ने हरा दिया। १८६६ में प्रेग के सन्धिपत्र से प्रशिया को अतिशय गौरव प्राप्त हुआ। अब जर्मनी की संहति तोड़ दी गई। हैनोवर,हेसेकासेल, नासो, शेलसविग और हाल्सटन ये सब ताल्लुके प्रशिया की रियासत में मिला दिये गये। विरोध करने के कारण वर्टेम्बर्ग और बेडेन को बहुत सी भूमि तथा हर्जाना और ऐसे ही आस्ट्रिया को बहुत रुपया प्रशिया के लिए देना पड़ा।

आस्ट्रिया को पृथक् राज्य बना के जर्मनी के दो भाग किये गये। एक संहति (Federation) उत्तर जर्मनी में तैयार हुई और ऐसे ही दक्षिण में भी एक संहति बनी। प्रशिया राज्य के बहुत शक्ति-सम्पन्न होने से उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई नहीं बोल सकता था और उत्तर तथा दक्षिण की भावी एकता के लिए सब मसाला तैयार था।

२५—फ्रांस देश से भयानक संग्राम।

(१८७०—१८७१)

स्पेन का सिंहासन ख़ाली होने के कारण, जर्मन-राज-कुमार, ('होहेनज़ालर्न' सूबे के) लेओपल्ड के वहाँ गद्दी पर बैठने की गरम चर्चा उठी। यह देख कर कि जर्मन-राज-कुमार स्पेन का राजा होगा, फ़्रांस ने भयभीत होकर जर्मनी के साथ घोर संग्राम की चेष्टा की।

प्रशिया-राज विलियम ने उत्तरीय सांहतिक समिति (North Federal Council) की सम्मति से लड़ाई का सामान इकट्ठा करना आरम्भ किया। तुरन्त ही उत्तर और दक्षिण की समस्त रियासतों के प्रतिनिधि राजकीय महासभा (Royal Diet) में एकत्र हुए, और सब लोगों ने प्रशिया की पूरी सहायता करने का निश्चय किया। फ़्रांस के राजा नेपोलियन को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे यह पूरा विश्वास था कि दक्षिण-जर्मनी के लोग लड़ने को कदापि न तैयार होंगे और उदासीनभाव रक्खेंगे। अब जर्मन-सेना फ़्रांस वालों के दल से कहीं बढ़ कर थी।

फ़्रांस के लोग सदा आक्रमण करने में अग्रसर रहा करते थे। इस समय न तो उनके यहाँ सेना और न लड़ाई का सामान ही तैयार था। उन लोगों ने बिना तैयारी किये लड़ाई का डंका पीट दिया था। सीमा प्रान्त तक फ़्रांस-सेना आचुकी थी, किन्तु गोला, बारूद बहुत कम साथ में था व्यवस्था यह थी कि मेज़ में १,५०,००० सैनिक नियत किये जावेंगे। स्ट्रासबर्ग में १,००,०००

और शैलांस में ५०,००० । अब मेंज़ और स्ट्रासवर्ग की सेना को आगे बढ़ते हुए फ़्रैङ्क फ़र्ट में मिल कर उत्तरीय जर्मन सेना से युद्ध करने की सम्मति हुई, और विजय प्राप्त होने पर यह आशा की थी कि दक्षिण-जर्मनी और आस्ट्रिया ज़रूर सहायता देंगे। इन मनमोदकों से फ़्रांस वालों ने अपना चित्त खूब प्रसन्न कर लिया था, परन्तु वास्तविक प्रबन्ध कुछ भी न था । सैनिक लोग शिथिल बैठे हुए रेल गाड़ी का रास्ता देखा किये। इसी प्रकार एक पखवारा व्यतीत हुआ ।

यहाँ जर्मनी में बड़ी चतुरता और तीव्रता के साथ सब सेना सीमा पर एकत्र होकर फ़्रांस वालों से लड़ने के लिए पूर्णतया तैयार थी । जर्मन-सेना की तीन शाखायें थीं। सेनापति स्टीन मेज़ के आधिपत्य वाली शाखा दाहिनी ओर नियुक्त थी राज-कुमार फ़्रेडरिक चार्ल्स के सेना पतित्व में सैनिक लोग रेन (Rhen) स्थान पर थे और प्रशिया के युवराज के नेतृत्व में एक दल 'राइन' के दाहिने किनारे पर स्थित था । ये सब सैनिक मिल कर ४,४७,००० संख्या में थे । यह सेना सीमा पर पड़ी हुई थी। यहाँ जर्मनी में १,८८,००० सेना आवश्यकता के लिए रोक रक्खी गई थी और उसके बाद फिर २,२६,००० सिपाही काम पड़ने पर आ मिलने के लिए तैयार थे ।

अगस्त १८७० से संग्राम होना आरम्भ हुआ । जर्मनी की सेना आगे बढ़ी इन लोगों का अभिप्राय यह था कि अलग अलग लड़ते हुए अन्त में सब एक स्थान पर एकत्र हो जावें । प्रशिया के युवराज

अपनी सेना आगे बढ़ाते गये और 'वर्थ' में अपने विपक्षियों को हराया। दो शेष शाखाओं ने मिल के 'पिस्केरेन' स्थान पर फ़्रांस वालों को पराजित किया। इन लोगों ने तार और रेल की पटरियों को हटा दिया, जिससे अधिक फ़्रेंच सेना अब नहीं आ सकती थी। यहाँ स्टीनमेंज़ के नेतृत्व वाली फ़्रांसदेशीय सेना 'मेज़' के पूर्व में थी। नेपोलियन ने हुक्म दिया कि मेज़ वाली सेना शैलान्स के लोगों से आ मिले और मेज़ का क़िला बचाने के लिए कुछ सिपाही वहाँ छोड़ दिये जावें। फ़्रांस के सिपाहियों को हटते हुए देख कर जर्मन-सेना के कोलम्बे स्थान में उन पर हमला करके विजय प्राप्त किया। जर्मन लोगों ने आगे बढ़ कर 'ग्रेवेलट' स्थान पर अपना अधिकार किया।

फ़्रांस वालों की सेना पीछे हटती हुई 'मेज़' ही में एकत्र हो रही थी, इधर जर्मन लोग चारों ओर से रास्ता रोकते हुए समस्त फ़्रेंच सेना को 'मेज़' में घेर लेने वाले थे। शनैः शनैः विपक्षियों को भागते हुए 'मेज़' स्थान में ही बन्द होना पड़ा। जर्मन लोगों ने चट से एक शाखा और अपनी सेना में तैयार की। पहली और दूसरी शाखा 'मेज़' को घेरे पड़ी रही और शेष दो 'शैलान्स' की शत्रुओं से लड़ने के लिए रवाना हुईं। शैलान्स की सेना कुछ पूर्व मेज़ वालों को छुड़ाने के लिए चल चुकी थी। जर्मन-सेना को यह बात मालूम हो गई और उन लोगों ने उसे भी घेर कर 'सेडान' नामक नगर में रोक दिया। महाराज नेपोलियन यहाँ मौजूद था। उसने सुलह करने की बात उठाई। नेपोलियन क़ैद कर

लिया गया। सेडान में जो कुछ लड़ाई का सामान था, जर्मनी के हाथ आया। ५० सेनापति, ५००० अफ़सर, ८३,००० सैनिक, ५५८ तोपें और ६०० घोड़े जर्मन लोगों को मिले। कुछ काल बाद 'मेज़' की सेना ने भी अधीनता स्वीकार की। यहाँ पर जर्मन-देश-वासियों को हज़ारों तोपें और घोड़े मिले।

इस प्रकार बड़े कौशल के साथ फ़्रांस-वासी सम्यक्तया पराजित किये गये। २४ फ़र्वरी १८७१ में सन्धि पत्र हो गया और यह भयङ्कर संग्राम समाप्त हुआ। एलसास का सूबा, 'मेज़' और लोरेन फ़्रांस ने जर्मनी को दे दिया। फ़्रांस को बहुत सा रुपया हर्जाने (Indemnity) में देना पड़ा। इस रुपया के अदा होने के समय तक जर्मनी ने पेरिस के पास वाले अनेक क़िले अपने अधिकार में रक्खे। १० मई १८७१ में फ़्रैङ्कफ़र्ट स्थान पर इस सन्धि की पुष्टि की गई।

२६—नवीन जर्मन-महाराज्य।

(१८७१)

असंख्य विपत्तियों को सहन करने के उपरान्त, अनेक कष्टों को झेल कर, और न जाने कितना ख़ून ख़राबा कर के, अब जर्मनी ने 'एकता' का पाठ सीखा। उत्तर और दक्षिण जर्मनी अब 'एक' हो गये। घृणा उत्पन्न करने वाला आपस का अन्तर अब नष्ट हो गया और प्रत्येक जर्मन वासी का हृदय अपने स्वदेशी भाइयों की ओर प्रेम की उमंगे लेने लगा। जहाँ देखो वहाँ जर्मनी की उन्नति

और जन्मभूमि के लाभ के लिए पारस्परिक ऐक्य वर्तमान था। क्या समाज, क्या साहित्य और क्या सरकार किसी विषय के सारांश का मन्थन करने के लिए बहुधा जो पारस्परिक विवाद प्रतीत होता है, उससे स्वदेश के सार्वलौकिक हित को क्षति पहुँचाना आवश्यक नहीं है, प्रत्युत हानि के बदले चातुर्य्य के साथ काम कराने से लाभ अवश्यमेव होगा।

जर्मनी की अनेक रियासतों ने आपस में सलाह कर के प्रशिया के राजा को अपना महाराज बनाना स्थिर किया। तदनुकूल १ जनवरी १८७१ को रियासतों के प्रतिनिधि वर्ग ने विलियम प्रथम को 'महाराज' कह कर अभिवन्दन किया। इसी समय से निश्चित किया हुआ २६ रियासतों वाला जर्मन महाराज्य का संगठन अब भी प्रचलित है। उन सब पर प्रशिया की देख रेख रहती है।

महाराज्य के प्रबन्ध पर विचार करने के लिए बरलिनराजधनी में दो महासभाओं की बैठक होती हैं। जिस सभा में रियासतों के मामले पेश होते हैं और राज्य-प्रतिनिधि एकत्र होते हैं उसको बुंडेस्रैथ (Bundesrath) कहते हैं। दूसरी सभा में जर्मन प्रजा अपने प्रतिनिधि भेजती है, और इस में देशसम्बन्धी क़ानून आदि सार्वजनिक विचार पेश किये जाते हैं। बुंडेस्रैथ के अनेक पदाधिकारी और प्रतिनिधि इस में भी स्थान पाते हैं। इस महासभा का नाम 'राइस्टाग' (Reichstag) है। प्रशिया के महाराज राइस्टाग के स्थायी सभापति हैं। शासन-सम्बन्धी अधिकांश काम बुंडेस्रैथ के हाथ में है, परन्तु सार्वलौकिक विचारों में उसे राइस्टाग की सम्मति

लेना आवश्यक होता है। जल तथा स्थल सेना पर महाराज प्रशिया का अधिकार है। राज्य के सब काम सांहतिक समिति की अनुमति से होते हैं। बवेरिया और वर्टेम्बर्ग, अपना शासन-कार्य्य, रेल, तार, डाक, सेना आदि स्वयं देखते हैं। राइस्टाग में एक ही जन-समुदाय (House) रक्खा गया है। इन सभाओं की बैठक प्रति वर्ष हुआ करती है।

प्रशिया की एक न्यारी विचार-सभा है। १८७१ में महाराज्य की महासभा की प्रथम बैठक हुई; प्रबन्ध-प्रणाली प्रायः वही स्थिर रही, क्योंकि विशेष परिवर्तन की आवश्यकता नहीं देखी गई।

विदेश-नीति (Foreign Policy)। बिस्मार्क ने विदेशी शक्तियों से मैत्री भाव करना आरम्भ किया। इंग्लैंड, इटली, आस्ट्रिया और रूस के साथ मित्रता के सन्धिपत्र हुए। रूस और आस्ट्रिया के महाराज ने बरलिन में आ कर अपनी मित्रता और प्रेम का परिचय दिया। जर्मन-महाराज इटली को गये और वहाँ के राजा विक्टर इम्मेनुयेल ने भी बरलिन में आकर महाराज की अभ्यर्थना स्वीकार की। सब के साथ मैत्री करके बिस्मार्क ने फ़्रांस को अकेला छोड़ दिया, ताकि वह जर्मनी के विरुद्ध कुछ न कर सके।

गृह्य-नीति (Home Policy)। रियासतों तथा प्रशिया के महन्त-समुदाय में बहुत काल से विवाद चला आ रहा था। इसका फ़ैसला करने में आज कल बिस्मार्क तत्पर था। १८७२ में 'जेसुइट' (एक कट्टर ईसाई दल) लोग राज्य के बाहर

निकाले जाने लगे और शीघ्र ही एक क़ानून 'मे ला' (May Law) नामक प्रचलित किया गया जिसके अनुकूल प्रत्येक महन्त को व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक था और बिना राज-पदाधिकारियों की आज्ञा के उनकी नियुक्ति नहीं हो सकती थी।

—:o:—

२७—जर्मनी के तत्कालीन राजनैतिक दल।

सोशलिस्टपार्टी (सामाजिक-समुदाय), ये लोग फ़र्डीनेंड लासेल के अनुयायी थे। १८६२ से इस मत का प्रारम्भ हुआ। अपनी व्याख्यान-शक्ति के प्रताप से लासेल ने समस्त जर्मनी में आन्दोलन मचा दिया। इन लोगों का सिद्धान्त यह है कि असहाय, निर्धन लोगों को कष्ट सहने की कोई ज़रूरत नहीं। अमीर आदमियों की सब सम्पत्ति लेकर प्रजा में बराबर बांट देने से सब की आपत्तियों का निवारण होगा। लाखों मनुष्य यह मत मान कर इसे कार्य्यपरिणत करने के लिए पागल हो रहे थे। लासेल की मृत्यु के बाद उसके अनुयायियों ने इसी विषय पर व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। धीरे धीरे यह सिद्धान्त सभ्य-समाज में फैलने लगा। ये लोग बड़े निडर हो रहे थे। दो एक बार महाराज का प्राण-संहार करने के लिए इन लोगों ने प्रयास किया, परन्तु दाव ख़ाली गया। इस बात पर बड़ा गड़ बड़ हुआ। १८७८ में बिस्मार्क ने एक क़ानून से पुलीस और फ़ौज की शक्ति बढ़ा कर इन लोगों को क़ाबू में करने का प्रयत्न किया।

लिबरलदल (उदारदल) वालों ने इसी समय से अपना प्रकट रूप धारण किया। ये लोग इस बात के प्रयत्न में थे कि राज्य का शासन-अधिकार विशेषतया प्रजा के हाथ में जाय और राजों महाराजों का इस मामले में उतना गौरव न रहे। ये लोग उदार-विचारों के थे। १८७० में इसी दल के कुछ लोग यह प्रयत्न कर रहे थे कि जर्मन-महाराज्य में उत्तर तथा दक्षिण की दो सांहतिक समिति न हों, वरन एक ही संहति समस्त राज्य की हो। इनका नाम जातीय उदार दल (National Liberals) पड़ा। इस समुदाय के गर्मदल (Extremists) वालों का नाम रेडिकल्स (Radicals) है। सनातन दल (Conservatives) उदार लोगों का मत-पोषण कदापि नहीं करता। ये राजा के पक्ष के हैं। राज-सत्ता को दृढ़ करना ही इनका अभीष्ट रहता है। कुछ कैथालिक धर्म वालों ने सेन्टर्स (Centres) नाम का अपना एक समूह तैयार किया। अपने धर्म की रक्षा और प्रत्येक राज्य की पृथक् स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करना इनका उद्देश्य था। यह समिति १८७० में बनी। ग्वेल्फ्स (Guelphs) लोग १८७१ के जर्मन-महाराज्य-व्यवस्थापक एक्ट (Act) को अब भी नहीं मानते थे। इतने दलों के अतिरिक्त और भी अनेक छोटे बड़े समुदाय वर्तमान थे।

—:o:—

२८—बिस्मार्क के संशोधन।

१८७० के पहले सनातन दल बिस्मार्क की सहायता कर रहा था। बिस्मार्क स्वयं सनातन दल का था। धीरे धीरे जातीय उदार

लोगों की संख्या और शक्ति बढ़ते देख कर उसने इन लोगों के साथ काम करना आरम्भ किया।

पहले हर एक रियासत और ताल्लुके में पृथक् पृथक् क़ानून प्रचलित थे। बहुत काल से यत्न करते करते १८७७ से सब जगहों में एक क़ानून कर दिया गया। एकही प्रकार के न्यायालय और समान पदाधिकारी नियत होने लगे। राज्य भर में एक ही तौल का प्रचार किया गया। एक प्रकार के सिक्के चलाये गये। यहाँ टकसालों का प्रबन्ध अनेक रियासतों का न्यारा न्यारा है और वे अपने राजा की छाप सिक्कों पर लगा सकते हैं।

१८७३ में प्रशिया का बैंक राजकीय बैंक बनाया गया। जर्मनी के नोट सिर्फ़ इस में और छः और बैंकों में तैयार हो सकते हैं।

रेल-विभाग की उन्नति करने के लिए बिस्मार्क सदा यत्नवान् रहता था। यह इसी के परिश्रम का फल था कि १८७२ में २००० मील रेल-पटरी होने पर भी केवल १८७७ तक १८,८३० मील रेलवे हो गई। उस समय से लेकर खूब उन्नति करते चले आने के कारण १९०० में ३०,००० मील रेलवे हो गई। बिस्मार्क की यह हार्दिक इच्छा थी कि जर्मन-देश की समस्त रेलें प्रशिया की ही अथवा उसके अधीन हो जावें। १८७३ में उसने एक राजकीय रेलवे-कार्यालय खोला। इस विषय में भी उसे सफलता प्राप्त हुई। रेलवे क़ानून बनाने का अधिकार प्रशिया के हाथ में है।

धार्मिक विवाद आज कल बहुत गर्म था। कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट लोगों में अपने अपने बड़प्पन के विषय में बड़ा झगड़ा होता रहा। अन्त में कैथोलिक लोगों को विश्वविद्यालय में कुछ स्वत्व मिला और अब ये लोग गिर्जाघरसमिति (Church) के सभासद नहीं रहे। इधर उदार दल महन्त-समुदाय (Papacy) को क़ाबू करने का यत्न कर रहा था। यह जान कर लाखों मनुष्य असंतुष्ट हुए। १८७६ में बिस्मार्क सनातनी लोगों से फिर मिल गया और रियासत तथा गिर्जाघरसमूह के पार्थक्य का विरोध करना आरम्भ किया, एवं स्वतंत्र व्यापार का प्रचार और महाराजत्व का गौरव स्थिर करने के लिए कटिबद्ध हुआ।

उसने सब विभाग अलग अलग कर दिये। प्रत्येक विभाग का एक एक मंत्री (Minister) नियत किया गया। प्रबन्धशैली में बहुत कुछ सुधार हुआ। १८७४ से तार और डाक के विभाग एक कर दिये गये। १८७६ से पृथ्वी के भीतर भीतर जाने वाला तार खोला गया।

१८७२ में केवल ७४०० डाकख़ाने थे। पर १८९९ में ३६,३८८ हो गये। जर्मन-देश के प्रायः समस्त विभाग अच्छी उन्नति कर रहे हैं।

सम्पत्ति-विभाग (Finance) में अनेक सुधार किये गये। उस कच्चे माल (Raw material) को छोड़ कर जिसके द्वारा जर्मन लोग बहुमूल्य चीज़ें तैयार करते हैं, जर्मनी में आने वाली चीज़ों (Imports) पर ५ फ़ी सदी चुंगी लगा दी गई। तम्बाकू

और ब्राण्ड आदि पर कर (Tax) लगाया गया। इन सुधारों का यह फल हुआ कि १८७९ की अपेक्षा १८९९ में चुंगी की आमदनी प्रायः चौगुनी बढ़ गई। चुंगी की आमदनी में से केवल ४५ लाख रुपया सरकारी ख़ज़ाने में रक्खा जा सकता है। अधिक होने से शेष रुपया सब रियासतें आपस में बाँट लेती हैं। पर काम पड़ने पर वे आवश्यकतानुसार देने को तैयार भी रहती हैं। इस क़ानून का नाम 'फ्रैंकस्टोन क्लाज़' है। १८८० में उदार मंत्रियों के पदत्याग करने पर सनातनी लोग उन स्थानों पर नियत हुए। 'फ्रैंकस्टीन' साहब उन्हीं सनातनी मंत्रियों में से थे। इनके ही नाम पर उक्त क़ानून बनाया गया, क्योंकि उस प्रस्ताव के पेश करने वाले आप ही थे।

आज कल सनातनी दल बड़ा ज़ोर बाँध रहा था। ये लोग बिस्मार्क के पक्ष में होने से अब शक्तिमान् हो रहे थे। उदार लोगों की उन्नति की आशा दुराशा मात्र थी, तब भी ये लोग अपने गौरव के लिए जी तोड़ परिश्रम कर रहे थे। इधर ग्वेलस-समुदाय और गर्म दल वाले उदार लोग भी इनकी सहायता के लिए तैयार हुए। बिस्मार्क ने यह सांहतिक शक्ति देख कर कैथोलिक लोगों को अपने में मिला लिया। सरकार भी इन लोगों पर कृपा करने लगी, और शक्ति-समता हो जाने के कारण बिस्मार्क को उदार लोगों का भय जाता रहा।

यहाँ बहुत ही उत्तम उत्तम सेना-सम्बन्धी सुधार और संशोधन होते रहे; हर एक जर्मन-वासी को तीन वर्ष तक क़वायद सीखनी

ड़ती है। केवल वे लोग जो साहित्य में अच्छी उन्नति करने के ाग्य हैं एक साल फ़ौज में रक्खे जाने के बाद लिखने पढ़ने के ़िए छोड़ दिये जाते हैं। इस प्रकार जर्मन-देश का हर एक मनुष्य ौनिक है। १८८०–१८८८ में केवल ४,२७,२७४ फ़ौज रखने की म्मति महासभा में दी गई। इसके उपरान्त सात वर्ष का क्रम छोड़ र पांच वर्ष के बाद फ़ौज की संख्या पर विचार करना स्थिर रहा। ८९३ और १८९८ में तदनुकूल फिर इस विषय पर विचार हुआ।

अनेक नहरें तैयार हो जाने के कारण यहाँ का व्यापार आज ल बड़ी उन्नति पर है। १८७० की अपेक्षा १९०० में व्यापार ागुना अधिक हो गया। वाणिज्य-सम्बन्ध से जर्मन लोग देश-शान्तरों में फैलने लगे। आफ़्रिका महाद्वीप तथा समोआ द्वीप में न लोगों के अनेक उपनिवेश बसे। १८८४ में न्यूब्रिटेन (बाद को स्मार्क द्वीपसमूह) और न्यूगिनी में इन लोगों ने वास करना ारम्भ किया। बिस्मार्क का यह स्पष्ट सिद्धान्त था कि उपनिवेश ार रक्षित रियासतों (Protectorates) का प्रबन्ध वहाँ के ासियों के हाथ में रहे। उपनिवेशों के कारण जर्मनी और ग्रेट-ब्रिटेन में कुछ द्वेष हो गया था। जर्मन महाराज ने उसे शान्त रके अँगरेज़ों से 'हेलिगो लैण्ड' नामक द्वीप प्राप्त किया।

सामाजिक संशोधन पर इन दिनों बड़ा विवाद हो रहा था। ८८१ में समाज-सुधार के लिए विचार-सभा ने अनेक प्रस्ताव र्चलित किये। यह तै किया गया कि सरकार मज़दूरों की संरक्षक हे और उन लोगों की सांहतिक समिति बनाई जावे। एवं किसी

दुर्घटना के कारण अशक्त मज़दूरों की सहायता की जावे। १८८७ में निर्वाचन (Elections) विषयक घोर आन्दोलन हुआ। सनातनी दल तो हटा कर जातीय उदार लोगों के हाथ में संचालन-शक्ति थोड़े ही काल के लिए फिर आई।

मार्च १८८८ में महाराज विलियम परलोकवासी हुआ। उस का पुत्र फ़्रेडरिक तृतीय राज्य-सिंहासन पर बैठा। यह महाराज जातीय उदार लोगों का आशापात्र था। बहुत काल से वे इसके अभिषेक की राह देख रहे थे। परन्तु दुर्भाग्य वश इसका राजत्व काल केवल ९९ दिन बाद समाप्त हो गया, और राजकीय उदार दल की आशा-लता पर पाला पड़ा गया। १८८८ ही में फ़्रेडरिक तृतीय के पुत्र विलियम द्वितीय ने राज-आसन सुशोभित किया।

—:o—

२६—साहित्यावस्था।

साहित्य इस समय अपनी प्रौढ़ावस्था को प्राप्त था। शिल्प और विज्ञान की सब शाखाओं पर पुस्तकें तैयार करने वाले उत्तम उत्तम लेखक वर्तमान थे। क्या दर्शन, क्या वेदान्त और क्या उच्च कक्षा का साहित्य सब रोज़ रोज़ उन्नति कर रहे थे। शापेनहावर के दार्शनिक विचार लोगों में ख़ूब फैल रहे थे। लोज़े (Lotze १८१७—१८८१) ने अपनी गवेषणा-पूर्ण "विज्ञान और अध्यात्म विद्या का निराकरण" नामक पुस्तक द्वारा दर्शन शास्त्र को परिपुष्ट किया। ई. वान. हर्टमन ने बाह्य शून्य-वाद पर एक उत्तम संग्रह मुद्रण कराया। हेर्बर्ट

(Scheffel १८२६-१८८६), वेबर (१८१३-१८९४) हाइस (Hyse) आदि अनेकानेक विद्वान् बवेरिया में वर्तमान थे, जिनसे वहाँ के साहित्य को बड़ी सहायता मिली। रिचल (A. Ritchl) और हारनैक्स (Harnacks) वेदान्त-शास्त्र को उन्नत कर रहे थे। जी फ़ाइटग (G. Freytag) ने एक अत्युत्तम इतिहास प्राचीनकाल से लेकर १८४८ तक का तैयार किया। एबर्स (Ebers) और एफ० डश्न (F. Dashn) आदि उत्तम इतिहास-लेखकों में से हैं। डब्ल्यू जार्डन अपनी नवीन लेख-शैली के कारण विलक्षण था। रेङ्क (Ranke १७९५-१८८६) ने अपना बड़ा ऐतिहासिक ग्रन्थ नौ जिल्दों में छपवा कर प्रस्तुत किया। ट्राइश्क (Treitschke) के सामयिक लेखों से युवकों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता था। जर्मनी में एका पैदा करने के लिए उपन्यासों से बड़ी सहायता मिली। गुटज़कू (Gutzkow १८११-७८) रयूटर और थेयोडीर स्टार्म आदि बढ़िया लेखकों में से थे। स्पीलहागन (Spielhagen) ने १९०० तक ९-१० उपन्यास तैयार करके बहुत उपकार किया।

रिचार्ड वैग्नर ने अनेक उत्तम उत्तम नाटक लिखे हैं और १८६५ के बाद वह रंगभूमि पर खेले जाने लगे। म्यूनिच में विल्टब्रंट (Wildtbrandt) उत्तम नाटककर्ता था। ए किंडर, वेनेडिक्स, मोज़र श्विंटन (Schonthán) उत्तम उत्तम नाटककार थे। लडविग अन्सन्-ग्रयूबर (Ludwig Anzengruber) ने 'स्वातंत्र्य-प्रतिपादक' अनेक उत्तम नाटक तैयार किये। उत्तर जर्मनी में विल्डेनब्रुस (Wildenbruch) उत्कृष्ट लेखक था। सेडान आदि युद्धों

का प्रदर्शन करते हुए इसने अनेक ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं। एच ज़ाइडेल (H Scidel) बुश (Busch) आदि प्रहसन-लेखक थे। एफ़. टी. विशर (F. T. Vischer १८०७—८७) की पुस्तकें ख़ूब हँसाने वाली हैं। यहां का शृंगार काव्य (Lyric) देखने से साहित्य दशा का सामयिक परिवर्तन पूरे तौर से मालूम हो सकता है। इस विषय के कोई उत्कृष्ट लेखक वर्तमान थे। सुप्रसिद्ध मेक्स मूलर साहब जैसे विद्वान् लेखक यहीं उत्पन्न हुए हैं। १८८० की अपेक्षा आज कल (१९०८) जर्मन-साहित्य बड़ी ही उच्चकक्षा को प्राप्त है। बड़े बड़े दार्शनिक और वैज्ञानिक विद्वान् आज जर्मन देश को सुशोभित कर रहे हैं। योरोप देशीय संस्कृत के अनेक विद्वान् जर्मन देश ही के हैं। भारतवर्ष के कई लुप्तप्राय ग्रन्थों को जर्मनी वालों ने छपवाया है। अनेक संस्कृत-साहित्य की पुस्तकें इस देश में वर्तमान हैं और जर्मन लोग उन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं।

३०—महाराज विलियम द्वितीय।

१८८८ से इन महाराज का राजत्व-काल प्रारम्भ होता है। इन की माता हमारे महाराज इंग्लैंडेश्वर सप्तम एडवर्ड की बहन थीं। १८९० में फिर निर्वाचन-समय आ गया। इस समय 'सोशलिस्ट' 'सेण्टर' और 'रेडिकल' लोगों की संख्या अधिक थी। मज़दूरों की दशा सुधारने के लिए महाराज ने एक घोषणापत्र निकाला। १८९० में मतभेद होने के कारण महाराज की आज्ञानुसार बिस्मार्क को

इस्तेफ़ा दाख़िल करना पड़ा। काउण्ट वान कैप्रिवी अब महामंत्री के पद पर आसीन हुए। बिस्मार्क के हट जाने से उनके शत्रु लोग बहुत प्रसन्न थे। कैप्रिवी के कम अनुभवशील होने के कारण महामंत्री की शक्ति का घटना और महाराज के प्रभाव का बढ़ना शुरू हुआ। अब महाराज स्वयं पूर्णरूप से शासन में योग देने लगे।

ग्रेट ब्रिटेन के साथ कुछ अनबन हो जाने और रूस तथा फ़्रांस का पक्का होने से जर्मनी में सेना बढ़ाने पर विचार प्रारम्भ हुआ। शिक्षा-विभाग में कुछ संशोधन किये गये। यह समझ कर कि महन्तसमुदाय की शक्ति बढ़ाने के लिए यह उद्योग हो रहा है, सर्व साधारण बहुत असन्तुष्ट हुए और यह क़ानून तोड़ दिया गया। कैप्रिवी ने अपना महामंत्रित्व पद त्याग करके 'चैन्सेलर' (Chancellor) बना रहना पसन्द किया। किन्तु रईस लोगों के विरोध के कारण १८९४ में कैप्रिवी को वह पद भी त्याग करना पड़ा। सुचतुर होहेन् लोह्य (Hohenlohe) अब महामंत्री के पद पर नियुक्त किये गये। इस बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ ने अनेक सुधार किये। इस समय सनातन दल और सेंटर समाज फिर शक्तिमान् हो रहा था। १८९४ में ज़ाबता फ़ौजदारी का संशोधन किया गया और नया क़ानून दीवानी १८८७ से तैयार होते होते १९०० में प्रचलित हुआ।

जर्मनी की दो चार रियासतों में अब भी न्यारे न्यारे क़ानून वर्त-मान थे। वह सब समान कर दिये गये। अब एक क़ानून से समस्त देश का शासन किया जा रहा है। जलसेना (Navy) की उन्नति करने का पूर्ण विचार सरकार ने किया और उसके अनुकूल कार्-

वाई भी प्रारम्भ की गई। एल्ब नदी के मोहाने पर हेलिगोलैण्ड द्वीप में एक बन्दर (Port) खोला गया।

चीन देश में भी प्रवेश करने का विचार करके किउचाऊ की खाड़ो में जर्मन-सेना जा उतरी। एक कैथोलिक महन्त का गुप्तवध सेना उतारने का बहाना था। ५० वर्ग मील पृथ्वी का ठेका जर्मन लोगों ने ले लिया। उसमें रेल चलाने का भी अधिकार इन्हें मिल गया। हेलमेल पैदा करने के लिए, महाराज ने अपने भाई राजकुमार हेनरी को चीनराज के पास भेजा। वहाँ विशेष अधिकार प्राप्त कर लेने का इन्हें दृढ़ विश्वास था। परन्तु १९०४-०५ वाले रूस-जापान युद्ध में जापान का गौरव देख कर इनकी आशा कुछ ढीली पड़ गई है।

योरोप देशीय तुर्की से जर्मनी ने मैत्री पैदा की और आपस का मेल बढ़ने लगा। एक जर्मन-व्यापारी को बग़दाद तक रेल बनाने की आज्ञा भी मिल गई। १९०० में जहाज़ों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रस्ताव पेश किया गया।

१९०० में काउण्ट वान ब्यूलो (Bülow) ने 'चैन्सलर' पद सुशोभित किया।

३१—जर्मन देश की वर्तमान अवस्था।

(१९००—१९०८)

आजकल संसार की नव-शक्तियों (Modern Powers) में से जर्मनी भी एक मुख्य देश है। कुछ काल पहले इंग्लैंड आदि इसे इतना गौरवसम्पन्न स्थान देने में आनाकानी करते थे; परन्तु

अब अपने पुष्ट सांहतिक शासन, प्रतिभावान् राजनीतिज्ञ-समूह, बुद्धिमान् प्रबल लेखक, विस्तृत व्यापार, एवं पर्याप्त जल वा स्थल-सेना के कारण समस्त संसार की प्रथम कक्षा वाली रियासतों में यह महाराज्य आदर की दृष्टि से देखा जाता है। यह देश अपनी अद्भुत विद्योन्नति के लिए और रियासतों की अपेक्षा अत्यन्त विलक्षण है। जैसे गवेषणापूर्ण और गम्भीर ग्रन्थ आज जर्मन देश में प्रकाशित होते हैं, वैसे अन्य स्थानों में बहुत कम मिलेंगे। जिस संस्कृत-भाषा को 'मुर्दा ज़बान' कह कर अनेक 'अनुभव-शील, महानुभाव उपहास किया करते हैं उसी बुड्ढी 'अधमरी भाषा' को ये लोग थोड़ा बहुत अपनाते चले आये हैं। कौन कह सकता है कि यहाँ के कालिदास, भवभूति आदि अनेकानेक महा-कवियों ने जर्मनी में प्रवेश करके, वहाँ की साहित्योन्नति में कुछ सहायता दी हो? आज भी संस्कृत की अनेक पुस्तकें वहाँ उत्तम-तया प्राप्त हो सकती हैं। अनेक संस्कृत के पण्डित वहाँ आज भी वर्तमान हैं। दर्शन-शास्त्र और वेदान्त को भी इन लोगों ने अच्छी तरक्क़ी दी है।

शासन-प्रणाली में भी इस देश ने अब भली चंगी उन्नति कर ली है। वैमनस्य उत्पन्न करने वाले वे पुराने झगड़े अब स्वप्न में भी नहीं देख पड़ते। अब एक जर्मन-देशी मनुष्य दूसरे से मित्र और प्रेम भाव के साथ हाथ मिला के अपनी जन्मभूमि के लिए रक्त बहाने को प्रस्तुत रहता है। महा-विचार-सभा में अब धीरे धीरे सरकार की शक्ति वृद्धि को प्राप्त हो रही है। १९०३ के निर्वाचन

में 'सोशलिस्ट डेमोक्रैटों' * के प्रतिनिधि ५८ से ८१ हो गये। इस घटना से सरकार को थोड़ी आशंका भी हुई।

तदनन्तर महाराज ने मन्त्रिदल के साथ अपने वल को वढ़ाना आरम्भ किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि १९०७ के निर्वाचन में उक्त दल की प्रतिनिधि-संख्या केवल ४३ रह गई है। शेष ख़ाली ३८ स्थानों में महाराज ने अपने प्रतिनिधि नियत कर दिये हैं। स्वयं कैसर और महा मन्त्री व्यूलो इस सफलता से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। व्यूलो ने इस समय यह भी कहा था कि "अव जर्मन सरकार काठी पर सवार हो चुकी है और धीरे धीरे अपने सव वैरियों को पराजित कर देगी"। अव यहाँ के डाक, तार, रेल, व्यापार आदि सव विभाग एक क़ानून से शासित होते हैं।

इस देश में स्थल-सेना का अत्युत्तम प्रवन्ध है। लखूखा सरकारी सेना रखने के अतिरिक्त, यहाँ का प्रत्येक मनुष्य सेना विभाग में कुछ काल तक काम करने के लिए वाध्य किया जाता है। इस क़ानून से किसी को छुटकारा नहीं मिल सकता है। २० वर्ष के वाद तीन वर्ष तक 'क़वायद' सीख कर हर एक आदमी को रक्षित (Reserve) सेना में रहना पड़ता है। इस क़ानून के वहाँ प्रचलित होने से प्रत्येक जर्मन-वासी सैनिक है और काम पड़ने पर अपने देश की रक्षा के लिए लड़ सकता है। सेना-समूह पर कैसर का पूर्ण अधिकार है।

उपनिवेशों (Colonies) के वसाने में जर्मन-देश कुछ पकड़ा हुआ है। परन्तु अव इस मामले में भी सरकार सचेत हुई है।

* सोशलिस्ट या सामाजिक दल के वे लोग जो ठेठ प्रजातंत्र शासन के सर्वथा पक्षपाती हैं।

किउचाऊ में सेना भेज कर ९९ वर्ष का ठेका लेने और तुर्क देश की सरकार से मैत्री करने का उल्लेख गत अध्याय में हो चुका है। जर्मन लोगों ने ब्रेज़ील में बस कर व्यापार करना शुरू कर दिया है। दक्षिण अमेरिका के अनेक स्थानों में इन्होंने अपने वाणिज्य केन्द्र स्थापित कर लिये हैं। जर्मनी ने स्पेन वालों से 'कैरोलाइन द्वीप' मोल ले लिया है। नीति-कौशल से क़ैसर 'समोआ' भी प्राप्त करने में सफल मनोरथ हुए हैं 'औपनिवेशिक बल (Colonial power) बढ़ाने के लिए यहाँ जलसेना (Navy) की अभिवृद्धि के अर्थ अनेक प्रयत्न सोचे गये हैं। सरकार ने बहुत सा रुपया भी इस काम के लिए मंज़ूर किया है और हज़ारों नये जहाज़ तैयार किये जा रहे हैं।

रूस-जापान-युद्ध होने के समय जर्मन-महाराज ने रूस के साथ अभिसन्धि कर ली थी। परन्तु अन्त में रूस के पराजित होने से इन्हें विशेष फल प्राप्त करने की प्रत्याशा न रही। हाल में फ़्रांस देश वालों ने 'मुराको' रियासत पर अपना पंजा जमाना शुरू किया है। जर्मनी ने हस्तक्षेप करने का विचार किया था, परन्तु फ़्रांस और अँगरेज़ों के मिल जाने से इनकी दाल न गली। वर्तमान क़ैसर विलियम द्वितीय महाराज एडवर्ड सप्तम के भांजे हैं। ऐसा निकटवर्ती रिश्ता होने से परस्पर प्रेम बढ़ने की पूरी आशा है। अब इंग्लैंड और जर्मनी में धीरे धीरे वैमनस्य हट रहा है। अभी हाल में कैसर ने इंग्लैंड जा कर अपने 'मामा' के दर्शन किये थे। जर्मन महाराज बड़े सुशील और मिलन सार हैं। इस बात का पूरा विश्वास है कि इनके राजत्व-काल में जर्मनी की ख़ूब उन्नति होगी।

परिशिष्ट ।

(क) घटना-अनुक्रम-सहित समस्त जर्मन महाराजों की सूची ।

(नं० १ से ३ तक बी० सी० का यह अर्थ है कि अमुक अमुक घटना ईसा के जन्म के उतने साल पहले हुई ।)

११३—बी० सी०—स्विट्ज़रलैंड की घाटी में रहने वाली वन्य जातियों ने इटली पर हमला किया ।

१०५—बी०सी०—रोम देश के सेनापति मारियस ने ट्यूटन लोगों को पराजित किया ।

१०२—बी० सी०—किम्बरी जाति को रोम देश वालों ने हराया ।

९—ईसवी में वीर हेरमन रोम से जर्मनी को वापस आया ।

४—शताब्दी में 'हन' जातीय लुटेरों ने जर्मन देश पर चढ़ाई की ।

४५३—ईसवी में 'हन, लोगों को जर्मनी वालों ने पराजय दी ।

१—फ्रैंकवंशीय क्लोविस या लडविग (४८१—५११ ईसवी) । इसने रोम देश वालों को अपने राज्य के बाहर निकाल दिया । परस्पर राजों में मेल बढ़ाया । कुल जर्मनी पर शासन किया ।

२—मेरोविंजियन वंश के राजे (५११—७५२) । ये लोग बड़े आलसी और ऐयाश थे । वास्तविक अधिकार पेपिन हेरिस्टाल इत्यादि बड़े रईसों के हाथ में था ।

३—पेपिन हेरिस्टाल
४—चार्ल्स मार्टेल } ७५१—७६८
५—पेपिन दि शार्ट

ये लोग अपनी योग्यता के कारण 'मेरोविंजिन' राजाओं को क़ाबू में रखते और उन्हें 'कठपुतली' की भाँति नचाते थे। राज्य-शासन भार इन्हीं लोगों के ऊपर था।

६—शार्लमेन (७६८—८१४)। अत्यन्त पराक्रमी, सुयोग्य, चतुर और प्रजाप्रिय था। कुल ५३ लड़ाइयों में योग दिया। विचारसभा (पार्लिमेंट) का संगठन बनाया। गिर्जाघर-प्रथाओं में सुधार किया। जर्मन देश की उन्नति की।

७—लुई (८१४—८४०)। नालायक़ राजा, बड़े रईसों ने और स्वयं इसके पुत्रों ने बग़ावत की।

८—पुत्र लुई
९—चार्ल्स दि फैट
१०—अर्नल्फ़ } ८४०—९११
११—चार्ल्स दि चाइल्ड
१२—लुई बालक

प्रायः ये सब अयोग्य थे और शासन करना नहीं जानते थे। राजकीय शक्ति का ह्रास और बड़े रईसों के बल का अभ्युदय इनके समय में शुरू हुआ। ८४१ में फान्डेन्वा का संग्राम और वर्ड्न की सन्धि।

१३—कानरड प्रथम (९११—९१९) छोटे बड़े रईस गोलमाल कर रहे थे। एक प्रकार की अशान्ति सारे देश में फैली थी।

१४—हेनरी दि फ़ाउलर (९१९—९३६)। सुयोग्य और राजनीतिज्ञ। 'हंगरी' प्रदेश के लुटेरों को पददलित किया। अनेक गढ़ बनवाये। मर्सबर्ग की लड़ाई। 'नाइट' पद खोला गया। शान्ति-स्थापन।

१५—आटो प्रथम १६—आटो द्वितीय १७—आटो तृतीय १८—दो चार और राजे १९—हेनरी दि सेंट	९३६—१०५३

आटो प्रथम चतुर था। इसने रईसों में मेल बढ़ाया। इंग्लेंडेश्वर एडमंड की पुत्री एडिथ के साथ विवाह किया। १०५३ तक कोई घटना विशेष नहीं हुई।

२०—कानरड द्वितीय २१—हेनरी तृतीय २२—हेनरी चतुर्थ	१०५३—१०९९

द्वितीय कानरड और तृतीय हेनरी दोनों अच्छे नीतिज्ञ थे। इन्होंने अच्छा शासन किया।

हेनरी चतुर्थ में उतनी योग्यता नहीं थी। महन्तों का बल बढ़ा हुआ था। कोलोन और मॅज़ के महन्तों में बड़ी लड़ाई हुई। पोप से भी राजा से वैर हो गया। इसे बहुत तकलीफ़ें उठानी पड़ीं।

२३—हेनरी पंचम (१०९९—११२५)। पोप से झगड़ा। राजकीय शक्ति का ह्रास।

२४—सैक्सन लाटेयर ... ... ११२५—११३८

निर्बल राजा। स्वाबिया के फ़्रेडरिक और फ़्रैंकोनिया के कानरड में महाघोर युद्ध। लाटेयर कुछ भी नहीं बोल सकता था।

२५—कानरड तृतीय ... ... ११३८—११५२

११४७ में क्रूसेड में योग दिया। राजत्व काल भर इसे अपने भाई 'वेल्फ़' से लड़ते रहना पड़ा।

२६—फ़्रेडरिक प्रथम या बारबरोसा ... ११५२—११९०

'वर्ज़्वर्ग' में सामन्त राजाओं ने अधीनता स्वीकार की। पाँच बार इटली पर चढ़ाई की। मिसर देश पर आक्रमण किया। तृतीय 'क्रूसेड' युद्ध में योग दिया। लड़ाके रईसों को शान्त करने का प्रयत्न किया।

२७—हेनरी षष्ठ ... ... ११९०—११९८

पालरमो का भयानक हत्या-काण्ड।

२८—फ़्रेडरिक तथा और राजे (अन्तिम 'पेंज़ियों') ११९८—१२७३

अन्तरङ्ग और बहिरंग लड़ाइयों के कारण अशान्ति। पोप से पूरा झगड़ा और महाराज के ऊपर उन्हीं का पूर्ण प्रभाव। नाममात्र महाराज पद रह गया था। निर्वाचक दल की शक्ति का अभ्युदय।

२९— हैप्सबर्ग का रडल्फ़ ... १२७३—१२९२
३०— नासो का अडाल्फ़स ... १२९२—१२९८
३१— अलबर्ट प्रथम ... ... १२९८—१३०८
३२— लक्समबर्ग का हेनरी सप्तम ... १३०८—१३१४

इन सबके समय में राजकीय वंशों में बड़ी लड़ाई रही।

३३—बवेरिया का लडविग ... ... १३१४—१३४७

पारस्परिक युद्ध पोप इसे राज्यासन से उतारने की आज्ञा देता है। निर्वाचकवृन्द उससे इनकार करता है। लोगों में देश-प्रेम की अधिकता।

३४—लक्सेम्बर्ग का चार्ल्स चतुर्थ और 'गन्थर' (१३४७—१३७८)

चार्ल्स के राज्यासन पर बैठते ही लोग बग़ावत करते हैं। चार्ल्स को भागना पड़ता है और गन्थर का निर्वाचन। 'गोलडेनबुल' का निश्चित होना।

३५—वेनसेस्लस ...
३६—रूपर्ट ...
३७—सिजिस्मंड ... ... १३७८—१४३८

१४१२ में 'हसाइट' संग्राम।

३८—अलबर्ट द्वितीय ... ... १४३८—१४४०

तुर्क लोगों के साथ लड़ाई में मारा गया।

३९—फ़्रेडरिक तृतीय ... ... १४४०—१४९३

अपना राज्य बढ़ाने के अर्थ यत्नवान् रहा। झगड़ों को शान्त किया।

४०—मैक्समिलान प्रथम ... ... १४९३—१५१८

बड़ा राजनीतिकुशल। देश की बड़ी उन्नति की। अशान्ति को हटा कर प्रजा पालन किया। मार्टिन ल्यूथर के अभ्युदय का प्रारम्भ (१५१७)

४१—चार्ल्स पंचम ... ... १५१८—१५५५

वर्म्स की विचारसभा में ल्यूथर को बुलाकर दण्ड की आज्ञा देना (१५२१)। नरेम्बर्ग और स्पायर की विचार-सभा। १५३० में आग्सबर्ग की विचार-सभा। पोप से खटपट।

४२—फ़र्डीनेंड प्रथम ... ... १५५६—१५६४

ट्रेंट में सभा करके कैथोलिक धर्म की रक्षा करने का विचार।

४३—मैक्समिलान द्वितीय ... ... १५६४—१५७६

बोहेमिया के प्रोटेस्टैण्टों पर कुछ कृपा की गई।

४४—रुडल्फ़ द्वितीय ... ... १५७६—१६१२

'ल्यूथर' और अन्य मत वालों से विरोध। आस्ट्रिया में प्रोटेस्टेंटों पर कुछ सख़्ती। १६०८ में रैटिस्वान की सभा और ल्यूथरेन पन्थ वालों की प्रार्थना।

४५—मैट्यास ... ... १६१२—१६१९

४६—फ़र्डीनेंड द्वितीय ... ... १६१९—१६३७

४७—फ़र्डीनेंड तृतीय ... ... १६३७—१६५७

(१६१८—४८) प्रचण्ड तीस वर्ष का युद्ध। मैन्सफ़ील्ड और वालेन्सटीन की वीरता। १६३५ में प्रेग की अभिसन्धि। (Wehlau) वेला की सन्धि से ब्रैंडेनबर्ग के बड़े निर्वाचक को स्वाधीनता मिली।

४८—लेओपल्ड प्रथम ... ... १६५८—१७०५

फ़्रांस वालों से कुछ छेड़छाड़। तुर्क लोगों के साथ सन्धिपत्र। १७०१ में ब्रैंडेनबर्ग का निर्वाचक 'फ़्रेडरिक प्रथम' नाम से प्रशिया का राजा हुआ। मार्लबरा और यूजेन ने फ़्रांस के लोगों को पराजित किया।

४९—जोज़ेफ़ प्रथम ... ... १७०५—१७११

५०—चार्ल्स षष्ठ ... ... १७११—१७४२

रैमिलीज़, ऊडेनार्ड और मालप्लेका के युद्ध। यूट्रे की सन्धि। १७१३ में 'फ़्रेडरिक विलियम प्रथम' प्रशिया का राजा हुआ।

'प्रैग्मेटिक सैंक्शन'। १७४० में फ़्रेडरिक (द्वितीय) दि ग्रेट ने प्रशिया का राज्यासन सुशोभित किया। मैरिया थेरेसा १७४० में आस्ट्रिया की महारानी हुई।

५१—चार्ल्स सप्तम ... ... १७४२—१७४५

५२—फ़्रैंसिस प्रथम ... ... १७४५—१७६५

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा और अन्तरंग विरोध १७४८ में एला-शैपेल का सन्धि-पत्र।

५३—जोज़ेफ़ द्वितीय ... ... १७६५—१७९०

१७८१ में 'टालरैंस एडिक्ट' द्वारा प्रोटेस्टैंट कैथोलिक इत्यादि सब पन्थों को समान अधिकार दिये गये। १७८६ में फ़्रेडरिक विलियम द्वितीय प्रशिया का राजा बनाया गया। फ़्रांस-देशीय घोर विप्लव का आरम्भ।

५४—लेओपाल्ड द्वितीय ... ... १७९०—१७९२

५५—फ़्रैंसिस द्वितीय ... ... १७९२—१८४०

फ़्रांस देशीय विप्लव का घोरतर रूप। देश ही में निर्वाचक-वृन्द की आपस में फूट। नेपोलियन से अनेक संग्राम। १७९७ में फ़्रेडरिक विलियम तृतीय प्रशिया के राज्य पद पर आरूढ़ हुआ। १८०६ में महाराज ने व्याकुल होकर जर्मनी के महाराज का पद त्याग कर दिया और केवल आस्ट्रिया के राजा विख्यात हुए।

१८०७ में रूस और प्रशिया तथा नेपोलियन में परिणाम-रहित संग्राम।

१८०९—बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया वालों ने 'फ़्रेंच' सेना को पराजित किया।

१८१०—प्रशिया में शिक्षाप्रचार, नव प्रथानुकूल किया गया।

१८११—प्रशिया में व्यापार-स्वातंत्र्य स्थापन।

१८१२—प्रशिया से यहूदी लोग मुक्त कर दिये गये। नेपोलियन के साथ सन्धि।

१८१३—प्रशियाराज और नेपोलियन से संग्राम।

१८१४—फ़्रांसवालों की पराजय, ब्लूचर की वीरता। बोनापार्ट एल्बा में क़ैद किया गया।

१८१५—विख्यात वाटर्लू युद्ध। जर्मनी ३९ रियासतों की एक संहति बनाई गई।

१८१८—अनेक सूबों में संगठन स्थापन किया गया।

१८२२—प्रशिया के मंत्री होडेनबर्ग की मृत्यु, राजा स्वयं चँसलर पद ले लेता है।

१८२८—ज़ोलबेरेन या एक समान चुंगी का सब देश में प्रचार।

१८३०—बवेरिया में विप्लव की आशंका।

१८३१—सैक्सनी में शासन-संगठन का आरम्भ।

१८३२—जर्मनी भर में विप्लव और उसके रोकने के लिए उपाय।

(५६)—फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ। १८४०—१८६१

१८४०—फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ प्रशिया के राज-सिंहासन पर बैठा।

१८४७—यह निश्चित हुआ कि विचार सभा कुछ ख़ास कामों के लिए, और थोड़े मनुष्यों की कमेटी चार वर्ष में एक बार एकत्र हुआ करे।

१८४८—फ़्रांस का विप्लव देख कर यहाँ भी बलवा के लक्षण, बड़े परिश्रम के साथ और विप्लवकारियों की अनेक बातें स्वीकार करने पर विभ्राट् शान्त हुआ।

१८४९—शेल्सविग-होल्स्टेन के वास्ते संग्राम।

१८५०—कुल जर्मनी देश की एक विचार सभा एर्फ़र्ट में एकत्र हुई।

१८५१—पुरानी जर्मन संहति का पुनः स्थापन।

(५७)—विलियम प्रथम। १८६१—१८८८

१८६१—विलियम प्रथम प्रशिया का राजा हुआ।

१८६२—बिस्मार्क के मंत्रित्व का प्रारम्भ।

१८६४—वाइना की सन्धि से शेल्सविग हाल्सटेन प्रशिया को मिले। फ़्रांस से व्यापार अभिसन्धि।

१८७०—फ़्रांस के साथ दो वर्ष तक महा घोर संग्राम।

१८७१—फ़्रैंकफ़र्ट की सन्धि से युद्ध समाप्त हुआ और प्रशिया के राजा को 'जर्मनी के महाराज' की पदवी मिली।

१८८१—प्रशिया का 'मे ला' (May Law) ठीक तौर से प्रचलित हुआ।

१८८४—जर्मन उपनिवेश सभा का स्थापन।

१८८६—ज़ँज़ीबार के विषय में इंग्लैंडेश्वर से सन्धि।

(५८)—फ़्रेडरिक तृतीय । १८८८

१८८८—महाराज की मृत्यु होने पर फ़्रेडरिक तृतीय सिंहासन पर बैठा। कुछ काल बाद ही इसकी मृत्यु होने पर विलियम द्वितीय ने सिंहासन सुशोभित किया। आपही जर्मनदेश के वर्तमान महाराज हैं।

(५९)—महाराज विलियम द्वितीय । १८८८

पूर्वी अफ़्रिक़ा में विभ्राट, उसे रोकने के लिए इंगलैंड से 'इक़रार नामा'। समोआ के शान्त रहने के बारे में १८८९ में जर्मनी, युनाइटेड स्टेट्स अमेरिका, इंगलैंड आदि से 'बरलिन-सन्धि'।

१८९०—बिस्मार्क नौकरी से बरख़ास्त किये गये। जर्मनी को हेलीगो-लैंड मिला।

१८९८—कीउचाउ जर्मनी के संरक्षण में आया।

१८९९—बैंकों से नया इक़रारनामा १९०७ तक के लिए लिखाया गया।

१९००—होहेनलोहे के 'चैंसेलर' पद की समाप्ति पर काउँट वान ब्यूलो ने वह पद सुशोभित किया।

१९०४—जर्मनी में 'जे सुइट' लोगों के बसने की मनादी हटा दी गई।

१९०५—मोराको के लिए फ़्रांस से खटपट।

१९०७—महाराजकीय पक्ष की प्रतिपोषक विचार सभा का निर्वाचन।

—:०:—

(ख) प्रशिया के 'राजा वा जर्मन महाराजों' की नामावलि ।

(१) प्रशिया के राजा ।

१—फ़्रेडरिक प्रथम	... ...	१७०१—१७१३,
२—फ़्रेडरिक विलियम प्रथम	... ...	१७१३—१७४०
३—फ़्रेडरिक (द्वितीय दि ग्रेट	... .	१७४०—१७८६
४—फ़्रेडरिक विलियम द्वितीय	... ...	१७८६—१७९७
५—फ़्रेडरिक विलियम तृतीय	... ...	१७९७—१८४०
६—फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ	... ...	१८४०—१८६०
७—विलियम प्रथम	... ...	१८६०—१८७०

—:o:—

(१) जर्मनी के महाराज

विलियम प्रथम	१८७१—१८८८
८—फ़्रेडरिक	१८८८ (कई मास तक)
९—विलियम द्वितीय	१८८८ से—(वर्तमान)

—:o:—

(ग) जर्मनी के मुख्य संग्राम ।

१०५ वी० सी०, ए०। रोम देश वालों ने 'ट्यूटन' जाति को पराजय दिया ।

४५३ ईस्वी में जर्मन लोगों ने 'हन' जातीय लुटेरों को हराया।

८४१ ” फ़ान्टन्वा में राज्य विभाग के लिए लुई के चार पुत्रों में झगड़ा हुआ। 'लाटेयर' को महाराज पद मिला और सब को गुज़ारा वा कुछ भूमि मिली।

९२९ ” मर्सवर्ग में हेनरी फ़ाउलर ने 'हन' लुटेरों का विध्वंस किया।

१२४१ ” एल्वा में ऐंज़ियो ने पोप को पराजित किया।

१२९८ ” गोलहेम (Gollheim) में अल्बर्ट प्रथम ने नासे के अडाल्फ़स को मार डाला।

१३०७ ” लका (Lucka) में थरिञ्जियन, (जर्मन देशान्तर्गत थरञ्जिया सूबे के वासी) राजकुमारों ने अल्बर्ट प्रथम को हरा कर कुछ स्वत्व प्राप्त किये।

१४१२ ” हसाइट युद्ध का प्रारम्भ।

१४१९ ” में हसाइट सेना प्रेग के क़िले पर अधिकार करती है।

१४३१ ” ('टास' Taus) में हसाइट सेना महाराज की फ़ौज पर जय प्राप्त करती है।

१४४८ ” कोसावो (Kosovo) में हनीडे, (बोहेमिया का गवर्नर) तुर्क को हराता है।

१४५६ ” 'बेलग्रेड' में तुर्क जाति फिर हारती है।

१६१८–४८” धार्मिक विवाद के कारण ३० वर्ष का घोर संग्राम

१६२० ” प्रग में कैथोलिक लोग प्रोटेस्टैन्ट दल पर विजय प्राप्त करते हैं।

१६३४ ईसवी नार्टलिंगेन में हंगरी का राजा फ़र्डीनेंड प्रोटेस्टेंट सेना को हराता है।

१७०२—१७१३ ईस्वी में स्पेन के उत्तराधिकार पर लड़ाई।

१७०४	"	ब्लेनहिम
१७०६	"	रेमिलीज़
१७०८	"	ऊडेनार्ड
१७०९	"	मालप्लेका
		इन सब स्थानों में इंगलैंड वा प्रशिया की सम्मिलित सेना स्पेन और फ़्रांस वालों को पराजित करती है।

१७८८—१८१५ ईस्वी में फ़्रांस का घोर विप्लव।

१७९६ " मान्टेनट (Montenotte) में नेपोलियन आस्ट्रिया की सेना को हराता है।

१८०७ " एला (Eylau) में रशा और प्रशिया तथा नेपोलियन से परिणामरहित लड़ाई।

१८०९ " ऐसपर्न में आर्कड्यूक चार्ल्स ने नेपोलियन को हराया।

१८१० " वाल्चक में जर्मन देशवाले नेपोलियन को पराजय देते हैं।

१८१३ " लिपज़िक में जर्मनी, इंगलैंड और रूस देश की सम्मिलित सेना नेपोलियन को हरा कर क़ैद कर लेती है।

१८१५ " वाटर्लू में बोनापार्ट को पूर्णतया पराजय देकर जर्मनी और इंग्लैंड सदा के लिए सेंटहेलेना द्वीप में उसे क़ैद कर देते हैं।

१८६६ " क्वेनिशग्रट्ज़ में शेल्सविगहाल्सटन के लिए लड़ते समय प्रशिया ने आस्ट्रिया को पराजित किया।

१८७०—७१ फ्रांस-जर्मनी से महाघोर युद्ध।

वर्थ स्पीकेरेन कालंबे सेडान मेज़	इन स्थानों में जर्मन लोगों ने फ्रांस वालों को हराया।

—:o:—

(घ) जर्मन देश के विख्यात सन्धिपत्र।

८४१ ईस्वी में वर्डन की सन्धि से लुई के ४ पुत्रों में राज्य बँटा। लाटेयर को महाराजत्व मिला, और लड़कों को अनेक सूबे मिले।

१५२६ इसवी में मैडरिड का सन्धिपत्र। इसके द्वारा स्पेन का फ्रँसिस मिलान और नेदरलैंड पर अपना हक़ त्याग देता है। बर्गंडी जर्मन-नरेश चार्ल्स को मिलती है।

१६३५ " प्रेग की सन्धि। जर्मन महाराज और सैक्सनी के बीच, कुछ धार्मिक प्रस्तावों का निश्चय होता है।

१६४८ " वेस्टेफ़ेलिया। इससे ३० वर्ष का विकट संग्राम समाप्त हुआ और महाराजकीय स्वत्व कुछ कम हो गये।

१७१४ " 'रास्टाट' और वेडेन की सन्धि के अनुकूल फ़ांस राज को जर्मन महाराज के लिए नेपल्स, मिलान, सार्डिनिया आदि देने पड़े।

१७४२ " ब्रेस्ला। आस्ट्रिया को प्रशिया के वास्ते सिलेसिया दे देना पड़ा।

१७४८ " एलाशेपेल। इंग्लैंड, फ़ांस, स्पेन, और जर्मनी के बीच आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा शान्त हुआ।

१७९७ " कैम्पोफ़ोर्मियो। बोनापार्ट को आस्ट्रिया का पश्चिमी किनारा मिला।

१८०७ " लूनेवाइल। आस्ट्रिया को नेपोलियन के वास्ते टस्केनी दे देनी पड़ी।

१८६४ " वाइना। प्रशिया को शेल्सविग-हाल्स्टन डेनमार्क से मिले।

१८७१ " फ़्रैंकफ़र्ट। इससे विकट फ़ांस-जर्मन-संग्राम समाप्त हुआ, और प्रशिया को लोरेन, मेज़, और आल्सेस मिले। फ़ांस को बहुत सा रुपया देना पड़ा।

१८९१ " जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली के बीच सन्धि, वाणिज्य विषयक 'स्वीकारपत्र'।

१९०० " बरलिन का सन्धिपत्र। समोआ-सम्बन्धी इक़रारनामा टूट गया और जर्मनी को कुछ द्वीप मिले।

१९०२ " १८९१ वाली वाणिज्य-सन्धि १९१५ तक के वास्ते फिर निश्चित हुई।

१९०४ " रूस-जापान-युद्ध प्रारम्भ होने पर जर्मनी ने रूस राज के साथ मैत्री-पत्र पर दस्तख़त किये।

—:o:—

(ङ) जर्मनी के महापुरुष और स्त्री।

(१) सेनापति, मंत्री, मतसंशोधक इत्यादि।

१—वीर हेरमन, जर्मन-उद्धार-कर्ता। ९ ईस्वी में इसी ने स्वदेश को रोम वालों के पंजे से छुड़ाया।

२—मार्टिन ल्यूथर (१४८३—१५४६) बड़ा विद्वान्। प्रोटेस्टैंट मत का जन्मदाता।

३—मेलांकटन—ल्यूथर का शिष्य और उसी का समकालीन।

४—मैन्सफ़ोल्ड—३० वर्ष वाले युद्ध में प्रोटेस्टैंट दल का नेता।

५—अलबर्ट वान वालेंस्टीन—३० वर्ष वाले युद्ध में राजा की ओर से वीरता के साथ लड़ा। परन्तु क्रूर और बड़ा स्वार्थी था।

६—फ़्रेडरिक दि ग्रेट (१७४०—८६) प्रशिया का अत्यन्त योग्य और उदार राजा।

७—मैरिया थेरेसा—बड़ी सुयोग्य और चतुर महारानी। इसी के लिए आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा १७४० से १७४८ तक हुआ।

८—आर्क ड्य क चार्ल्स। फ़्रांस-विप्लव के संग्रामों में जर्मन सेनापति अत्यन्त पराक्रमी और शूर।

९—ब्लूचर (१७४२—१८१९) विख्यात वाटर्लू (१८१५) संग्राम का विजेता। महापराक्रमी जर्मन-सेनापति।

१०—स्टीनमेज़ शूरवीर। (१८७०—७१) के फ़्रांस-जर्मन युद्ध में जर्मनी का सेनापति।

११—बिस्मार्क—वीर और सुचतुर राजनीतिज्ञ (१८६२—१८९० तक) जर्मनी का महामंत्री।

१२—कौंट (अब प्रिंस) वान ब्यूलो (१९००) वर्त्तमान जर्मन महामंत्री।

२—प्रसिद्ध दार्शनिक, विद्वान, लेखक इत्यादि।

११२५ से १२७३ तक नीचे लिखे हुए उत्तम कवि हुए।

१—हर्टमन वान आ (Aue)।

२—वर्न्ट वान ग्रैफ़ेन्बर्ग।

ये दो पुराने ढर्रे के कवि थे। इन्हों ने (Arthur's Round Table) (राजा आर्थर की गोल मेज़) पर जर्मन भाषा में कविता की है।

३—वलफ़्रम।

४—गाटफ़्रेड।

ये अच्छे कथा-लेखक हो गये हैं। होली ग्रेल 'Holy Grail' का उत्तम वर्णन इन लोगों ने किया है।

५—नरेम्बर्ग का हैंस सैक्स (१५५०) यह ल्यूथर के सिद्धान्तों के छन्द बनाता था।

---

१८ वीं शताब्दी के लेखक।

६—काल्पस्टक (१७२४—१८०३) जर्मनी का 'होमर'। इसकी बनाई 'मेसियाह' (Messiah) नामक पुस्तक 'मिल्टन' के 'पैराडाइज़ लास्ट' के समान है।

७—हर्डर (१७४४ से १८०३) कवि, । दार्शनिक 'रूसो' को अपना आचार्य्य मानता था

८—गेटी (१७४९—१८३२) जर्मनी का 'शेक्सपियर'। अनेकानेक नाटक लिखे। कई उपन्यास भी बनाये । बड़ा बुद्धिमान् और चतुर लेखक था (कालिदासजी का बड़ा भक्त था)।

९—शिलर (१७५९—१८०५) इसकी अन्तिम पुस्तक 'विलियम टेल' बहुत विख्यात है।

१०—इम्मैन्यूयेल कैंट (१७२४—१८०४) वेदान्ती, दार्शनिक और गणितशास्त्री। ह्यूम (इंग्लैंड के दार्शनिक) के लेख पढ़ कर कैंट ने 'आत्मा' की गवेषणा शुरू की।

११—शेलिंग (१७८०—१८२१) दार्शनिक और धर्मोपदेष्टा।

१२—हेगेल

१३—अर्थर शापेन हवर

ये भी उक्त महापुरुषों के प्रायः समकालीन और अद्वैत दार्शनिक थे।

१४—बीथोवेन (१७७०—१८२७) गायनाचार्य्य और जर्मनी का 'सूरदास'। इसने वहाँ के संगीतशास्त्र को संगठित और नियमित किया।

१५—मोज़ार्ट (१७५६—१७९१) प्रथम कक्षा का संगीतशास्त्री।

१६ वीं शताब्दी के विद्वान्।

१६—लोज़े (१८१७—१८८१) शापेन हावर के विचारों का विस्तारक और अनेक दार्शनिक पुस्तकों का लेखक।

१७—वेबर (१८१३—१८९४) इसने संस्कृत के अनेक ग्रन्थों की समालोचना की है। बड़ा विद्वान् था पर भूला भी बहुत है।

१८—रैङ्क (१७९५—१८८६) इतिहास-लेखक।

१९—रिचार्ड वैग्नर (प्रायः ऊपर वालों का समाकालीन) उत्तम नाटककार।

२०—अडाल्फ़ एर्मन
२१—आडल्फ़िहार्नैक
२२—आर कोज़र

ये जर्मनी के वर्त्तमान विख्यात इतिहास-लेखक हैं।

२३—एफ मैक्समूलर। प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ, भाषा-तत्त्ववेत्ता और दार्शनिक। अभी थोड़े ही दिन हुए मृत हुआ। बड़ा नामी लेखक था।

(च) वर्णानुक्रम से विशिष्ट नामों की तालिका और हिन्दी में उनके उच्चारण ।

F.

G.

H.

M.

N.

O.

P.

R.

N.

O.

P.

R.

S.

T.

U.

V.